३२ भाषाओं मे २० लाख से अधिख मुद्रणा

आपके द्वारा परमेश्वर की खोज

डॉ. रिचर्ड ए. बेनेट के कैरियर की शुरुआत एक शहर के योजनाकार के रूप में हुई। अपने प्रशिक्षण के दौरान रिचर्ड का सामना परमेश्वर की सामर्थ से हुआ जिससे उनका जीवन बदल गया। बाद में, उन्होंने इंग्लिश कौंसिल से इस्तीफा दिया ताकि अमेरिका में बाइबल अध्ययन को जारी रख सकें।

एक उत्साही लेमैन के रूप में आरम्भ करने के बाद 1946 से रिचर्ड बेनेट बाइबल के उपदेशों को श्रोताओं को सुनाने लगे। 20 वर्षों के दौरान उनकी आवाज़ को नियमित रूप से यूरोप, अफ्रीका, एशिया, मध्य व दक्षिणी अमेरिका में ट्रांसवर्ल्ड रेडियो और फार ईस्ट ब्रोडकास्टिंग कोरपोरेशन द्वारा सुना गया।

जबसे रिचर्ड और डौरथी की शादी 1958 में हुई, तब से वे साथ–साथ परमेश्वर की सेवा करते हैं। डौरथी ने महिलाओं की सेवकाई में प्रभावशाली योगदान दिया है।

हाल के वर्षों में, रिचर्ड और डौरर्थी की कॉन्फ्रेंस सेवकाई उन लोगों व देशों तक पहुँची जहाँ वे पहले न पहुँच सके थे। इन विकसित देशों की यात्रा के दौरान, वहाँ के लोगों से जो आत्मिक रूप से भूखे थे, उनसे मिलकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। पर उनकी खुशी दुःख में बदल गई। जब उन्होंने अपने जैसे कई लोगों को वहाँ गरीबी, भूख और हानि में देखा। उन लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम ने रिचर्ड और डोरथी को उत्साहित किया कि वे उनकी आत्मिक व शारीरिक रूप से सहायता कर सकें।

तथापि, न केवल विकसित देशों में, पर औद्योगिक देशों में भी, बेनेट प्रसन्न हैं कि वे कई लोगों की सहायता कर रहे हैं ताकि वे लोग परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध बना सकें।

जीवन के अति आवश्यक प्रश्नों के क्या कोई विश्वसनीय उत्तर हैं?

रिचर्ड बेनेट आश्वस्त हैं कि परमेश्वर स्वयं इन उत्तरों को प्रदान करते हैं। तभी उन्होंने लिखा – परमेश्वर के लिए आपकी खोज।

"यही वो पुस्तक है जिसके लिए मैं 20 वर्षों से प्रार्थना करता रहा।"

जार्ज वर्वर

संस्थापक, : ऑपरेशन मोबिलाइजेशन

Authentic™

Your Quest for God (Hindi)

www.authenticindia.in

ISBN : 978-81-7362-256-4

9 788173 622564 00450

आपके द्वारा परमेश्वर की खोज

बेनेट

आपके द्वारा परमेश्वर की खोज

रिचर्ड ए. बेनेट

परमेश्वर की खोज

परमेश्वर की खोज

लेखक
रिचर्ड ए. बेनेट

अनुवादिका
श्रीमती नीता पात्री

ओ.एम. द्वारा अधीकृत पुस्तक
सिकंदराबाद

Parmeshwar Ki Khoj
(Hindi)

Your Quest for God
by Richard A.Bennett
Copyright © 1985, 1988, 1997, 1998, 2003
Cross Currents Internatinal Ministries
www.ccim-media.com

First Hindi edition 2001
Revised edition 2011

Published by
OM Authentic Books
Logos Bhavan, Jeedimetla Village,
Secunderabad 500 067, Andhra Pradesh.
www.authenticindia.in

Authentic Books is an imprint of Authentic Media, the publishing division of OM Books Foundation.

मेरी पत्नी डॉरथी के प्रोत्साहन, प्रेम, बलिदान और उसकी प्रार्थनाओं के बगैर (बिना), इस पुस्तक को लिखना संभव नहीं था। जैसा कि पोलुस ने फ़िबी के बारे में कहा, वैसा ही मैं डॉरथी के बारे में कहता हूँ..... वह कई दूसरे लोगों के लिये भी सहायक रही है.... और साथ ही साथ मेरे लिये भी।

विषय वस्तु

प्रस्तावना -
भूमिका -
अध्याय - 1 -
क्या सचमुच कोई परमेश्वर है?
अध्याय - 2 -
क्या आपका आत्मिक अगुवा
विश्वासनीय या भरोसेमंद है?
अध्याय - 3 -
परमेश्वर कैसा है?
अध्याय - 4 -
वास्तव में लोगों को क्या
विभाजित करता है?
अध्याय - 5 -
यथार्थ या वास्तविक समस्या क्या है?
अध्याय - 6 -
लोग इस तरह भ्रमित या पथभ्रष्ट क्यों हैं?
अध्याय - 7 -
क्या परमेश्वर मुझसे सचमुच प्रेम करता है?

अध्याय - 8 -
मैं जीवन कहां प्राप्त कर सकता हूँ?
अध्याय - 9 -
मैं परमेश्वर के परिवार का एक
अंग कैसे बन सकता / सकती हूँ?
अध्याय 10 -
आगे क्या?
विश्वास के प्रति मेरा समर्पण -

प्रस्तावना

मैं दो कारण से इस पुस्तक ''परमेश्वर की खोज'' को पढ़ने के खातिर हार्दिक रूप से सिफ़ारिश करता हूँ। पहला कारण यह है कि मैं लेखक को जानता हूं! वह विश्वास में मेरा पुत्र है और इस बात को सुनने से बढ़कर कोई अधिक या बड़ा आनंद नहीं है कि मेरे बच्चे या संतान सत्य पर चल रहे हैं (3 यूहन्ना 4KJ)।

दूसरा कारण अपेक्षाकृत अधिक लक्ष्यपूर्णया उद्देश्यपूर्ण है। डॉ. रिचर्ड बेनेट ने परमेश्वर के साथ मनुष्य के संबंध की अनिवार्यता को स्पष्ट, विशिष्ट, संक्षिप्त एवं निश्चयात्मक तौर पर प्रस्तुत करने में उच्चकोटि का कार्य किया है।

बाइबल से हमें यह जानकारी प्राप्त होती है कि परमेश्वर ने मनुष्य के मन (हृदय) में अनादि अनंत काल का ज्ञान उत्पन्न व स्थापित किया है... (सभोपदेशक 3:11)। इसके आगे यह भी कहा गया है कि चूंकि मनुष्यों को अनादि अनंतकाल के लिये बनाया गया है; इसलिये तत्कालीन बातें व वस्तुएँ उन्हें पूर्ण एवं स्थायी तौर पर कभी संतुष्ट नहीं करेंगी। वहां उनमें एक अनंत खालीपन या रिक्त स्थान मौजूद है, जिसे सिर्फ़ परमेश्वर भर सकता है। संत अगस्ता इन ने इस बात को घोषित करते हुए बिल्कुल सही ढ़ंग से बताया हैः ''हे परमेश्वर, आपने हमें आपके खातिर बनाया है और हमारी आत्माएं तब तक अशांत रहेंगी, जब तक वे आप में विश्राम नहीं करेंगी''। यह पुस्तक हमें यह समझने में मदद करती है कि हमें तब तक तलाश जारी रखना चाहिये, जब तक हम अनंत परमेश्वर के साथ एक जीवित

और व्यक्तिगत संबंध में विश्राम प्राप्त नहीं करते हैं।

मेरी यह प्रार्थना है कि लाखो की संख्या में लोग उन पृष्ठो को पढ़ेंगे, जो उस संदेश को समझेंगे और ध्यान देंगे जो परमेश्वर की महिमा और उनकी स्वयं की भलाई के भेद को प्रकट करता है।

डॉ. स्टीफ़न एफ़. ऑल्फ़ोर्ड

भूमिका

जीवन में यदाकदा अपनी अनेक यात्राओं के कई मित्रों से हुई। वे विभिन्न प्रकार की कई संस्कृतियों, आर्थिक पृष्ठभूमियों और शैक्षणिक स्तरों से आते हैं।

हमें यह यकीन नहीं है कि यह सब आकस्मिक था कि हमने इन व्यक्तियों से मुलाकात की। और न ही हमें यह यकीन है कि यह आकस्मिक है कि यह छोटी पुस्तक आपके हाथों में है।

गत वर्षों में, हमारे अनेक मित्रों से हमारे सबसे अधिक महत्वपूर्ण वार्तालाप परमेश्वर के लिये हमारी खोज पर केंद्रित थे। हमने आपस में जो विचार आदान - प्रदान किये, उनमें से कुछ इस पुस्तक में प्रस्तुत हैं।

''परमेश्वर की खोज'' का प्रथम संस्करण, जिससे लगातार पुनसंस्करण तैयार किये गये, वह आभार प्रदर्शन की व्यक्तिगत योजनाबद्ध प्रक्रिया थी। जब डॉरथी और मैं ने अपने विवाह की 25 वीं वर्ष गांठ मनायी, तब हमने ध्यान दिया कि हम अपने प्रति परमेश्वर की भलाई के खातिर उसका आभार प्रकट करने के लिये कौन सा सबसे महत्वपूर्ण ढ़ंग अपनायें।

हमने सोचा इससे बेहतर ढ़ंग या तरीका क्या हो सकता है कि हम 25,000 लोगों के लिये आशा और शांति प्रदान करने वाला एक संदेश लिखें, छपायें और उन्हे दें। यह हमारे विवाहित जीवन के प्रति वर्ष के खातिर एक हजार होगा।

परमेश्वर ने इस पुस्तक के रूप में हमारी छोटी सी मेहनत को

आशीष दिया, जिसने इस विश्व में अपनी जगह बना ली। कई देशों के लोगों के हाथों में इस पुस्तक की सभी 25,000 प्रतियाँ पहुँच गयीं। हमारे लिये सबसे बड़े आनंद की बात यह थी कि हमने उन सब लोगों से पत्र प्राप्त किये, जिन्होंने परमेश्वर की खोज नामक इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, जीवन में नया उद्देश्य प्राप्त कर लिया था।

अनेक निवेदन आये कि हम इस पुस्तक को दूसरी भाषाओं में अनुवाद करें। इसलिये, हमने इस पुस्तक के प्रथम पुनः संस्करण (पुनरावृत्ति) को इस उद्देश्य और प्रार्थना के साथ तैयार करने का निर्णय किया कि विश्व के सभी महाद्वीपों के अधिक से अधिक लोग ''परमेश्वर के लिये अपनी खोज'' में मदद प्राप्त करेंगे। इसके परिणामस्वरूप पंद्रह भाषाओं में, तीन लाख प्रतियों को छापा और वितरित किया गया। और अब हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि यह पांचवा अंग्रेजी संस्करण अपेक्षाकृत अधिक पाठकों के लिये सहायक होगा।

प्रथम दो अध्याय प्रत्येक पाठक के लिये समान रूप से अनुकूल नहीं होगा। अध्याय 1 ऐसे लोगों के लिये लिखा गया है, जो परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में प्रश्न उठा सकते हैं। यद्यपि अध्याय 2, ऐसे लोगों के लिये विशेष रूप से दिलचस्प होगा, जिन्होंने प्रत्येक बात पर प्रश्न करना सीख लिया है, वास्तव में यह सभी पाठकों के लिये महत्वपूर्ण है; क्योंकि यह आपनें से प्रत्येक व्यक्ति को इस बात के लिये प्रोत्साहित करता है कि वह अपने निजी विश्वास मतों और आचरणों का मूल्यांकन करे।

हालांकि संपूर्ण उद्देश्य के लिये तैयारी के लिये लिखे गये ये अध्याय महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हैं; क्योंकि वे शेष बची जानकारी की विश्वासनीयता को स्थापित करने में मदद करते हैं। अध्याय तीन से दस में मौलिक सच्चाईयाँ पायी जाती हैं जो परमेश्वर के लिये तलाश में आपकी मदद करेंगी। अतः, हम सहर्ष इस नये संस्करण को परमेश्वर के हाथों में रखते हैं; ताकि वह इसे आशीषित करे; क्योंकि वह सर्वश्रेष्ठ की अपेक्षा रखता है।

डॉरथी और मैं परमेश्वर के प्रति अपने आंभार को प्रकट करना चाहते हैं; क्योंकि हमने उन अनेक ऐसे विशेष लोगों का प्रेम, उनकी प्रार्थनाओं और प्रेरणाओं को प्राप्त किया है; जिन्होंने हमें परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभव के बारे में बताया है। वे इतने अधिक हैं, कि उनके नाम लिखना नामुमकिन है। हम इन मित्रों से कहते हैंः ''आपको धन्यवाद''।

परमेश्वर की खोज

खगोलशास्त्र, पृथ्वी की जीवनी अर्थात् जीवन कहानी है; परंतु यह अन्य सभी जीवन कहानियों की तरह आरंभ की ओर वापस नहीं जाती है।

सर चार्ल्स लाएल

अध्याय - 1

क्या सचमुच कोई परमेश्वर है?

संभवतः, आपके जीवन में ऐसे मनहूस और उदासीन क्षण या समय आये, जब आपने न सिर्फ परमेश्वर के प्रेम पर संदेह किया, बल्कि उसके अस्तित्व पर भी प्रश्नचिंह लगा दिया।

बाइबल में, परमेश्वर के अस्तित्व की व्याख्या नही की गयी है; और न ही उसे प्रमाणित किया गया है। सामान्य तौर पर इसे नज़र अंदाज कर दिया गया है। बाइबल का सबसे पहलां वक्तव्य ''आरंभ में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:1), एक प्रबल एवं जबरदस्त वस्तव्य है, जो साधारण और महत्वपूर्ण दोनों है। यह घोषित करता है कि परमेश्वर है और वह विश्व का सृष्टिकर्त्ता है।

कई वर्ष पहले मेरी पत्नी, यूरोप के एक सबसे अधिक प्रतिष्ठित मनोचिकित्सीय अस्पताल में सिनीयर नर्स के पद पर कार्यरत थी। एक दिन एक विख्यात मनोचिकित्सक, जो नास्तिक अर्थात अनीश्वरवादी होने का दावा करता था, ने डॉरथी से उसके विश्वास के बारे में प्रश्न किया। डॉरथी ने उत्तर दियाः ''डॉक्टर, आपको मालूम है कि आपके कार्यक्षेत्र में एक अधिकारी के रूप में मैं गहराई से आपका आदर करती हूँ। आप विश्वविद्यालय के प्राख्याता हैं और चिकित्सा व्यवसाय में आपका नाम सर्वत्र आदर और श्रद्धा से लिया जाता है। इसके बावजूद, मैं आपको एक सुझाव देना चाहती हूँ कि इससे पहले कि आप एक नास्तिक होने का दावा करें, बाइबल

को उसी जोश और जिज्ञासा के साथ पढ़ें, जिस तरह आपने अपने मनोचिकित्सीय अनुसंधान अर्थात् खोजबीन को किया है।''

तब डॉरथी ने उसे उसके कई उन रोगियों की याद दिलायी, जिन्हें हाल ही में अस्पताल के वार्ड से छुट्टी मिली थी; क्योंकि परमेश्वर की शक्ति ने उनके जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन लाया था। वह एक या दो ऐसे लोगों का नाम लेने में सक्षम थी, जिनमें बड़े ही नाटकीय ढ़ंग से रूपांतरण हुआ था और वे फलवंत जीवन व्यतीत कर रहे थे। डॉरथी ने उस विख्यात मनोचिकित्सक को उन मेंसे प्रत्येक रोगियों के बारे में बताया, जिन्होंने व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण ढ़ंग से परमेश्वर को जान लिया था। डॉक्टर स्वयं यह जानता था कि इन रोगियों को पहले आधुनिक मनोचिकित्सीय तकनीकियों के माध्यम से स्पर्श नहीं किया गया था। न तो नास्तिक के रूप में और न ही एक मनोचिकित्सक के रूप में उसे इनके परिवर्तित जीवन की प्रक्रिया के खातिर श्रेय दिया जा सकता था।

इस डॉक्टर ने, जिसने अभी - अभी डॉरथी को यह बताया था कि वह ईश्वर में विश्वास नहीं करता है, इस वार्तालाप को यह कहते हुए समाप्त किया कि वह उसके लिये प्रार्थना करे! उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि वह अपने जीवन में पहली बार खुले दिमाग से बाइबल पढ़ना आरंभ करेगा।

सात सप्ताह तक सावधानीपूर्वक पठन के बाद मनोचिकित्सक ने डॉरथी को बताया कि अब वह दावा करने वाला या गवाही देने वाला नास्तिक नहीं रहा। इसके बावजूद, उसके सामने एक समस्या

थी कि उसने यह जान लिया था कि परमेश्वर के प्रति सच्चे समर्पण के लिये उसे उसकी जीवनशैली में परिवर्तन करना आवश्यक था। उसने यह स्वीकार किया कि ''अब उसकी समस्या बौद्धिक नहीं है; परंतु मैं अपरिवर्तनों को स्वीकार या ग्रहण करने में खुद को अनिच्छुक पाता हूँ, जो एक समर्पित विश्वासी बनने पर मुझमें होने वाले हैं।''

दस वर्ष तक अपने डॉक्टर मित्र के लिये प्रार्थना करने के बाद, आखिर में हमने उससे एक पत्र प्राप्त किया, जिसमें उसने हमें अपने प्राप्त नये विश्वास और परमेंश्वर के प्रति अपने व्यक्तिगत समर्पण के बारे में बताया था। हम अति आनंदित थे; लेकिन हमें अधिक आश्चर्य नहीं हुआ था; क्योंकि हम जानते थे कि विश्वास, सुनने से आता है और सुनना परमेश्वर के वचन के द्वारा होता है (रोमियों 10:17)।

परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक के द्वारा उसे जानने के लिये अपने अस्तित्व की एक गहरी आंतरिक चेतना को हमारे अंतःकरण या अस्तित्व में स्थापित किया है।

संभवतः, कुछ लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करने का चयन करते हैं; किंतु इस ग्रह पृथ्वी पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ है, जो परमेश्वर में विश्वास न कर सका हो।

यहां तक कि स्वतः भौतिक विश्व में परमेश्वर ने अपने निजी अस्तित्व के कई प्रमाण दिये हैं। हमारी इक्कीसवी शताब्दी का विज्ञान, विश्व के विभिन्न भेद को जानने में जितनी अधिक गहराई तक पहुँचता है, यह सुझाव देना उतना ही अधिक तर्कहीन हो जाता है

कि ये सब चीजे बिना किसी नमूना देने या बनाने वाले व्यक्ति के ही अस्तित्व में आयी हैं। कोई भी व्यक्ति यह सुझाव कभी नहीं देगा कि किसी अंतरिक्षयान को अंतरिक्ष में उड़ान भरनी है, पृथ्वी के कक्ष के चक्कर लगाने हैं और उसके बाद अपेक्षित समय और स्थान पर बिना किसी रचनात्मक गुणों से भरपूर निपुर्ण नमूनेवालों, तकनीकी ज्ञाताओं और गणितज्ञों के पृथ्वी पर उतरना है। इसी प्रकार, सूर्यास्त और ऋतुएँ, तारों के झुंड और परमाणु, गुरू-त्वकर्षण का बल और प्रेम की शक्ति बिना किसी सृष्टि कर्त्ता परमेश्वर की योजना और नमूने के अस्तित्व में कभी नहीं रह सकता है।

निश्चय ही इस बात पर विश्वास करने के लिये लाखों गुना अधिक विश्वास की आवश्यक्ता है कि एक सुव्यवस्थित, सुसिद्ध सृष्टि किसी ''बड़े स्रोत'' से आयी है, इसके बजाय कि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर में विश्वास किया जाये; क्योंकि जब तक पहले से ही कोई नमूनाकारी न हो, तो नमूना प्राप्त या उपलब्ध नहीं हो सकता है।

यहाँ तक कि सरकार, जिसने परमेश्वर के अस्तित्व को मानने से इंकार कर दिया हैं, उसने अपना भरोसा इस बात पर प्रकट किया है कि विश्वमंडल का एक नियम और उसकी एक व्यवस्था है, जिसके कारण ही किसी अंतरिक्षयात्री को अंतरिक्ष में भेजा जाता है। सिर्फ इन नियमों या व्यवस्थाओं के साथ सहयोग करने के द्वारा ही उनके अंतरिक्षयात्री पृथ्वी तक सुरक्षित लौहने में सफ़ल रहते हैं। क्या यह अदभुत प्रतीत नहीं होता है? इसके बावजूद, ये ही लोग, जो प्रकृति के नियमों पर निर्भर रहते हैं, एक सर्वोच्च योजना निर्माता के अस्तित्व

एक नियम बनाने वाले के अस्तित्व को मानने से क्यों इंकार करते हैं?

पुनः हम देखते हैं कि हम सब भयानक विनाशकारी शक्ति से अवगत हैं, जो परमाणु बन के विस्फोट से उत्पन्न होती है। तथापि, इस बात की गणना की गयी है कि सूर्य प्रति सेकंड जिस शक्ति की मात्रा उत्पन्न करता है, वह 5,000 करोड़ परमाणु बमों के बराबर होती है। इसके अतिरिक्त, शक्ति उत्पादक अन्य सितारों की तुलना में हमारा सूर्य बिल्कुल बड़ा नहीं है; और हमें अब तक मालूम नहीं है कि विश्वमंडल में वास्तव में कितने तारे हैं। यद्यपि मनुष्य की दृष्टि में करोड़ों एकत्रित हैं; तौभी ये तारे विशाल एवं विस्तृत अज्ञात के सिर्फ़ बाहरी किनारे हैं। इसके बावजूद आज ज्योतिषी अथवा खगोलशास्त्री इस बात को स्वीकार करते हैं कि नक्षत्रों के कुछ समूहों से उत्पन्न हुई ऊर्जा या शक्ति हमारे सूर्य के द्वारा प्रदान की गयी शक्ति से करोड़ों गुना अधिक है! जब तक किसी सृष्टिकर्त्ता की शक्ति असीमित न हो, तब तक ऐसी शक्ति का अस्तित्व कैसे रह सकता है?

सचमुच में, सृष्टि हमें एक रचनाकार परमेश्वर से परिचित कराती है, हमें नियम या व्यवस्था के परमेश्वर से परिचित कराती है और अनंत शक्ति के एक परमेश्वर से परिचित कराती है। बाइबल में कहा गया हैः

''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमंडल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है और रात को रात ज्ञान सिखाती है। न तो कोई बोली है

और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज़ गया है, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुँच गये हैं। उनमें उसने सूर्य के लिये एक मंडप खड़ा किया हैं'' (भजन संहिता 19:1-4)।

क्योंकि उसके (परमेश्वर के) अनदेखे गुण अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरूत्तर हैं'' (रोमियों 1:20)।

इसलिये, किसी व्यक्ति को कोई बहाना बनाने की जरूरत नहीं है कि वह किसी भी जगह परमेश्वर के अस्तित्व से इंकार करे।

परमेश्वर के द्वारा सृजा गयी विशालता, नियमित व्यवस्था और सामर्थ पर ध्यान देने के परिणामस्वरूप कई लोग स्वयं को बहुत छोटा और महत्वहीन महसूस करते हैं।

इस्राएल के राजा दाऊद ने ऐसी प्रतिक्रिया महसूस की थी और उसे इस प्रकार व्यक्त किया थाः

जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमां और तारागण को जो तू ने नियुक्त किये हैं, देखता हूं; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? (भजनसंहिता 8:3,4)।

आज नक्षत्रों से भरे स्वर्ग लोकों से संबंधित हमारा ज्ञान विस्तृत रूप से बढ़ गया है; क्योंकि बड़े आकार के दूरबीन विश्वमंडल के बारे में हमारी दृष्टि को पांच लाख गुना बड़े रूप में

दिखाते हैं और विभिन्न उपग्रह जब अंतरिक्ष के बाहरी कक्ष की परिक्रमा करते हुए यात्रा करते हैं, तब ग्रह पृथ्वी को सांकेतिक चित्र भेजते हैं। इसके परिणामस्वरूप, जैसा कि दाऊद ने किया, वैसे ही हम भी यह समान प्रश्न पूछने की परीक्षा में पड़ सकते हैंः ''कोई परमेश्वर जिसने ये सब चीजें बनायीं, वह मुझ जैसे छोटे प्राणी में रूचि कैसे ले सकता है?''

सौभाग्यवश, इसके बावजूद टेलीस्कोप या दूरबीन का युग माइक्रोस्कोप का भी युग है। आज हम यह जानते हैं कि लघु पैमाने में एक संसार भी है, जिसे सिर्फ माइक्रोस्कोप के द्वारा ही देखा जा सकता है और यह उसी तरह अत्याधिक अद्‌भुत है, जिस तरह बाहरी अंतरिक्ष की विशालता है। यहां तक कि प्रकाश भी इस सूक्ष्म साम्राज्य के भेदों को प्रकट करने में अत्याधिक रूखा है। जो बातें वैज्ञानिक की पारंपरिक लेबोरेटरी में उसकी आंखों से ओझल रहती हैं, उन्हें भी इलेक्ट-ॉन माइक्रोस्कोप से पकड़ा या देखा जा सकता है, जो आगे सौंदर्य, रचना, नियम या व्यवस्था और शक्ति को प्रकट करती हैं, जो हमारे अनंत सूक्ष्म विश्व में सन्निहित हैं।

अतः, अगर आप इस बारे में सोचते हैं कि परमेश्वर ने आप जैसे छोटे प्राणी को (महत्वहीन प्राणीको) अपने दिमाग में रखा है, तो परमाणु नामिक के जानकार वैज्ञानिक से सुनें कि संपूर्ण विश्व की सुरक्षा के खातिर यथार्थ सूक्ष्मता या लघुता कितनी अधिक महत्वपूर्ण है। किसी परमाणु के न्यूट-ान और प्रोटान को एक इंच के सौआखका 1/12 वां अंश सूक्ष्म कण में विभाजित करें और आप

देखेंगे कि पदार्थ किसी ठोस तत्व में बंधने या बढलने के बजाय परमाणु विस्फोट के कारण संपूर्ण विश्व छिन्नभिन्न होकर नष्ट हो जायेगा। हां, सूक्ष्मता या लघुता (छोहापन या महत्वहीनता) उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी कि सृष्टि के परमेश्वर के लिये महानता।

यह जानकर पुनः आश्वासन प्राप्त होता है कि जब हम यह प्रश्न पूछते हैंः मनुष्य क्या है, कि तू उसके बारे में सोचता है? यह मनुष्य का आकार नहीं है, जो उसके महत्व को निर्धारित करता है। इसके विपरीत, परमेश्वर के लिये हमारा व्यक्तिगत महत्व कुछ अत्याधिक भिन्न तत्वों पर विधेय होता है। और परमेश्वर ने हमारे लिये यह प्रकट किया है कि हम उसके लिये महत्वपूर्ण या मूल्यवान क्यों हैं और हम उसकी दृष्टि में कितने बहुमूल्य हैं।

यद्यपि सृष्टि स्वतः रचनाकार नियम और शक्ति के परमेश्वर के बारे में बताती है; तौभी परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट करने के लिये एक अन्य मार्ग चुना है, जिसके अनुसार परमेश्वर, अनंत प्रेम और दया का परमेश्वर है, वह जो हमारी सर्वश्रेष्ठ भलाई के अलावा और कुछ नहीं चाहता है। परंतु अगर आप ऐसे परमेश्वर को पाना चाहते हैं, तो आपको यह मानना चाहिये कि आपके आत्मिक अगुवा को पूर्णतः विश्वसनीय या भरोसेमंद होना चाहिये।

थोड़ा रूकें और ध्यांन दें

1. जब आप लोहे के मुट्ठी भर कणों या धूल को हवा में उछालते हैं, तब क्या यह अपेक्षा करेंगे कि एक स्विस घड़ी नीचे आयेगी?

2. क्या विश्व और उसके अद्भुत एवं शानदार नमूने (रचनाएँ) यूं ही बिना सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के अस्तित्व में आ गये हैं?
3. यद्यपि सृष्टि आपको सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की ओर संकेत करती है, जिसने स्वयं को रचनाकार, नियम और शक्ति के परमेश्वर के रूप में प्रकट किया है; तौभी क्या सृष्टि आप तक परमेश्वर के प्रेम और दया की समझ को लाने के लिये पर्याप्त है?

यदि कोई व्यक्ति एक टॉर्च लेकर किसी अंधेरी गुफ़ा में जाये, तो वह उसे आसानी से पार कर सकता है।

- प्लेटो

गुफ़ा के मुख के लिये प्रकृति एक मधम प्रकाश है; टॉर्च, पवित्रशास्त्र है।

ए.एच. स्ट-ाँग

अध्याय - 2

क्या आपका आत्मिक अगुवा विश्वसनीय है?

कुछ समय पहले समाचार पत्र में यह चेतावनी देने वाला तथ्य प्रकाशित किया गया था कि मानव जीवन की दुखद क्षति, जो कि हवाई जहाज के दुर्घटना ग्रस्त होने के कारण होती रही है, उसकी प्रमुख कारण राडार का संकेत अर्थात् गलत संकेत था। इसके बावजूद, वह दुःखद दुर्घटना उस समय अर्थहीन हो जाती है, जब उसकी तुलना ''आत्मिक राडार प्रणाली'' से की जाये, जिसमें लोग अपना भरोसा रखते हैं और जो उन्हें आत्मिक सर्वनाश की ओर ले जाती है।

आज विश्व में अनेक मतभेद पूर्ण और संदेहपूर्ण स्वर गूंज रहे हैं, प्रत्येक परमेश्वर की ओर पथप्रर्दशन करने का दावा करते हैं। आप यह कैसे जान सकते हैं कि किस पर भरोसा करना चाहिये? परमेश्वर के खातिर जारी आपकी तलाश में, आप ग़लत स्वर या आवाज के द्वारा निर्देशन प्राप्त करने में असमर्थ हैं; क्योंकि जिन मामलों के संबंध में आप जो खिम उठा रहे हैं, वे अनंत हैं।

ब्रिटिश प्रधान मंत्री डब्लू.ई. ग्लेडस्टोन ने लिखा हैः ''बाइबल में (पर) उत्पत्ति की एक विशिष्टता की मुहर लगी है और इसे एक अमापनीय दूरी इसके सभी स्पर्धियों से (स्पर्धा करने वालों से) अलग करती है।''

एक बार अमेरीकन प्रेसीडेंट अब्राहम लिंकन ने कहाः ''मैं इस बात पर यकीन करता हूं कि बाइबल परमेश्वर के द्वारा प्रदान किया गया वह सर्वोत्तम वरदान या पुरस्कार है, जिसे उसने मनुष्य को दिया है।''

यद्यपि इतिहास के अनेक महान् व्यक्तियों ने बाइबल की अद्वितीयता या विचित्रता की पुष्टि की है। इसके बावजूद, बाइबल ने सचमुच अपने कीर्तिमान को कायम रखा है।

राजा दाऊद अपने आत्मिक अगुवा की विश्वसनीयता के प्रति स्पष्ट था। उसने कहाः तेरा वचन मेरे पांवों के लिये दीपक और मेरे पथ के लिये उजाला है (भजनसंहिता 119:105)।

आज भी लोग यह महसूस करते और मानते है कि उन्हें परमेश्वर तक ले जाने के खातिर वे बाइबल पर भरोसा कर सकते हैं। ऐसे लोगों के बावजूद, जिन्होंने उसकी मान्यता को नष्ट करने का प्रयास किया है, बाइबल पिछले बीते दिनों की तरह ही आज भी दृढ़, स्थायी और भरोसे मंद है। यह संसार के सभी लेखों के बीच सचमुच अद्वितीय है।

चूंकि लोगों को इस आश्वासन की आवश्यक्ता है कि बाइबल अद्वितीय और अधीकृत दोनों है, परमेश्वर ने उस पर अनेक मुहरों की छाप लगा दी है, जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह ''परमेश्वर का वचन'' है। पवित्रशास्त्र के पृष्ठों के भीतर और सांसारिक इतिहास के लेखों से भी, किसी सच्चे खोजी को इस तथ्य को समर्थन में प्रमाण प्राप्त होंगेः ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है''

(2 तीमुथियुस 3:16)।

अगर बाइबल को सिर्फ एक लेखक ने लिखा होता तो उसके उद्देश्य को एक व्यवस्थित एवं प्रगतिशील शैली या ढ़ंग से विकसित होता पाकर हमें आश्चर्य नहीं होता। तथापि, किताबों की यह किताब एक व्यक्ति के द्वारा नहीं लिखी गयी है। परंतु विभिन्न संस्कृतियों के लेखकों के दौरान इसे लिखा है; इसके बावजूद, इसमें परमेश्वर से संबंधित सच्चाई का एक नियमित, व्यवस्थित और अद्वितीय अर्थात् अनोखा विकास उपलब्ध है। वह स्वतः में सबसे अधिक शानदार या सर्वश्रेष्ठ, महत्वपूर्ण, और इससे कहीं अधिक बढ़कर - आश्चर्यजनक है।

इसके अतिरिक्त हम यह भी पाते हैं कि खगोल - शास्त्री लोग लगातार ऐसे नये प्रमाण ढूंढ़कर निकाल रहे हैं, जो बाइबल के लेखों की ऐतिहासिक यथार्थता की अपेक्षाकृत और अधिक पुष्टि करते हैं। जिन घटनाओं को काल्पनिक समझकर अस्वीकृत कर दिया गया था, आधुनिक समझकर अस्वीकृत कर दिया गया था, आधुनिक खगोलशास्त्रियों के फ़ावड़ों के द्वारा अब उनकी सच प्रमाणित कर दिया गया है।*

हां, बाइबल सचमुच परमेश्वर की पुस्तक है, जिसमें सब लोगों के लिये परमेश्वर का संदेश उपलब्ध या सन्निहित है।

इस तथ्य के बावजूद कि बाइबल, परमेश्वर की पुस्तक है, कुछ लोग इस लोकप्रिय भ्रम के कारण उसे पढ़ने से अभी भी मुंह मोड़ लेते हैं कि विश्व दो समूह में विभाजित हैः वैज्ञानिक, जो तथ्यों

का सामना करते हैं और सच्चे विश्वासी लोग, जो उनके प्रति अपनी आंखें बंद करते हैं। तथापि, आज अनेक महान् वैज्ञानिक हैं, जो इस धारण की अस्वीकार करते हैं। यद्यपि बाइबल विज्ञान से भरी कोई पुस्तक नहीं है, फिर भी जहां भी उसने इन पहलुओं का स्पर्श किया है, वहां स्थापित वैज्ञानिक तथ्यों के द्वारा उसे कभी अमान्य नहीं किया गया है। इसके बजाय, बाइबल अपने उद्देश्य और अपनी रचना में, विज्ञान की सीमाओं से पार या परे जाती है।

उदाहरणार्थ, विज्ञान इस बात की व्याख्या नहीं करता है कि हम ग्रह पृथ्वी पर क्यों हैं, और न ही यह बताता है कि हम यहां पृथ्वी पर अपने जीवन का अंत होने के बाद कहां जाते हैं या कहां जा रहे हैं। इसके अलावा, विज्ञान हमें यह भी नहीं बताता है कि वास्तव में जीवन से संबंधित बातें क्या हैं अर्थात् जीवन क्या है अथवा यहां तक कि विज्ञान किसी व्यक्ति का यथार्थ मूल्य भी नहीं बताता है। चाहे कोई व्यक्ति कितना भी चालाक (या साधारण) हो, परमेश्वर से संबंधित सच्चाई को जानने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को दैवीय या ईश्वरीय मदद की जरूरत होती है। ठीक यही कारण है कि फ्रांस के दार्शनिक और गणितज्ञ ब्लेस पास्कल ने कहा हैः ''इस तर्क या धारणा की सर्वोच्च उपलब्धि हमें यह दर्शाना है कि तर्क या धारणा के लिये एक सीमा है।'' अगर ये परमेश्वर की पुस्तक के लिये नहीं होते, तो हमारे पास दीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों के लिये विश्वसनीय उत्तर कभी नहीं होते।

अब आइये, हम दो सुदृढ़ संकेतों पर ध्यान दें कि बाइबल

सचमुच में परमेश्वर की पुस्तक है।

पहला संकेत है - भविष्य द्वक्ताओं के द्वारा की गयी भविष्यद्वाणियों की सर्वश्रेष्ठ यथार्थता। दूसरा संकेत है - शक्तिशाली और सकारात्मक प्रभाव, जिसे इसने उन लोगों के जीवन में लागू किया है, जिन्होंने इसके संदेश को गंभीरतापूर्वक लिया है।

बाइबल की भविष्यद्वाणी की यथार्थता

हममें से अधिकांश लोगों के मन में यह जानने की जिज्ञासा रहती है कि हमारे भविष्य में क्या होगा। और बाइबल भविष्यकी इनमें से कुछ अत्याधिक महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रकट करती है। इसके साथ ही साथ कई जटिल और आकर्षक विस्तृत बातों को प्रकट करती है। अब आप अच्छी तरह यह पूछ सकते हैंः ''आप इतने अधिक निश्चित् कैसे हो सकते हैं?''

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये आइये, कल्पना करें कि आप किसी ऐसे देश में छुट्टी मनाने के लिये गये हैं, जहां आप पहले कभी नहीं गये हैं। आपके हाथ में जो नक्शा है, वही आपका एकमात्र पथप्रदर्शक है। कल आपने इस नक्शे को पूरी तरह विश्वसनीय पाया था; क्योंकि इसने जैसी सूचना या जैसे संकेत दिये थे, ठीक उसी के अनुसार आपको एक नदी मिली और तब एक गांव मिला, जहां आप पिछली रात सोये थे। आज आपको एक नया रास्ता लेने का निर्णय करना चाहिये। आपके सामने एक अपरिचित क्षेत्र है, परंतु आपका नक्शा यह संकेत देता है कि अगर आप बायीं ओर मुड़ें गे, तो आप कुछ जंगलों से होकर ऐसी जगह पहुंचेंगे, जहां आपको एक बड़ी

झील मिलेगी। अब आप उस झील को देखना चाहेंगे, इसलिये आप क्या करेंगे? मेरे विचार के अनुसार, आप नक्शे के निर्देशों को पालन करेंगे और बायीं ओर मुड़ जायेंगे। ऐसा करने में आपके आत्मविश्वास के लिये निश्चय ही प्रमुख कारण यह तथ्य होगा कि कल एक अपरिचित क्षेत्र में आपके नक्शे ने एक सच्चे / पथप्रदर्शक के रूप में खुद को साबित किया था। उसने आपको बताया कि इससे पहले कि आप वहां पहुंचेंगे, आपको वहां क्या मिलेगा, और वह सही था!

सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रमाणों में से एक प्रमाण कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, यह है कि जब यह भविष्य की घटनाओं की भविष्यद्वाणी करती है, तब इसमें एक अनोखी यथार्थता पायी जाती है। इसके पृष्ठों में, हम अनेक भविष्यद्वाणियाँ पढ़ते हैं, जिन्हें हम आज के दृष्टिकोण से जानते हैं कि जिनकी सैकड़ों वर्ष पूर्व जैसी भविष्यद्वाणी की गयी थी वे ठीक वैसी ही पूरी हुई हैं।

ये भविष्यद्वाणियाँ ध्यान देने योग्य क्षेत्र तक फैली हुई हैं, जो पृथ्वी के सभी लोगों को शामिल करती हैं, जिनमें इस्राएल और मध्यपूर्व के बारे में अत्याधिक विशिष्ट विस्तृत बातें भी शामिल हैं। यहां तक कि अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण सैकड़ों भविष्यद्वाणियाँ भी हैं, जो मसीहा के आगमन से संबंधित हैं। चूंकि इनमें से मसीहा संबंधी कई भविष्यद्वाणियाँ अब इतिहास बन चुकी हैं, तौभी हम स्वीकार करते हैं कि वे कितनी अधिक यथार्थ या सही थीं, और मसीहा के जन्म, जीवन और उसकी मृत्यु के बारे में कुछ अत्याधिक

सही विवरण प्रदान करती हैं।

ऐसे मौलिक लेख के आधार पर, यह अनुमान लगाना उपयुक्त (और उचित) है कि भविष्य में ठीक वही बातें होंगी, जिनकी बाइबल में भविष्यद्वाणी की गयी है। बाइबल की भविष्यद्वाणी की यथार्थता का अगला प्रमाण प्रत्येक वर्ष हमारी आंखों के समक्ष दिखाई देगा। वास्तव में, बाइबल को पढ़ना, आने वाले कल का समाचार पत्र पढ़ना है।

डॉ. विलबर स्मिथ बाइबल के एक जीवन पर्यन्त छात्र थे। उन्हें बाइबल की भविष्यद्वाणी की विस्तृत यथार्थता को बताने में विशेष आनंद प्राप्त होता था। पुराने - नियम में मसीहा संबंधित कई भविष्यद्वाषियों की तुलना ऐसे लोगों की शिक्षाओं से करने पर, जो सत्य को पाने का दावा करते थे, विलबर स्मिथ ने लिखा कि ''इस्लाम नतो मोहम्मद के आगमन से संबंधित एक भी भविष्यद्वाणी का संकेत, मोहम्मद के जन्म से सैकड़ों वर्ष पहले नहीं कर सकता है। और न ही किसी धार्मिक वर्ग या संप्रदाय के संस्थापकों ने किसी ऐसी प्राचीन किताब की सही पहतान या जानकारी प्रदान होने के बारे में पहले से बताया गया हो।''

अब हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि ऐसी अनेक बातें हैं जिन्हें भविष्यद्वाणियाँ कहा जा सकता है, जिन्हें यथार्थ होने के लिये अधिक प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है।

कम्प्यूटरों, इलेक्ट-ॉन - दिवसीय साक्षात्कारों, ऐतिहासिक विवरणों जैसे समाचार प्रसारण के माध्यम की मदद से, कभी - कभी

मतदान पेटियों के बंद होने के पहले ही चुनाव में विजेता की भविष्यद्वाणी कर दी जाती है। उनके पास उपलब्ध सभी आंकड़ों के साथ, ऐसी कोई भी ध्यान देने योग्य बात नहीं होती है कि वे समय से पहले विजेता का नाम घोषित कर दे और यहां तक कि कभी - कभी वे भूल कर बैठें!

तथापि, किसी समाचार पत्रकार से यह पूछने का प्रयास करें कि वह उन प्रत्याशियों को पहचाने, जो आज से बीस या पचास वर्ष बाद चुनाव के खातिर भागदौड़ करते रहेंगे। उससे पूछें कि कौन जीतेगा, और तब स्थानों के बारे में विवरण पूछें, जहां विजेता जन्म लेंगे, उनकी जीवनशैली कैसी होगी और किन परिस्थितियों में उनकी मौत होगी। इससें आगे और जायें और समाचार पत्रकार से इस बात की विश्वासनीय जानकारी के लिये पूछें कि आज से एक हजार साल बाद मध्यपूर्व में क्या होगा। उससे विशेष तौर पर नगरों के बारे में पूछें जो उस लम्बे समय के दौरान पूर्णतः नष्ट हो जायेंगे।

आप इस बात से अवश्य ही सहमत होंगे कि उस समाचार पत्रकार की भविष्यद्वाणियों के सही होने के कारण उसकी भविष्यद्वाणी की मांग अत्याधिक बढ़ जायेगी और हर समय उससे एक अतिरिक्त भविष्यद्वाणी करने की मांग की जायेगी। वास्तव में यह तब ही हो सकता है, जब अनंतकाल का परमेश्वर उसे भविष्य के बारे में बतायेगा; केवल इसी स्थिति में, उस पत्रकार से आरंभ से अंत तक को जानने की अपेक्षा हम कर सकते हैं। हमारे समाचार पत्रकार के लिये हमने जो घटनाएँ या परिस्थितियों का सुझाव दिया है, जिनमें

अनेक जटिल विवरण एवं लम्बे समय का अंतराल भी शामिल है, बाइबल में ऐसी भविष्यद्वाणियाँ की गयी हैं।

उदाहरणार्थ, प्राचीन सोर नगर के इतिहास में हम पाते हैं कि परमेश्वर ने इस नगर के साथ होने वाली जिन घटनाओं के बारे में भविष्यद्वाणी की थी, वे एक महत्वपूर्ण ढ़ंग से पूर्ण हुईं।

यदि आप यह सब जानने के लिये अत्याधिक इच्छुक हैं, तो यहेजकेल 26:3-21 में लिखी गयी भविष्यद्वाणियों को पहले पढ़ें और इसके पश्चात् एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका एवं इतिहास के अन्य लेख पढ़ें। इन दोनो में आप समान कहानी पढ़ेंगे, पहली भविष्यद्वाणी के रूप में और दूसरी इतिहास के रूप में।

भविष्यद्वाणीः परमेश्वर ने घटनाओं के होने से बहुत समय पहले सारे नगर के लिये एक उपद्रवी भविष्य की भविष्यद्वाणी की। उसने कहाः

''देख, मैं तेरे विरूद्ध हूँ..... और मैं ऐसा करूंगा कि बहुत सी जातियां तेरे विरूद्ध ऐसी उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। और वे सोर की शहरपनाह को गिराऐंगी और उसके गुम्मटों को तोड़ डालेंगी, और मैं उस पर से उसकी मिट्टी सुरचकर उसे नंगी चट्टान कर दूंगा। और लोग तेरा धन लूटेंगे और तेरे व्यापार की वस्तुएँ छीन लेंगे; वे तेरी शहरपनाह ढ़ा देंगे और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे; तेरे पत्थर और काठ और तेरी धूलि वे जल में फेंक देंगे। मैं तुझे नंगी चट्टान कर दूंगा; तू जाल फैलाने ही का स्थान हो जायेगा; और फिर बसाया न जायेगा। (यहेजकेल 26:3,412,14)।

इतिहासः जब आप एतिहासिक लेखों को पढ़ते हैं, तब आप इस बात की पुष्टि करते हैं कि नबूकदनेस्सर ने जब सोर नगर को नष्ट किया, तब उसने सचमुच में दीवारों और मीनारों को ठीक उसी तरह तोड़ डाला, जिस तरह की भविष्यद्वाणी की गयी थी। बाद में, सिकंदर महान् के इंजीनियर ने खुरचकर प्राचीन सोर नगर की सफाई की और उसे एक नंगी चट्टान के समान छोड़ दिया था।

जब द्वीप तक पहुंचने ने लिये उन्होंने ऊँची सड़क बनाने के खातिर नगर के अवशेषों को समुद्र में फेंका, तब वह ठीक वैसा ही था, जैसा कि भविष्यद्वाणी में बताया गया थाः सचमुच पत्थर, लकड़ियाँ और धूल पानी में फेंके गये थे। हां, आज तक प्राचीन सारे के अवशेष समुद्र के जल में दफन हैं। परमेश्वर ने कहा ऐसा होगा और वैसा ही हुआ।

यद्यपि आज मध्यपूर्व में जाना - पहचाना सारे नगर है; लेकिन यह वह प्राचीन सारे नगर नहीं है, जिसे 1291 में अंततः नष्ट कर दिया गया था।

अगर आप प्राचीन सारे की उस जगह को जाकर देखने में सक्षम होंगे, तो आप इन भविष्यद्वाणियों की अपेक्षाकृत अधिक पूर्णता या भरपूरी को देखेंगे। वहां आप एक छोटे गांव में कुछ मछुवारों की झोपड़ियों का झुंड एकत्रित देखेंगे, जहाँ आप मछली पकड़ने वाली नावों को समुद्र पर चलते हुए तथा खुली चट्टानों पर मछली पकड़नेवाले जालों को सूखता हुआ देखेंगे। मानवीय बुद्धि ऐसे विख्यात व्यापारिक प्राचीन नगर सोर के लिये ऐसे अनुमान से

विपरीत भविष्य की नबूवत कैसे कर सकती थी?

पीटर स्टोनर ने प्राचीन सोर के बारे में की गयी सात भविष्यद्वाणियों की तुलना ऐतिहासिक रिकॉर्ड से किया है। उसने यहेजकेल की भविष्यद्वाणियों की भावी पूर्णता के बारे में गणित संबंधी संभावना की गणना करने के बाद बताया हैः

''यदि यहेजकेल ने अपने समय में सारे की ओर ध्यान दिया होता, और मानवीय बुद्धि के आधार पर ये सात भविष्यद्वाणियाँ की होती, तो अनुमानतः उन सबके सच होने का अंदेशा सात करोड़ पांच लाख में एक बार ही होता। सूक्ष्म विवरण में भी ये सभी सच साबित हुई हैं।''

अब आइये, एक शिशु के जन्म से संबंधित भविष्यद्वाणियों में से सिर्फ़ एक पर ध्यान दें।

मत्ती, जो कि एक सेवानिवृत्त सरकारी कर जमा करनेवाला अधिकारी था, उन अनेक महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणियों में से चार का स्मरण करता है, जो यीशु के जन्म के समय पूर्ण हुई थीं। उनमें से एक में मत्ती ने भविष्यद्वक्ता मीका का उल्लेख किया है, जिसने अपने समय के झूठे एवं पाखंडी शासकों के विरूद्ध गंभीर दोष एवं निंदा आरोपित किया था। मीका का हृदय टूट गया था; क्योंकि जब वह जीवित था, तब उसके देश में सच्चे नेतृत्वकारी अधिकारी का अभाव था। इसके बावजूद, जब परमेश्वर ने उसे यह दिखाया कि एक दिन एक शासक का जन्म होगा, तब उसने एक चमकता हुआ भविष्य देखा यहां तक कि उसने आने वाले अगुवा के निश्चित् जन्म स्थान का पता या संकेत

भी दिया।

हे बतेलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरूष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा; और उसका निकलना प्राचीन काल से वरन् अनादिकाल से होता आया है'' (मीका 5:2)।

परमेश्वर ने यह प्रकट किया कि इस्राएल में आवश्यक शासक का जन्म, एप्राता बैललेहेन में होगा।

मीका द्वारा की गयी भविष्यद्वाणी के अनुसार यीशु का जन्म उसके पारिवारिक गृहनगर नासरत में न होकर, एप्राता बेतलेहेम में हुआ था। यह जन्म रोमी सम्राट की आज्ञा के कारण वहां हुआ था। वह जनगणना का समय था और यीशु के माता - पिता एक राजकीय आज्ञा का पालन कर रहे थे। उसी के अनुसार, वे घर छोड़कर बेतलेहेम जाने के लिये निकल पड़े। उस छोटे बेतलेहेम से शासक के खातिर अपेक्षा अवश्य की कोई नहीं करेगा, जो अनेक यहूदी नगरों में से एक था। उसके जन्म लेने के विरूद्ध परिस्थितियाँ ध्यान देने योग्य थीं। इसके बावजूद, मीका ने जो भविष्यद्वाणी की थी, ठीक उसके अनुसार हुआ। यीशु के जीवन से संबंधित ऐसी सैकड़ों अद्भुत भविष्यद्वाणियों में से यह सिर्फ एक भविष्यद्वाणी थी।

हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने घोषित कियाः ''मैं तो अंत की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ, जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी

इच्छा को पूरी करूंगा'' (यशायाह 46:10)।

होने वाली बातों को तो मैं ने प्राचीन काल ही से बताया है और उनकी चर्चा मेरे मुंह से निकली, मैं ने अचानक उन्हें प्रकट किया और वे बातें सचमुच हुई।.... इस कारण मैं ने इन बातों को प्राचीनकाल ही से तुझे बताया उनके होने से पहले ही मैंने तुझे बता दिया, ऐसा न हो कि तू यह कह पाये कि यह मेरे देवता का काम है, मेरी खोदी और ढ़ली हुई मूर्तियों की आज्ञा से यह हुआ'' (यशायाह 48:3,5)।

बाइबल का शक्तिशाली प्रभाव

इस बात का एक दूसरा शक्तिशाली प्रमाण कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, वह प्रभाव है, जो बाइबल ने लागू किया है। जब कभी और जहां कहीं भी बाइबल की शिक्षा दी गयी और उस पर विश्वास किया गया है, वहां बाइबल के संदेश ने मनुष्य जाति को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत तौर पर प्रतिष्ठित किया है।

इस पुस्तक के प्रथम पुनः संस्करण के छपने के लिये जाने से ठीक पहले, हमारे घर एक नया मित्र आया। हमने हस्तलिपि का साथ मिलकर पुनः अवलोकन किया। यद्यपि उसने अपनी भावना को तत्परता या तुरंत प्रदर्शित नहीं किया; तौभी जब हमने अध्याय सात पढ़ा, तो उसने किसी तरह अपने आंसुओं पर काबू पा लिया। हम प्रार्थना करने के लिये झुकने और उस परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिये दो बार रूक गये, जिसके प्रेम के बारे में हम पढ़ रहे थे। हमने साथ मिलकर परमेश्वर को उसके धैर्य, उसकी दया और हमारे अयोग्य जीवन में उसके प्रेम के पुरस्कार के खातिर धन्यवाद दिया।

जब हमने जीवित परमेश्वर की अर्थपूर्ण उपस्थिति की सक्रियता या जागरूकता को महसूस किया, तब हम आनंद से भर गये।

वह दिन मेरे मित्र के लिये विशेष तौर पर अर्थपूर्ण था। ठीक एक वर्ष पहले, वह एक आरामदायक कक्ष में अकेला बैठा हुआ था, जो अभी के उस कक्ष की तुलना में बिल्कुल विपरीत था, जहाँ अभी हम मुलाकात कर रहे थे।

परंतु उस समय उसके चारों ओर की सुंदरता ने उसे कोई आनंद प्रदान नहीं किया था। वास्तव में, उसमें ऐसी आंतरिक निराशा या उदासीनता थी कि उसे जीने की कोई सच्ची चाहत नहीं थी। व्यक्तिगत सुख प्राप्ति की अपनी तत्नाश में उसने अपने पुरूषत्व की सभी पशुवत् प्रवृत्ति को अपना लिया था अर्थात् अपने में समाविष्ट कर लिया था। कोकीन का सेवन करने की उसकी आदत ने उसके भाग्य को दाव पर लगा दिया था। वह प्रतिदिन ''डाऊनर्स'' एंड अपर्स'', ब्रैंडी और ह्विस्की का सेवन करता था। कई वर्षों से वह यूरोप में और समस्त संसार में चारों ओर सबसे अधिक धनी लोगों के साथ पार्टी में शामिल होता था; परंतु उस रात वह अकेला था। उसके अकेलेपन में, उसकी स्मृति प्रेरित निराशा एक धमकी और भय से पूर्ण सांसारिक परिस्थिति पर विचार करने के कारण, अब गहरी हो गयी थी। उसे अपने बचाव का कोई रास्ता या मार्ग नजर नहीं आ रहा था।

उसने मंद निश्चयता के साथ अपनी दो नाली बंदूक में गोलियाँ भरीं और अपने मस्तक पर रखकर टि-गर दबा दिया। ''सिर्फ एक इंच

के 1/8 अंश दूर उपेक्षा से'' उसने सोचाः ''अब मेरा दुःख - दर्द हमेशा के लिये खत्म हो जायेगा''। उस विभाजित सेकंड में (मेरा मित्र यह नहीं जानता है कि यह कैसे हुआ) टी.वी. कार्यक्रम बदल गया। उसने स्वयं को बाइबल से एक संदेश सुनते हुए पाया, जिसने उसके समक्ष आशा का एक भविष्य प्रस्तुत किया। लगभग मध्यरात्रि के समय वह अकेला था, वह जीवित परमेश्वर से क्षमा और दया मांगने के लिये उसके सामने फर्श पर गिर पड़ा।

क्योंकि परमेश्वर के सामर्थ ने मेरे मित्र के जीवन को सचमुच में रूपांतरित कर दिया था, मेरे सामने जो व्यक्ति था, वह उस व्यक्ति के साथ थोड़ी समानता रखता था, जिसका मैं ने संक्षिप्त विवरण दिया था। उसके जन्म से पहले उसके माता - पिता ने उसके लिये प्रार्थना की थी; यद्यपि एक युवक के रूप में उसने बाइबल का अध्ययन किया था, तौभी उसने उसके संदेश को गंभीरता पूर्वक ग्रहण करने से इंकार कर दिया था। वह अपने प्रभाव और विशेषाधिकार के संसार में परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करता था और अविश्वासनीय नैतिक आजादी का सक्रिय रूप से आनंद उठाया था।

सत्रह वर्ष पहले, उस यादगार रात्रि में मेरे मित्र ने अंततः परमेश्वर को प्राप्त किया और उसने चमड़े से बंधी एक सुंदर पुस्तक खरीदा था। उसमें काले - सफेद पृष्ठ थे। उस दिन से उसकी यही इच्छा रहती थी कि वह अपने जीवन की प्रत्येक अर्थपूर्ण घटना को लिख ले। और इन सबके बावजूद, फिजूल खर्च करने वाले और निरर्थक जीवन जीने के उन सत्तरह वर्षों की एक भी घटना को उसने

उसमें श्रेय देते हुए कोई उल्लेख नहीं किया।

सच्चाई अर्थात् तथ्य यह है कि उन सत्तरह वर्षों के दौरान, मेरे मित्र ने जीवित परमेश्वर की ओर से अपना मुख मोड़ रखा था और उसने एक अनोखी और असंतोषजनक नकली या आडंबर भरी आत्मिक यात्रा की थी। इसकी शुरूआत प्रतिदिन शशिफल या ज्योतिष में रूचि रखने तथा रॉक संगीत व रॉक संगीत कार्यक्रमों के प्रति अत्याधिक आसक्ति के साथ हुई थी। शीघ्र ही वह रहस्यमयी और जादूगरी की बातों में शामिल हो गया था। बाद में योगासन के प्रति उसका आकर्षण उसे हिंदू धर्म की दार्शनिक बातों के गंभीर अध्ययन की ओर ले गया और धीरे - धीरे वह पूर्वी रहस्यमय धर्म के साथ संलग्न हो गया। उन वर्षों के दौरान, उसने जो कुछ भी अनुभव किया था, उनमें से एक भी अनुभव को उसने उस चमड़े की नोटबुक में प्रवेश करने का श्रेय नहीं दे सका। जब तक उस यादगार रात्रि में उसकी मुलाकात परमेश्वर से नहीं हुई, तब तक उसकी नोटबुक पृष्ठ खालीपन के दर्द के अहसास के साथ सफेद ही रहे।

उस रात्रि मेरे मित्र ने अपने प्रथम अनुभव को प्रवेश देते हुए उस नोटबुक में लिखा। उसने जो लिखा था, उसे पढ़ने की खुशी मुझे मिली। वह एक जरूरतमंद व्यक्ति का एक पवित्र और आत्मिक वृतांत है, जिसे जीवित परमेश्वर ने बचाया था। यह सचमुच सुंदर है। परमेश्वर ने अपनी महान् दया के कारण उसके आत्मिक अंधेपन से तोड़ा था और अपने अपखिर्तनशील सत्य के प्रकाश और अद्भुत प्रेम के द्वारा उसे निराशा, विषाद और मृत्यु से छुड़ाया था।

मेरे मित्र के अंधेपन की तरह के मनुष्य के आत्मिक संदेह के कारण परमेश्वर ने स्वयं को एक पुस्तक में प्रकट किया है, जिसे बाइबल कहा जाता है। यदि आप बाइबल से मुख मोड़ेंगे, जोकि एकमात्र विश्वासनीय आत्मिक पथप्रदर्शक है, तो आप स्वयं को भ्रम और त्रुटि के चक्र में बंद पायेंगे। परंतु अगर परमेश्वर के लिये आपकी तलाश में, आप सीखने की इच्छा रखते हुए बाइबल पढ़ते हैं, तो आपको आपके लिये आवश्यक सभी आत्मिक प्रकाश और निर्देशन उसमें उपलब्ध मिलेंगे।

चूंकि परमेश्वर ने स्वयं को घोषित किया है, इसलिये हम केवल परमेश्वर के वचन के द्वारा परमेश्वर की एक स्पष्ट समझ प्राप्त कर सकते हैं। इस पुस्तक में हमें सत्य का पश्चिम, परमेश्वर के वचन का पश्चिम, संसार की ज्योति का पश्चिम प्राप्त होता है।

प्रभु, तेरा वचन साथ बना रहता है, और हमारे कदमों की पथप्रदर्शित करता है; जो उसके सत्य में विश्वास करता है, वह प्रकाश और आनंद प्राप्त करता है।

<u>ध्यान देने के लिये रूकें</u>

1. भविष्य की घटनाओं की भविष्यद्वाणी करने में, क्या अन्य हस्तलिपियाँ अथवा विभिन्न पवित्र लेख पाये जाते हैं, जिनकी यथार्थता के लिये बाइबल के साथ उनकी तुलना की जा सकती है?
2. क्या आप व्यक्तिगत रूप से ऐसे लोगों को जानते हैं, जिनके जीवन बाइबल के संदेश पर ध्यान देने के कारण रूपांतरित हो

गये हैं?

3. क्या आपने बाइबल की अनोखी या अद्वितीय शिक्षा पर ध्यान दिया है, जबकि उसी दौरान आपने उसे खुले मन से पढ़ना नज़रअंदाज कर दिया है?

यद्यपि स्वर्ग और पृथ्वी की समस्याएँ एक ही समय में साथ मिलकर हमारे सामने आती हैं; तौभी वे परमेश्वर की अभिभूत करनेवाली समस्या की तुलना में कुछ नहीं होंगी; कि वह है; वह कैसा है; और हमें नैतिक प्राणी होने के नाते उसके बारे में क्या करना चाहिये।

ए. डब्लू. टोजर

अध्याय - 3

परमेश्वर कैसा है?

अधिकांश लोगों ने जीवन में कुछ समय के दौरान यह प्रश्न पूछा है: ''परमेश्वर कैसा या किस तरह का है?'' यद्यपि परमेश्वर ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है; तौभी ऐसे लोग हैं, जो इस उत्तर पर यकीन करने के बजाय अपनी कल्पना और अंदाजा अर्थात् अनुमान पर निर्भर रहते हैं कि परमेश्वर ने बाइबल में अपने बारे में जो बताया है।

ये लोग बाइबल के एक महत्वपूर्ण वक्तव्य को सचमुच विपरीत रूप में प्रस्तुत करते हैं। जहाँ परमेश्वर ने कहा है: ''आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनायें'' (उत्पत्ति 1:26) वे कहते हैं: ''आओ, हम परमेश्वर को अपने स्वरूप में बनायें''। इसलिये उन्होंने भ्रष्ट न होने योग्य परमेश्वर की महिमा को भ्रष्ट होने योग्य मनुष्य के एक स्वरूप में बदल डाला (रोमियों 1:23)। प्रत्येक 'ईश्वर', जो मनुष्य कें द्वारा उत्पन्न किया गया है बिल्कुल शक्ति हीन है और कभी कभी भद्दा या बेढंगा भी होता है।

चाहे कोई व्यक्ति कितना भी चालाक हो, वह सांसारिक बुद्धि के द्वारा जीवित परमेश्वर की खोज कभी नहीं कर सकता है... संसार ने अपनी बुद्धि के द्वारा परमेश्वर को नहीं जाना (1 कुरिंथियों 1:21)। यदि मानवीय चतुरता से परमेश्वर को खोजना संभव है, तो वह परमेश्वर होने के लिये बहुत ही छोटा होगा। न सिर्फ यही; परंतु यदि परमेश्वर को खोजने के लिये मानवीय चतुरता या निपुर्णता अनिवार्य होती, तो उन लोगों को जो अधिक चतुर या निपुर्ण नहीं हैं,

परमेश्वर की लिये उनकी खोज में कोई लाभ नहीं होगा। लेकिन ऐसी बात नहीं है।

इसके विपरीत आत्मिक ज्ञान सबके लिये उपलब्ध है। जिस तरह यह किसी अफ्रीका महिला के लिये उपलब्ध है, उसी तरह यूनीवर्सिटी के किसी प्रोफ़ेसर के लिये भी उपलब्ध है; क्योंकि आत्मिक बुद्धि को शैक्षणिक प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त नहीं किया जाता है। यह उन सभी नम्र व दीन लोगों के लिये इस बात को स्वीकार करने के खातिर उपलब्ध है कि परमेश्वर की खोज में उन्हें उसकी मदद की जरूरत है।

''परंतु अगर किसी को बुद्धि की कमी है, तो वह परमेश्वर से मांगे, जो उन्हे बिना उलाहना दिये उदारता से देगा'' (याकूब 1:5)। जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना; क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। .... परंतु हमने संसार की आत्मा नहीं, परंतु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी है।'' (1 कुरिंथियों 2:8,12)।

बाइबल मात्र एक धार्मिक शोध लेख नहीं है; यह प्राथमिक तौर पर वह लेख है जिसमें यह बताया गया है कि परमेश्वर ने स्वयं को मनुष्य पर किस प्रकार प्रकट किया है। इसके साथ ही साथ यह कि सिर्फ़ परमेश्वर ही उस आत्मिक बुद्धि को आपको दे सकता है, जिसकी आवश्यक्ता आपको यह समझने के लिये है कि वह कौन है और वह आपके जीवन में क्या करना चाहता है।

यदि आप परमेश्वर से मांगेंगे, तो वह स्वयं को अपने पवित्र वचन के माध्यम से आपकों प्रदर्शित करेगा।

हमने अपनी यात्राओं के दौरान, असामान्य और असंभव लगने वाले स्थानों और लोगों के बीच गहरी आत्मिक रूचि और प्रेरणाओं को पाया है। उदाहरणार्थ, एक दिन दिन कीनिया के जंगल में हमारी मुलाकात अफ्रीकी युवकों के एक समूह से हुई, जो सिर्फ अपने विश्वास के बारे में बताने और परमेश्वर के बारे में अधिक बातें सीखने में ही रूचि रखनेवाले प्रतीत होते थे।

भूमध्यरेखीय सूर्य शीघ्रता से क्षितिज के नीचे छिप गया था, उसने एक व्यस्त और लंबे दिन का अंत कर दिया था। जब मैं विश्राम करने के लिये की निया की धूल से भरी एक गली के किनारे के चट्टान पर बैठा, तब मैंने भ्ताड़ी में सरसाहट सी गतिं की आवाज़ सनी। मैंने पूर्णयं द्मां की मंद किरण के प्रकाश में बड़ी काली आंखों वाले एक अफ्रीकी लड़के को देखा। जल्द ही दस वर्ष का वह बालक मेरे साथ चट्टान पर पालती मारकर बैठा हुआ था; हम जल्द ही अच्छे मित्र बन गये। दूसरे लड़कों ने हमारी आवाज सुनी और यहां वहां से यह सुनने के लिये आते दिखाई दिये कि हम क्या बात कर रहे थे। उनके बाइबल संबंधी ज्ञान से मैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ।

मेरे छोटे मित्र ने पूछाः ''परमेश्वर ने मूसा को अपना चेहरा क्यों नहीं दिखाया''?

ऐसे प्रश्न से मोहित होते हुए मैं ने प्रत्युत्तर के रूप में छोटे जोएल से पूछा कि क्या वह परमेश्वर के यह कहने से पहले मूसा के

द्वारा की गयी विनती को याद कर सकता हैः ''तू मेरी पीठ देखेंगा, लेकिन मेरा मुख तुझे दिखाई नहीं देगा'' (निर्गमन 33:23)।

मूसा यह बिल्कुल नहीं जानता था कि परमेश्वर की महिमा को देखना कितना अभिभूत करने वाला होगा। तथापि, चूंकि परमेश्वर खुद को प्रकट करने वाला परमेश्वर है, जो मनुष्य को अपनी ओर खींचता है अर्थात् अपने निकट लाता है; इसलिये उसने भविष्यद्वक्ता मूसा अपना उतना ही भाग दिखाया, जितना कि वह सहन कर सकता था अन्यथा परमेश्वर की उपस्थिति के प्रताप से बिल्कुल भस्म हो जाता। हालांकि परमेश्वर ने मूसा से अपनी महिमा का पूर्णता को छिपा लिया था। जब परमेश्वर उस स्थान से गुज़रा, जहाँ मूसा मौजूद था, तब तक उसने मूसा को एक ऊँची पहाड़ी की चट्टान की दरार में शरणस्थान देकर रखा था (निर्गमन 33:22)।

भूमध्यरेखा पर रहने वाले मेरे युवा मित्र यह जानते थे कि वे अपनी आंखों पर कवच चढ़ाये वगैर दोपहर के सूर्य के अत्याधिक तेज प्रकाश को देखने में असमर्थ हैं। वे यह भी जानते थे कि कीड़े - पतिंगे आदि सिर्फ़ किसी अंधेरी रात्रि में ही प्रकाश की ओर आकर्षित होते थे। मैं ने जब यह पूछा कि अगर पतिंगे प्रकाश के स्त्रोत के बहुत अधिक निकट पहुंच जाते हैं, तब क्या होता है, उन्होंने एक साथ उत्तर दियाः ''वे मर जाते हैं।'' वे स्पष्ट रूप से प्रकाश के अधिक समीप जाने के खतरों से अवगत थे।

मैंने एक दूसरा उदाहरण सोचने का प्रयास किया, जो उनके प्रश्न के उत्तर को समझने में उनकी मदद कर सके। मेरे सभी मित्र,

शिशु को लपेटने वाले वस्त्रों के बारे में जानते थे, जो उनके शिशु भाईयों और बहनों को बांध कर और लपेटकर उनकी माता के हृदय के प्रेम एवं कोमल अर्थात् नाजुक देखभाल के समीप रखते हैं। तब मैं ने उन्हे ल्पेटने वाले वस्त्र के बारे में बताया (अय्यूब 38:9), जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी के चारों ओर लपेटा है।

(वैज्ञानिक इसे ओजोन स्तर कहते हैं। यह ऑक्सीजन का नाजुक कम्बल सूर्य की नुकसानदेय अल्ट-ावायलेट किरणों को छानकर अलग कर देता है। वास्तव में, सूर्य के बिना ग्रह पृथ्वी में कोई जीवन नहीं रहेगा; परंतु परमेश्वर की नाजूक देखभाल ने सूर्य की ऊर्जा की एक अतिरिक्त खुराक तथा कैसर उत्पन्न करने वाले विभिन्न प्रभाव से हमें बचा लिया है।)

मेरे छोटे मित्र परमेश्वर के लपेटने वाले वस्त्र में विशेष तौर पर रूचि लेते हुए दिखाई दे रहे थे, जबकि मैं ने सामान्य और सरल शब्दों में इस बात की व्याख्या करने का प्रयास किया कि वह हम सबकी भयानक झुलसन से सुरक्षा करता है। मैं यह नहीं जानता हूँ कि मैं ने जो कहा उन सब बातों को उन्होंने समझा अथवा नहीं; परंतु उनके छोटे दिलों ने परमेश्वर के प्रेम और उसकी महिमा के लिये कोमलतापूर्वक प्रत्युत्तर दिया और हमने साथ मिलकर प्रार्थना करने में एक बहुमूल्य समय बिताया था। वे व्यक्तिगत तौर पर प्रकट या स्पष्ट रूप से यह जानते थे कि उन लोगों ने भी उसी सुरक्षा का आनंद उठाया, जिस सुरक्षा का आनंद मूसा को परमेश्वर की खोज के दौरान प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर कैसा या किस

प्रकार का है, की हमारी निजी समझ के लिये मौलिक बात यह है, जो बाइबल हमें बतायी हैः ''प्रभु हमारा परमेश्वर, एक परमेश्वर है'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)। उसके व्यक्तित्व की एकता एक मौलिक सच्चाई है।

परंतु परमेश्वर कैसा है, इस बात की पूर्ण समझ हमें प्रदान, करने के लिये, उसने हमें अपने विभिन्न नाम बताये हैं।

बाइबल में, नामों को हमेशा महत्वपूर्ण माना गया है; क्योंकि उनके अर्थ का तात्पर्य नामधारी व्यक्ति के चरित्र के कई पहलुओं पर रोशनी डालने से होता है। प्रत्येक नाम जिसे परमेश्वर के बारे में उल्लेख करने के लिये लिया जाता है, एक अत्याधिक महत्वपूर्ण अर्थ रखता है और उसके ईश्वरीय व्यक्तित्व के एक अद्वितीय पहलु को प्रकट करता है।

पुराने नियम में, तीन प्राथमिक नाम हैं, जिन्हें परमेश्वर के लिये प्रयुक्त किया जाता हैः Yahweh (यहोवा), Elohim (परमेश्वर) और Adonai (प्रभु)। प्रत्येक का एक विशेष अर्थ और महत्व है। सबसे पहले Elohim नाम का उपयोग किया गया है और इसका उल्लेख करीब दो हजार बार से अधिक हुआ है। यद्यपि Yahweh नाम सार्वभौम एवं सर्वश्रेष्ठ है, तौभी परमेश्वर के नाम Elohim से संबंधित एक प्रत्यक्ष महत्व और अर्थ भी है, जिसे परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम उसे नज़र अंदाज करें। यह क्या हो सकता है?

अंग्रेजी भाषा में, जब हम एक वचन में बात करते हैं, तब हम

एक व्यक्ति या वस्तु के बारे में कहते हैं तथा जब हम बहुवचन में बात करते हैं, तब हम ''एक'' से अधिक व्यक्ति या वस्तु के बारे में कहते हैं। मौलिक इब्रानी अधिक सही या यथार्थ है। इसमें दो का उल्लेख करने के लिये ''युग्म या जोड़ी'' का प्रयोग किया जाता है और दो से अधिक का उल्लेख करने के लिये ''बहुसंख्यक अथवा बहुवचन'' का प्रयोग किया जाता है। युग्म और बहुसंख्यक अर्थात् दो एवं बहुवचन के बीच अंतर (दो और तीन या तीन से अधिक के बीच अंतर) अत्याधिक महत्वपूर्ण है या अर्थपूर्ण है। बाइबल में परमेश्वर के लिये सबसे पहला नाम Elohim प्रयुक्त किया गया है। इब्रानी भाषा में, Elohim सृष्टिकत्ती परमेश्वर का उल्लेख करता है - यह न तो एकवचन है और न ही द्विवचन अर्थात् युग्म या जोड़ी है; परंतु यह बहुवचन में है।

''आरंभ में परमेश्वर (Elohim) ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:1)। अतः, हम यह पाते हैं कि बाइबल के सबसे पहले पद में - जो मनुष्य के लिये परमेश्वर का स्वतः प्रकाशन (स्वयं का प्रकाशन) अर्थात् खुद को प्रकट करना है - एक में तीन और तीन में एक की उस धारणा का सूचक या संकेत है कि परमेश्वर कौन है। कभी - कभी तीन की इस एकता को त्रिएकत्व कहा गया है।

हम परमेश्वर की तीन की एकता के प्रथम संकेत के बाद, परमेश्वर द्वारा मनुष्य की सृष्टि के वृतांत पर आते या पहुंचते हैं। "And God said, fet us make man in our image" फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में

बनाएं'' (उत्पत्ति 1:26) *। कोई भी व्यक्ति इस बात में कोई ग़लती नहीं कर सकता है कि अंग्रेजी भाषा में हम (Us) और हमारे (Our) दोनों बहुवचन सर्वनाम हैं। परंतु हम अगले वाक्य ये एक अद्‌भुत बात पढ़ते हैं: "Male and female He created them अर्थात् उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:27)। यहां यह स्पष्ट है कि "He" सिर्फ एक व्यक्ति का उल्लेख कर सकता है। इसलिये ''एक'' और ''एक से अधिक'' के रूप में परमेश्वर के लिये प्रयुक्त किये गये इन संकेत में से प्रत्येक, उस परमेश्वर के लिये है, जिसने पहले ही स्वयं का Elohim अर्थात् परमेश्वर के रूप में परिचय दे दिया है।

ऐसे परमेश्वर को समझना, सांसारिक बुद्धि की क्षमता से बिल्कुल परे है। इसलिये, हमारे समझने के खातिर मदद के लिये, परमेश्वर ने उदारता पूर्वक वा आत्मा दिया है, जो उसकी ओर से है ताकि हम उन बातों को जान सकें; जिन्हें उसने हमें सें तमेंत अर्थात् मुफ्त में दिया है। ''हमने संसार का आत्मा नहीं, परंतु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी है'' (1 कुरिंथियों 2:12)। बाइबल, परमेश्वर कैसा है, से संबंधित आरंभिक संकेतों के साथ आरंभ करते हुए उसकी रहस्यमयी तीन एकता को धीरे - धीरे खोलती या प्रकट करती है। परमेश्वर कौन है से संबंधित इस एक में तीन और तीन में एक व्यक्तित्व की समझ आपके द्वारा आध्याय सात को पढ़ने के दौरान परमेश्वर के आश्चर्यकारी प्रेम की अपेक्षाकृत पूर्ण सराहना करने में

आपकी मदद करेगी।

परमेश्वर उसके प्रेम की महानता से संबंधिक कुछ बातों को समझने में हमारी मदद करने के लिये शेष बाइबल में प्रगतिशील ढ़ंग से स्वयं को प्रकट करता है। वहां हमारा परिचय परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा से होता है। इसके बावजूद वह स्वयं को एकमात्र और हमेशा एक होने के रूप में प्रकट करता है। हम मनुष्यों की बुद्धि ऐसी किसी धारणा के सिर्फ किनारे काडे ही समझ सकती है। अतः, चूंकि मनुष्य के लिये सच्चे और जीवित परमेश्वर तक पहुंचना और उसका पता लगाना असंभव था; इसलिये उसने स्वयं पहल की और खुद को मनुष्य से परिचित कराया।

मूसा की आंखों से परमेश्वर की महिमा और पवित्रता का पूर्ण प्रकाशन छिपा हुआ था। तथापि, परमेश्वर पुत्र के व्यक्तित्व में Elohim परमेश्वर ने स्वयं को उतना ही प्रकट किया, जितना कि मनुष्य सहन कर सकता था।

इसके अनुसार ही, हम नये - नियम में पढ़ते हैंः ''इसलिये परमेश्वर ही है, जिसने कहा कि अंधकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो'' (2 कुरिंथियों 4:6)।

थोड़ा इस पर विचार करेंः जब यूहन्ना ने यीशु मसीह के चेहरे पर दृष्टि डाली, तब उसने (यूहन्नाने) घोषित कियाः हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूहन्ना 1:14)।

बाद में, यूहन्ना ने इसके बारे में परमेश्वर के साथ अपनी

व्यक्तिगत मुलाकात के रूप में लिखा और चूंकि उसने यीशु के व्यक्तित्व में () परमेश्वर से मूलाकात की थी; इसलिये वह कहानी या वृतांत को बताने के लिये जीवित रहा! इसके बावजूद, उसने इसे बिल्कुल स्पष्ट किया कि उसकी मुलाकात वास्तव में अनंतकाल के परमेश्वर, सृष्टि के परमेश्वर, मूसा के परमेश्वर से हुई थी।

इसमें आश्चर्य की बात यह थी कि यूहन्ना और उसके सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के बीच की यह व्यक्तिगत मुलाकात सुनी जा सकती थी, देखी जा सकती थी और स्पर्श की जा सकती थी अर्थात् वास्तविक थी।

उस जीवन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन् जिसे हमने ध्यान से देखा; और हाथों से हुआ। (1 यूहन्ना 1:1)।

नहीं, हमने यूहन्ना की पत्री में जो वृतांत पढ़ा, वह असंबंधित अव्यक्तिगत सिद्धांतों में से एक नहीं है। वह जीवित परमेश्वर के साथ उसकी निजी मुलाकात से प्रवाहित होती है।

''आज ये सब बातें मुझे किस प्रकार मदद करती हैं?'' आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं। यूहन्ना इस प्रश्न का उत्तर तुरंत देता है। ''और ये बातें हम इसलिये लिखते हैं कि हमारा आनंद पूरा हो जाये (1 यूहन्ना 1:4)। ठीक उसी प्रकार जबकि आप अभी अपने हाथों में पकड़कर इस पुस्तक को पढ़ते हैं, एक मित्र आपके लिये यह चाहता है कि जब आप जीवित परमेश्वर से मुलाकात करते हैं, तब आपको भी आनंद की यह भरपूरी प्राप्त हो सके।

यूहन्ना यह व्याख्या करता है:

जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं; इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। और ये बातें हम इसलिये लिखते हैं कि हमारा आनंद पूरा हो जाये (1 यूहन्ना 1:3,4)।

हां, जिस प्रकार किसी अंधेरी रात्रि में प्रकाश आकर्षक होता है, उसी प्रकार परमेश्वर की महिमा का प्रकाश अब तक मनुष्यों को उसकी ओर खींचता या आकर्षित करता है। आज, आपकी इस इच्छा में कि परमेश्वर कैसा है, आप भी मूसा के साथ प्रार्थना कर सकते हैं: ''मुझे तेरी महिमा (तेरा तेज) दिखा दे''।

ध्यान देने के लिये रूकें

1. परमेश्वर की खोज में, क्या आपने विचारपूर्वक बाइबल पढ़ा है?
2. क्या आप बाइबल पढ़ने के दौरान परमेश्वर से यह पूछेंगे कि वह स्वयं को प्रकट करे?

दिये गये सुझाव के अनुसार एक प्रार्थना: ''हे परमेश्वर! यदि आप वह परमेश्वर हैं, जिसने इस विश्व को बनाया है और जो मुझसे प्रेम करता है; तो कृपया आप स्वयं को मुझ पर प्रकट करें और मुझे यह दर्शायें कि यीशु मसीह आपका पुत्र ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा है!''

3. क्या आप यह स्वीकार करते हैं कि यदि आपको सचमुच

परमेश्वर की आराधना करनी है, तो उसे ऐसा होना चाहियेः

मानवीय खोज या शोध के द्वारा परमेश्वर को खोजने के लिये आपकी क्षमता की अपेक्षा अधिक महान या बड़ा; आपकी मानवीय बुद्धि में उसे पूरी तरह समझने के लिये आपकी क्षमता की अपेक्षा अधिक बड़ा या महान्।

मेरे विचार के अनुसार, मैं मानवीय प्रवृत्ति की कुछ सीमा या हद तक समझता हूँ और मैं आप सबको यह बताता हूँ कि प्राचीन काल के सभी नायक, पुरूष थे, और मैं एक पुरूष हूँ; परंतु उसके समान कोई व्यक्ति नहीं हूँः यीशु मसीह एक पुरूष या मनुष्य से कहीं अधिक बढ़कर था।

नेपोलियन

अध्याय - 4

वास्तव में लोगों को क्या विभाजित करता है?

आज के संसार का वर्णन गोलाकार या वृत्ताकार गांव के रूप में किया जाता रहा है। तथापि, चूंकि यह शत्रु या विरोधी पड़ोसियों का निवास स्थान बन चुका है, इसलिये यह गोलाकार या वृतीय ग्राम रहने के लिये एक वृद्धिपूर्ण खतरनाक स्थान बन गया है।

सतह पर अर्थात् ऊपरी तौर पर देखने से यह ऐसा प्रतीत होगा कि मानवजाति को विभाजित करनेवाली समस्याएँ राजनीतिक, आर्थिक, घरेलू और यहूं तक कि औद्योगिक मामलों को विस्तृत रूप से आच्छादित कर लेती हैं। यद्यपि समस्या के ये क्षेत्र बढ़ते हुए या घटते हुए टकड़ों में लोगों के विभाजित होने का कारण बनते हैं; तौभी अपेक्षाकृत एक बड़ा, लेकिन कम परिचित कारण है, जो हमारे संसार में पृथक्करण के लिये पाया जाता है।

पहले, आइये हम लोगों के बीच विभाजन के स्पष्ट कारणो पर संक्षिप्त तौर पर ध्यान दें और तब प्रमुख कारण पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

विभिन्न स्पष्ट विभाजन

राजनीतिकः राजनीतिज्ञ लोग एक - दूसरे का सामना भय और अविश्वास के साथ करते हैं। जब उनका सामना असंगत या बेमेल दृष्टिकोणों से होता है, तब वे यह आशा करते हैं कि उनके राष्ट-की भावी सुरक्षा की गारंटी की जिम्मेदारी शायद सेना की होगी।

इस दौरान, संबंधित नागरिक लोग शांति और परमाणु निशस्त्री करण के पक्ष में अपनी कई आवाज उठाते हैं। स्पष्ट तथा, हममें से जिन लोगों ने टी.वी. पर इनमें से कुछ ''शांति'' प्रदर्शनों को देखा है, ने यह देखा है कि कभी - कभी प्रत्याशी लोग अपने आचरण में इस प्रकार की चाहत का प्रदर्शन करते हैं, जिसके कारण युद्ध होता है।

आर्थिकः प्राकृतिक विनाश जैसे कि सूखा, अकाल, भूखमरी और भूखमरी इत्यादि विशेष तौर पर तृतीय संसार में एक हमेशा बढ़नेवाली समस्या है। ये विपत्तियाँ या विनाश धनी और दरिद्र राष्ट-ों के बीच मौजूद बड़े आर्थिक अंतर के कारण उत्पन्न दुख - दर्द या कष्ट में अतिरिक्त बढ़ोत्तरी कर देते हैं। कई ऐसे लोगों की भलमनसाहत और बलिदान के बावजूद, जो मदद करना चाहते हैं, यह एक दुःखद अवलोकन है कि धनवान व्यक्ति धनी बनता जाता है और गरीब व्यक्ति अधिक गरीब बन जाता है।

घरेलूः यह कोई गुप्त बात नहीं है कि वैवाहिक और पारिवारिक जीवन में टूटते हुए संबंध महामारी के अनुपातों में पहुंच गये हैं। लेटसोले ने अपनी आंखों में आंसुओं के साथ कहाः ''मेरा घर ताड़े दिया गया है''। मैं ने इसका अर्थ यह समझा कि चार दीवारों वाली उसकी अफ्रीकी झोपड़ी को नष्ट कर दिया गया है; परंतु मैं ने शीघ्र ही यह जान लिया कि टूटेपन की यह अभिव्यक्ति नाजुक या कोमल तौर से लेटसोले का मुझे यह बताने का ढ़ंग है कि उसकी पत्नी ने उसे छोड़े दिया है। आज अनेक घर टूटते जा रहे हैं; क्योंकि

स्वार्थपूर्ण जीवनशैलियाँ प्रेमपूर्ण संबंधों को नष्ट करती हैं (तथापि, बाद के अध्याय में हम देखेंगे कि परमेश्वर का प्रेम किसी भी ऐसे दंपत्ति के लिये उपलब्ध है, जो स्थायी संयोजन में अपने विवाह को पक्का या मजबूत ढ़ंग से जोड़ने की इच्छा रखता है)।

औद्योगिकः हमें अपने कार्यक्षेत्र में असंतोष और तनाव के बारे में सुनने की आदत हो चुकी है। सन 1985 के आरंभ में बीसवीं शताब्दी की सबसे कड़वी औद्योगिंक लड़ाई को ब्रिटेन में समाप्त किया गया। यद्यपि हड़ताल और सड़को पर हिंसक झड़पों का अंत हुआ; तौभी शेष बचा आक्रोश और कड़वाहट मजदूर-प्रबंधक संबंधो और स्वयं औद्योगिक समुदाय में खुले आम जारी रहे। यह परिस्थिति मजदूर - प्रबंधक के विभिन्न तनाव के उस परिणाम से कितनी भिन्न है, जो 1904 में इसी तरह की समान औद्योगिक अशांति के बाद वेल्स के कोयला के खदानों में शेष थे। जॉन पेरी ने प्रथम-हाथ अनुभव से मुझे कहानी बतायी।

जब जॉन से मेरी पहली मुलाकात हुई तब वह 91 वर्ष का एक सेवानिवृत्त कोयला खान का कर्मचारी था। वह बिल्कुल अंधा था और खदान की बिमारी नामक फेफ़ड़ों की जटिल तकलीफ से गुज़र रहा था। जब कभी संभव होता था, मेरी पत्नी और मैं उसके दीन - हीन खानवाले घर में जो उत्तरी वेल्स में था, जाते थे। जॉन हार्दिक हंसी और आत्मविभोर करने वाले आनंद के साथ हमें वह सब बारी - बारी से बताया था, जो परमेश्वर ने वेल्स में किया था, जब वह 1904 और 1905 की जागृति के दौरान निश्चय और सामर्थ में

भावुक हो गया था। उस समय खदान में काम करने वालों और उनके रोजगार देने वालों ने जीवित परमेश्वर के साथ मुलाकात की थी। इसके परिणामस्वरूप, उन्होंने सच्ची एकता, परस्पर आपसी भरोसा और आदर पाया था। 1905 और 1985 के बीच कितना बड़ा और अधिक अंतर था।

जॉन ने जब उन दिनों पर ध्यान दिया, तब उसने उत्सुकता पूर्ण आनंद के साथ कहा। उसने उन सैकड़ों परिवारों को याद किया, जो काम-धंधे के लिये बाहर चले गये थे; क्योंकि अनायास ही वहां शराब के लिये कोई मांग नहीं थी। जब वह अपने साथी खान या खदान कर्मचारि चारियों के साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति व प्रशंसा के गीत गाते हुए नीचे खदान के गड्ढ़ो में उतरता था, उसे भी उसने याद किया। जब उसने याद किया, तब वह मुंह दबाकर हसने लगाः ''लोग अब भी मुझे देखने आते हैं और पूछते हैं कि जागृति कहां आयी थी''। अपनी छाती थपथपाते हुए वह उत्तर दिया करता थाः ''मैं उन्हें बताता हूँ कि वह यहां नीचे है और वह ठीक अभी है!''

असली विभाजन

चूंकि ये विभाजन अधिक गहरे हो सकते हैं; इसलिये कोई बात है, जो मनुष्य जाति को अधिक से अधिक आश्चर्यकारी और स्थायी रूप में विभाजित करते हैं। यह एक खतरा है जो अनेक देशों की शांति को वर्तमान में नष्ट करने की छमकी देता है। आप देखते हैं कि लोग परमेश्वर के बारे में अपनी भ्रमपूर्ण समझ के द्वारा बिल्कुल या पूर्णतः ध्रुवीकृत हो गये हैं!

परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिये अपने प्रकाशन में, अपने ईश्वरीय अस्तित्व से संबंधित सच्चाई के साथ कभी समझौता नहीं किया है। यीशु के जन्म से पहले, परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह लोगों की मदद करने के लिये एक महान् ज्योति भेजेगा; ताकि लोग यह जान सकें कि वह सचमुच है। उसने कहाः ''जो लोग अंधेरे में चलते हैं, वे एक बड़ी ज्योति देखेंगे (यशायाह 9:2)। परमेश्वर ने इस ज्योति को पहचानने के लिये विवरण भी प्रदान कियाः क्योंकि एक बालक उत्पन्न होगा.... एक पुत्र दिया जायेगा (यशायाह 9:6)।

यदि परमेश्वर ने सिर्फ यह कहा होता कि एक बालक उत्पन्न होगा, तो इस वक्तव्य के बारे में कुछ भी विशेष तौर पर अथपूर्ण बिल्कुल ही नहीं होता। क्योंकि बच्चे हमेशा जन्म लेते रहते हैं! सचमुच में, इस बात को लिखना महत्वहीन हो जाता कि एक बालक को जन्म लेना था, अगर यह तथ्य इस प्रतिज्ञा से जुड़ा नहीं होता कि एक पुत्र दिया जायेगा। और अब इतिहास में जिसकी एक बार भविष्यद्वाणी कर दी गयी थी; क्योंकि परमेश्वर ने जो कहा था कि होगा, वह हुआ। पृथ्वी पर एक बालक उत्पन्न हुआ; स्वर्ग से एक पुत्र दिया गया था। उस बालक के जन्म के माध्यम से, जो पुत्र के रूप में एक वरदान था, परमेश्वर ने उन लोगों के लिये प्रकाश भेजा, जो अंधकार में भटक रहे थे। यहां तक कि आज भी, वह प्रकाश अंधकार और संदेह को भगाता या दूर करता है जो अन्यथा हमारी दृष्टि से परमेश्वर को छिपा लेता है।

परमेश्वर के अनोखे बालक के जन्म को विशिष्ट दर्शाने और

अन्य सभी से उसे अलग दर्शाने के लिये परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की है कि उसके पुत्र का जन्म एक आश्चर्यकारी चिंह के द्वारा अधीकृत होगाः देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेगी (यशायाह 7:14)।

यह कितना अद्भुत है कि उसके नाम इम्मानुएल का अर्थ हैः ''परमेश्वर हमारे साथ''। इसके अलावा, इस नाम से जो संदेश प्राप्त हुआ था, वह भी अद्भुत था। हम उस शुभ संदेश की सराहना करना शुरू कर सकते हैं; क्योंकि इसे बाइबल में लिखा गया है, यह अन्य सभी धर्म की शिक्षाओं से प्रथक एवं विशिष्ट है। जहां एक ओर झूठे धर्म यह दिखाने या दर्शाने का प्रयास करते हैं कि मनुष्य को परमेश्वर तक कैसे पहुंचना है, वहां दूसरी ओर, बाइबल इस बात का वृतांत है कि परमेश्वर मनुष्य तक नीचे कैसे पहुंचा।

जैसा कि बाइबल में लिखा गया है कि जब परमेश्वर ने ग्रह पृथ्वी पर अपने समुद्री किनारे के शीर्ष को स्थापित किया, तब एक कुंवारी के गर्भ में बालक था। इसके अलावा, उस दिन, जब विश्वमंडल के सृष्टिकर्त्ता ने समय और अंतरिक्ष का एक भाग बनने के खातिर अपना बड़प्पन छोड़कर नम्र होकर झुक गया, यह बात अब इतिहास का एक मामला या विषय बन गयी हैः परमेश्वर का स्वर्गदूत युसुफ़ के एक स्वप्न में प्रकट हुआ और उससे कहाः ''हे युसुफ़, दाऊद के पुत्र (संतान), तु अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि या चिरस्थायी शांति की एक स्थिति उत्पन्न करने के लिये शक्ति और बुद्धि कभी नहीं प्राप्त की है।

इस संसार के लिये चिरस्थायी शांति लाने के लिये शांति के राजकुमार के पास ज्ञान और सामर्थ दोनों है। एक दिन यीशु ग्रह पृथ्वी पर शासन करने के लिये वापस आयेगा। जब वह दिन आरंभ होगा, तब अस्त्र-शस्त्र का प्रत्येक कारखाना बंद हो जायेगा, बिना विस्फोटित हुआ प्रत्येक परमाणु बम निष्क्रिय हो जायेगा और प्रत्येक सीमा रक्षक पहरेदार और सैनिक को अच्छाई के लिये घर भेज दिया जायेगा।

मनुष्य ने पहले ही यह प्रदर्शित कर दिया है कि वह मनुष्य जाति पर शासन करने के लिये कितनी निराशाजनक रूप से अयोग्य एवं असमर्थ है। सब लोगों को के खातिर शांति और न्याय को उस क्षण की प्रतीक्षा करनी चाहिये, जब स्वयं शांति का राजकुमार विश्व साम्राज्य के राजदंड को घुमायेगा! देश - देश के लोग अपनी तलवारें पीटकर हल के फालं और अपने भालों को हंसिया बनायेंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध फिर तलवार नहीं चलायेगी, न लोग भविष्य में विद्या सीखेंगे (यशायाह 2:4)। उस शांतिपूर्ण दिन मेंः पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जायेगी, जैसे समुद्र जल से भर जाता है (हबक्कूक 2:14)। इतिहास के लिये कोई दूसरा निष्कर्ष नहीं है जो अनंतकाल के परमेश्वर को संतुष्ट करेगा।

परंतु यीशु मसीह के निर्देशन के अंतर्गत विश्वव्यापी शांति के उस दिन से पहले, लोगों के बीच गहरा और सच्चा विभाजन स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। के चारों ओर केंद्रित होगी। जो उसके गर्भ मे है, वह पवित्र आत्मा से है'' (मत्ती 1:20)। और इसके बाद, यीशु का जन्म

हुआ था और वह पुरूषत्व की ओर परिपक्व हुआ था। आगे चलकर उसने अपने शक्की विरोधियों को उपस्थिति में यह कहते हुए अपने ईश्वरत्व की पुष्टि कीः मैं और मेरा पिता एक हैं (यूहन्ना 10:30)।

अपोलो 15 (पंद्रह) के अंतरिक्षयात्री जीम इरविन ने लिखा हैः ''मनुष्य के चंद्रमां पर चलने की तुलना में परमेश्वर का पृथ्वी पर चलना अधिक महत्वपूर्ण है।'' निश्चय ही, मनुष्य ने अंतरिक्ष में जो चमत्कार किये हैं और उपलब्धि हासिल की है, इसकी तुलना उस क्षण के चमत्कार या आश्चर्यकर्म से नहीं की जा सकती है, जब परमेश्वर ने अनंतकाल से बाहर समय में कदम रखा।

इस भविष्यद्वाणी के बाद कि एक बालक उत्पन्न होगा और एक पुत्र दिया जायेगा, इस अद्वितीय व्यक्ति से संबंधित एक अधिक विस्तारपूर्ण भविष्यद्वाणी बाद में पूर्ण होती हैः ''उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर अनंतकाल का पिता और शांति का राजकुमार रखा जायेगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी और उसकी शांति का अंत न होगा'' (यशायाह 9:6,7) अगर किसी व्यक्ति को विश्व का एक सफ़ल शासक बनना है, तो वह अवश्य ही ऐसे अद्‌भुत सामर्थ और उद्‌देश्य के मिश्रण के लिये इच्छुक होगा। यहाँ तक कि आज के संसार में, हम ऐसे अगुवों की तलाश करते हैं, जिनके पास न सिर्फ़ उचित बात और कार्य करने का ज्ञान हो; परंतु उसे करने, का सामर्थ या अधिकार भी हो। संभवतः, कुछ अगुवों को यह मालूम होगा कि कौन सा कदम उठाया जाना चाहिये था; परंतु इतिहास में किसी अगुवा ने शाश्वत या चिरस्थायी शांति की

एक स्थिति उत्पन्न करने के लिये शक्ति और बुद्धि कभी नहीं प्राप्त की है।

इस संसार के लिये चिरस्थायी शांति लाने के लिये शांति के राजकुमार के पास ज्ञान और सामर्थ दोनों है। एक दिन यीशु ग्रह पृथ्वी पर शासन करने के लिये वापस आयेगा। जब वह दिन आरंभ होगा, तब आस्त्र - शस्त्र का प्रत्येक कारखाना बंद हो जायेगा, बिना विस्फोटित हुआ प्रत्येक परमाणु बम निष्क्रिय हो जायेगा और प्रत्येक सीमा रक्षक पहरेदार और सैनिक को अच्छाई के लिये घर भेज दिया जायेगा।

मनुष्य ने पहले ही यह प्रदर्शित कर दिया है कि वह मनुष्य जाति पर शासन करने के लिये कितनी निराशाजनक रूप से अयोग्य एवं असमर्थ है। सब लोगों को के खातिर शांति और न्याय को उस क्षण की प्रतीक्षा करनी चाहिये, जब स्वयं शांति का राजकुमार विश्व साम्राज्य के राजदंड को घुमायेगा! देश-देश के लोग अपनी तलवारें पीटकर हल के फालं और अपने भालों को हंसिया बनायेंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध फिर तलवार नहीं चलायेगी, न लोग भविष्य में विद्या सीखेंगे (यशायाह 2:4)। उस शांतिपूर्ण दिन मेंः पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जायेगी, जैसे यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जायेगी, जैसे समुद्र जल से भर जाता है (हबक्कूक 2:14)। इतिहास के लिये कोई दूसरा निष्कर्ष नहीं है जो अनंतकाल के परमेश्वर को संतुष्ट करेगा।

परंतु यीशु मसीह के निर्देशन के अंतर्गत विश्वव्यापी शांति के

उस दिन से पहले, लोगों के बीच गहरा और सच्चा विभाजन स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। और आगामी लड़ाई यीशु मसीह के व्यक्तित्व के चारों ओर केंद्रित होगी।

इसलिये यह अत्याधिक महत्वपूर्ण है कि आपको इस बात के प्रति निश्चित् होना चाहिये कि यीशु कौन है, वह क्यों आया और उसने अपने यहां रहने के दौरान, आपके लिये क्या किया।

उत्पत्ति की पुस्तक और यूहन्ना की पुस्तक समान ढ़ंग से आरंभ होती हैं। हम उत्पत्ति में पढ़ते हैंः आरंभ में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति 1:1)। हम यूहन्ना में पढ़ते हैंः आरंभ में वचन था.... और वचन परमेश्वर था... सबकुछ उसके द्वारा बनाया गया था (यूहन्ना 1:1,3)। परमेश्वर, उत्पत्ति में जिसे () (सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर) कहा गया है, यूहन्ना रचित सुसमाचार में उसके उल्लेख वचन के रूप में किया गया है। () वचन है और उसने स्वयं को मांस से ढ़ंक कर देहधारी बना लिया ताकि अपनी निजी सृष्टि के बीच में चल फिर सके। वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में निवास किया। अगर पूरे खंड को पढ़ें, तो हम यह अद्‌भुत वक्तव्य पाते हैंः

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई ... वह जगत में था और जगत ने उसे नहीं पहचाना। वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण किया, उसने

उन्हें परमेश्वर के संतान होने का अधिकार दिया अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं.... और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डरो किया और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एक लौते की महिमां... (यूहन्ना 1:1-3, 10-12, 14)।

कई शताब्दियों पहले मूसा की तरह और हर समय के लोगों की तरह फिलिप्पुस नामक शिष्य भी यह जानना चाहता था कि परमेश्वर कैसा अर्थात् किस प्रकार का था।

फिलिप्पुस ने जब यीशु से यह कहा, तब उसने एक विशेष आग्रह किया थाः प्रभु, हमें पिता दिखा दे (यूहन्ना 14:8)। बड़े आश्चर्य की बात है कि यीशु ने यह उत्तर दियाः जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है (यूहन्ना 14:9)। अगर यीशु स्वयं परमेश्वर नहीं होता, तो ऐसा आश्चर्यकारी उत्तर या तो यीशु को एक पागल या फिर धोखेबाज बनाता या साबित करता। कोई भी व्यक्ति उसे इन दो बुर नाम या शीर्षक अर्थात् पागल और धोखे बाज देकर उस पर गंभीरता पूर्वक आरोप नहीं लगायेगा। अगर वह परमेश्वर नहीं होता, तो वह सबसे बड़ा ठग या कपटी होता, जिसे इस संसार ने कभी जाना होता। इसलिये हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि जब हम यीशु की देखते हैं, तो हम परमेश्वर को देखते हैं।

इसी बात पर - इस बात की घोषणा पर कि यीशु कौन है - लोग समूहों या मंडली या संस्था में विभक्त होने लगते हैं। एक अर्थ में, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जब यीशु ने यह कहाः मैं और

पिता एक हैं (यूहन्ना 10:30), कुछ लोगों ने उसमें परमेश्वर की अपनी खोज का उत्तर प्राप्त कर लिया। तथापि, दूसरे लोग, जो इस बात की संभावना को ग्रहण करने में असमर्थ थे कि परमेश्वर ने स्वयं को इस प्रकार नम्र या दीन किया, उन्होंने विरोध के साथ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्ति की। यीशु ने कुछ लोगों को आकर्षित किया; परंतु उसने दूसरों को दूर कर दिया; हालांकि उनमें वे लोग थे, जो उसके पीछे चलते थे, कुछ अन्य लोग भी थे, जिन्होंने उसकी मृत्यु का षडयंत्र रचा था।

यहां तक यीशु ने अपने जीवन काल के दौरान, लोगों को विभक्त किया था। उसने स्पष्ट रूप से यह कहा थाः जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरूद्ध है (मत्ती 12:30)।

इसके बावजूद, यह आवश्यक नहीं है कि कोई आरंभिक प्रतिक्रिया एक स्थायी प्रत्युत्तर हो।

आइये, यह मान लें कि एक व्यक्ति ने यीशु का शत्रु होने से इंकार कर दिया और उसका शिष्य या अनुयायी बनने के लिये तैयार हो गया। एक यहूदी रब्बी, शाऊल अपने आरंभिक दिनों में, यीशु के अनुयायियों से अत्याधिक घृणा करता था कि उसने उन्हें सताया और यहां तक कि उनकी मृत्यु तक सताया। परंतु उसने अपने हृदय परिवर्तन के बाद, अपने जीवन के शेष वर्ष यीशु को अपने परमेश्वर और स्वामी के रूप में प्रतिष्ठित करने में बिताये। धीरे - धीरे (वस्तुतः), उसने बड़ी कठिनाई या तकलीफ़ को आनंदपूर्वक सह लिया; क्योंकि वह मसीह का सच्चा भक्त था। कौन सी बात अंतर

दर्शाती है?

जब शाऊल, दमिश्क की यात्रा कर रहा था, तब उसने एक ''बड़ी ज्योति'' देखी। वह ज्योति इतनी अधिक चमकदार थी कि वह अस्थायी रूप से कुछ समय के लिये अंधा हो गया था। शाऊल ने अंतः प्रेरणा से यह जान लिया कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में था।

उसने Yahweh (यहोवा) के लिये ग्रीक शब्द प्रयुक्त करते हुए, यह पूछाः हे प्रभु तू कौन है? परमेश्वर ने उत्तर दियाः मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है या सता रहा है (प्रेरितों के काम 9:5)। उस दिन शाऊल ने सीखा या जाना कि यहोवा और यीशु एक हैं।

इस प्रकाशन ने शाऊल को यीशु को शत्रु होने से पौलुस प्रेरित में बदल दिया। उस दिन से उसने अपना जीवन संपूर्ण रूप से प्रभु यीशु मसीह के लिये समर्पित कर दिया। यद्यपि उसने अपने विश्वास के खातिर बहुत कष्ट सहा; तौभी उसने अपना शेष जीवन इस शुभ संदेश को फैलाने में व्यतीत कर दिया कि परमेश्वर पृथ्वी ग्रह में आया था। पौलुस के जीवन में यीशु मसीह की सच्चाई ने उसे सर्वदा काल के सबसे बड़े एक मिशनरी में रूपांतरित कर दिया। उसके विभिन्न पत्र इस बात के प्रति उसके विभिन्न निश्चय से पूर्ण हैं कि सब कुछ प्रभु यीशु मसीह के द्वारा और उसके लिये सृजा गया है (कुलुस्सियों 1:16)।

जैसा कि हमने यह देखा है कि बाइबल यह घोषित करती है कि नासरत का यीशु, परमेश्वर पुत्र है, वह न केवल परमेश्वर का पुत्र है जैसा कि मॉरमोन्स, जहोवा विटनेसेस और दूसरे कई लोग

विश्वास करते हैं। और न ही वह सिर्फ परमेश्वर का एक भविष्यद्वक्ता है, जैसा कि इस्लाम में शिक्षा दी जाती है। इन समूहों की झूठी शिक्षाओं में यह सम्मिलित करने के प्रयास में अनेक लोग परमेश्वर के द्वारा दिये गये उसके स्वयं के प्रकाशन को नजरअंदाज करना पसंद करते हैं। इसे "Syncretism" (धर्म-मिश्रणवाद) के रूप में जाना जाता है, जिसे मजबूत तथा राजनीतिक तौर पर कमजोर हैं, न ही विभिन्न आदर्शों को मानने या रखने वाले विभिन्न राष्ट- भी हैं। सच्चा विभाजन, जो अस्तित्व में है, वह पृथ्वी पर परमेश्वर के आने के कारण है, और वह उन सभी दूसरे विषयों से जो मानवता को विभाजित करती हैं, अपेक्षाकृत बहुत अधिक मौलिक है।

यह परिभाषित वक्तव्य, सच्चाईयों की एक अतिशयोक्तिपूर्ण नाटक प्रस्तुति नहीं है; क्योंकि प्रभु यीशु ने स्वयं कहा हैः यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकलकर आया हूं; मैं आप से (स्वयं ही) नहीं आया, परंतु उसी ने मुझे भेजा है। तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिये कि मेरा वचन सुन नहीं सकते। तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरंभ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहींः जब वह झूठ बोलता है, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है (यूहन्ना 8:42-44)।

क्या यह बात सुनने में आश्चर्यजनक लगती है कि जिस प्रकार विश्वासियों का एक परिवार है, जिसका पिता, परमेश्वर है, उसी

प्रकार अविश्वासी लोगों का भी एक परिवार है, जिसका पिता, शैतान है? प्रत्येक जन परमेश्वर का संतान नहीं है। आपके और मेरे लिये परमेश्वर के परिवार में होना अथवा शैतान के परिवार में होना, ये अनंत विकल्प हैं।

अगर इस बात पर ध्यान न दें कि परमेश्व के बारे में आपका विश्वास कितना ''नियमित'' हो सकता है, आप फिर भी ''नियमित तौर पर'' ग़लत हो सकते हैं। ''बेब्सहर के शब्दकोष'' मे ''विभिन्न धार्मिक मतों को मिलाने अर्थात् मिश्रित करने का प्रयास'' रूप में परिभाषित किया गया है।

उदाहरणार्थ हिंदू लोग ''यीशु'' को अपने तख्तों पर कई अन्य ''ईश्वरों'' के साथ सामान्य तौर पर रखकर उनमें से ईश्वर के रूप में पहचानते या मानते हैं। हमें यह अच्छी तरह याद है कि एलिय्याह नबी के सच्चे और जीवित परमेश्वर ने बाल देवता की अनेक मूर्तियों का सामना किया था और उसने उन्हें अपने सामने उनके मुख के बल चित्त पटक दिया था। ठीक इसी तरह, मनुष्य के द्वारा बनाये गये और मनुष्य के द्वारा उत्पन्न हर ईश्वर को प्रभु यीशु मसीह के सामने झुकना या गिरना चाहिये; क्योंकि वह परमेश्वर पुत्र है, वह अनंत रूप से पिता और पवित्र आत्मा के साथ एक है।

हम जब एक बार यह समझते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर है, तब हमें कुंवारी द्वारा यीशु के जन्म में, उसके अनेक आश्चर्य कर्मों में, उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान में, उसके स्वर्गारोहण में और शीघ्र ही सामर्थ और महिमा के साथ पृथ्वी में उसकी वापसी में

विश्वास करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये। चूंकि यीशु मसीह ही ''एकमात्र परमेश्वर'' है, वह विश्व के नियमों या व्यवस्थाओं और जीवन-दायक प्रणालियों सहित उसका सृष्टिकर्ता है, वह उन सभी कानून व्यवस्था से ऊपर है, जिन्हें उसने अपने प्रेम और छुटकारे के अपने निजी उद्देश्यों के खातिर स्वयं बनाया है।

नासरत के यीशु के व्यक्तित्व के चारों ओर विश्व विभक्त है। एक - दूसरे से अलग हुए ये समूह पृथक हैं और न तो ये ''धनी लोगों'' एवं ''दरिद्र लोगों'' से बने हैं और न ही राजनीतिक तौर पर, यह कहना एक झूठ है कि अगर कोई व्यक्ति नियमित है, तो इस बात से कुछ फ़र्क नहीं पड़ता है कि वह व्यक्ति क्या विश्वास करता है। ठीक इसी तरह, आप नियमित या सच्चाई के साथ यह विश्वास करते हुए कि यह औषधि या दवा है, विष या जहर खा सकते हैं; परंतु फिर भी आप मर जायेंगे!

सचमुच, मानवजाति दो परिवारों में विभक्त है। प्रत्येक व्यक्ति इन दो परिवारों में से किसी एक का सदस्य हैः परमेश्वर का परिवार या शैतान का परिवार। यह अत्याधिक महत्वपूर्ण है कि आप यह जानें कि आप किसा परिवार के सदस्य हैं। और परमेश्वर के परिवार का एक सदस्य बनने में प्रथम कदम यह समझना है कि परमेश्वर कौन है और उसने अपने पुत्र यीशु को हमें देने में क्या किया है।

''यीशु'' नाम का अर्थ हैः ''यहोवा उद्धार है''। अतः स्वर्गदूत ने युसुफ़ से कहाः... तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह

अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा (मत्ती 1:21)।

रूकें और ध्यान दें

1. जब तक आप सच्चे और नियमित हैं, तब तक क्या सचमुच इस बात से कोई फ़र्क पड़ता है कि आप परमेश्वर के बारे में क्या विश्वास करते हैं?
2. लोगों के बीच विभाजन का अंततः कारण क्या है? क्या यह राजनीतिक, आर्थिक, घरेलू या औद्योगिक है? अथवा यह आत्मिक और अनंत है?
3. प्रभु यीशु के द्वारा बताये गये दो परिवारों में से, आप कौन से परिवार का सदस्य बनना चाहते हैं?

परमेश्वर के उद्धार का ज्ञान, शायद किसी अन्य बात की अपेक्षा, नैतिक बुराई के एक गहरे अर्थ (जानकारी) में रहता है।

डॉ. आर्नाल्ड (हेडमास्टर रग्बी पब्लिक स्कूल)

अध्याय - 5

यथार्थ या सच्ची समस्या क्या है?

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में, कई लोग इस संसार के भविष्य के बारे में अत्याधिक दूर दर्शी थे। उन्होंने यह विश्वास किया कि यह शांति और संपन्नता के सुनहरे युग में लगभग प्रवेश करने का समय है। कई लोगों ने यह सोचा कि इस नये युग की आशीष प्रत्येक देश में दिखाई देगी, यहां तक कि उन देशों में भी, जो निराशा, बीमारी और अत्याधिक बीमारी के अवर्णनीय कष्ट से पीड़ित हैं। परंतु 1914 में समस्त यूरोप में युद्ध के सायरन बज उठे अर्थात् गूंज उठे।

और आज, जबकि इक्कीसवीं शताब्दी प्रवेश करती है अर्थात् आरंभ होती है, तो अद्‌भुत वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद, जिन्हें हमने देखा है, लोग अब एक चमकीले या चमकदार कल के बारे में कोई भी बात करते हुए दिखाई नहीं देते हैं। इसके बजाय, लाखों लोग अणु-शक्ति के द्वारा विश्व को भस्म या ध्वस्त के प्रति चिंतित हैं। अंतर्राष्ट-ीय आतंकवाद और राष्ट-ीय समस्याओं दोनों की जटिलता के कारण अवलोकन करने वाले अनेक सोचने वाले चिंतित लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि हम मानव इतिहास के सबसे अधिक संकटमय और शक्तिशाली या प्रबल खतरनाक वर्षो में जी रहे हैं। हमने आज के विश्व में लोगों के ध्रुवीकरण पर पहले ही विचार किया है या ध्यान दिया है। किसी सभ्य समाज का महत्वपूर्ण सूत्र आक्रमण के अंतर्गत है। क्या ग़लत हुआ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के एक प्रयास में, विश्व के महत्वपूर्ण

अगुवागणों ने मुलाकात और वार्तालाप की। जब उन्होंने विषयों या समस्याओं अर्थात् मामलों को प्रकट या प्रस्तुत किया और एक-दूसरे के सिद्धांतो और प्रस्तावों को सुना, तब विश्व एक संकट से दूसरे संकट की ओर जाता या चलता हुआ प्रतीत हुआ। अगर व्यय की गयी ऊर्जा और पैसे की मात्रा पर ध्यान न दें, तो विश्व जिस दिशा की ओर आगे बढ़ रहा है, उसे कोई भी व्यक्ति बदलने में सक्षम दिखाई नहीं देता है। विशिष्ट राजकार्य में दक्ष और राजनीतिज्ञ, निपुर्ण वैज्ञानिक और ज्ञानी, चतुर व्यापारी और विश्व के बैंकर (साहूकार), प्रतिष्ठित चिकित्सक और समाजशास्त्री सभी अपने विशिष्ट कैशल्य का योगदान करते हैं। इसके बावजूद, अब तक कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है।

हम पाते हैं कि इन बुद्धिमान पुरूषों की ओर से बहुत कम इस बात का संकेत प्राप्त हुआ है कि परमेश्वर के द्वारा घोषित मनुष्य की सच्ची समस्या क्या है इससे पहले कि हल या समाधान प्राप्त किया जा सके, मौलिक समस्या की पहचान होनी चाहिये। केवल परमेश्वर ही हमें हमारी सच्ची या यथार्थ समस्या से अवगत करा सकता है। और ठीक इसी बात या बिंदु पर हम प्रायः उन लोगों के बीच के अंतर को पहचानते हैं, जो सचमुच में परमेश्वर की सच्ची तलाश करते हैं और जो सिर्फ एक धार्मिक जिज्ञासा रखते हैं।

परमेश्वर ने कहाः हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनायें (उत्पत्ति 1:26)। आप यह पूछ सकते हैं ''मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में किस तरह बनाया गया था?''

निश्चय ही, शारीरिक समानता में नहीं बनाया गया था; क्योंकि प्रभु यीशु ने कहाः परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24)। हमारी तरह परमेश्वर के पास भुजाएँ या बाहें, पैर और आंखें नहीं हैं। और यह परमेश्वर अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है (1 तीमुथियुस 6:16)। किसी अदृश्य मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता है। इसलिये लोग जिन शरीरों में रहते हैं उनकी अपेक्षा कुझ अधिक मूल्यवान चीज़ होनी चाहिये! यह एक सच्चा व्यक्तित्व है, जो शरीर त्यागने के बाद जीवित रहता है - व्यक्ति या व्यक्तित्व, जिसे परमेश्वर की समानता या सदृश्यता के बाद, श्रेय दिया जाता है।

बाइबल यह प्रकट करती है अर्थात् बताती है कि परमेश्वर के पास एक दिमाग है, भावनाएँ हैं और एक इच्छा है। इन तीन पहलुओं में मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। चूंकि वह परमेश्वर है; इसलिये उसकी बुद्धि, भावनाएँ और इच्छाशक्ति अनंत हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये, तो ये बिना सीमा की अर्थात् असीमित हैं। ऐसी उसकी प्रवृत्ति है। तथापि, विराधाभास में अर्थात् इसके विपरीत मनुष्य नाशमान अर्थात् नश्वर है। यहां तक कि विद्वान आइंसटाइन के पास भी एक नश्वर दिमाग था। कोई भी व्यक्ति सबकुछ नहीं जान सकत्ता है, कोई भी व्यक्ति असीमित प्रेम नहीं कर सकता है और निश्चय ही अर्थात् निश्चित् रूप से विश्व में मनुष्य की इच्छा सार्वभौम नहीं है। न तो वह अपने भाग्य का मालिक है और न ही अपनी तकदीर (गंतव्य स्थल) का कप्तान है।

दूसरी ओर हम यह पाते हैं कि मनुष्य का व्यक्तित्व एक आत्मिक क्षमता रखता है; ताकि वह परमेश्वर को जान सके और उसके साथ संगति कर सके। यही कारण है कि बाइबल इस बात को स्पष्ट करती है कि मनुष्य आत्मा और प्राण और शरीर या देह है (1 थिस्सलुनिकियों 5:23)।

मनुष्य के पास आत्मा के माध्यम से उसके सृष्टिकर्त्ता से घनिष्ट संबंध स्थापित करने के लिये परमेश्वर - प्रदत्त क्षमता है। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके शरीर के माध्यम से भौतिक अर्थात् सांसारिक दुनिया से संबंधित होता है। (यहां मनुष्य के व्यक्तित्व का तात्पर्य प्राण, या उसके सोचने की क्षमता, चयन करने और प्रेम करने की क्षमता से है)।

परंतु कुछ ग़लत हो गया था। इसके परिणामस्वरूप कई लोगों के लिये क्रम या व्यवस्था विपरीत होती हैः प्राथमिकता के अनुसार शरीर का स्थान प्रथम; प्राण की प्राथमिकता का स्थान द्वितीय; और आत्मा की प्राथमिकता का स्थान तृतीय। दुर्भाग्यवश, वर्तमान संसार में, कई लोगों की शारीरिक, भोतिक, और यौन - संबंधी रूचियाँ उनके विचार, विभिन्न निर्णय और उनके आकर्षण व प्रेम पर हावी हो जाती हैं, जबकि उनकी आत्मिक क्षमता सुप्त, निष्क्रिय और मृत पड़ी रहती है। इसलिये, इसके बजाय कि परमेश्वर को इस बात की अनुमति दी जाये कि वह अपने द्वारा सृजे गये मनुष्य के आत्मिक जीवन को पुनर्स्थापित करे और नियंत्रित करे, उसे अर्थात् परमेश्वर को इस सीमा तक अधीन और निष्कासित कर दिया गया कि भटके

हुए या पथभ्रष्ट लोगों और उनके सृष्टिकर्ता के बीच कोई संचार न हो सके।

जिस व्यक्ति के लिये परमेश्वर दूर है और वास्तविक नहीं है, वह व्यक्ति वास्तव में आत्मिक रूप से मृत है। दूसरी ओर हम यह देखते हैं कि जो व्यक्ति परमेश्वर के साथ संगति का आनंद उठाता है, वह सचमुच में और पूर्ण रूप से जीवित है।

परंतु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हमसे प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)। - (इफ़िसियों 2:4,5)।

इस संसार की सभी समस्याओं का आरंभ मनुष्य की इच्छा में हुआ। परमेश्वर ने लोगों की सृष्टि गूंगी पुतलियों (Puppets) बनने के लिये नहीं की है, जो किसी दूसरे व्यक्ति की इच्छा के बिना चलने में सक्षम नहीं होती हैं। पुतली के द्वारा की गयी प्रत्येक गतिविधि या प्रक्रिया को पुतलीकार (Puppeteer) धागे या सूत्र को खींचने के द्वारा नियंत्रित करता है। जबकि दूसरी ओर हम यह पाते हैं कि परमेश्वर ने हमें अपना मनपसंद या मन चाहा व्यवहार करने के लिये एक स्वतंत्र इच्छा शक्ति प्रदान की है। परंतु उस इच्छा के वरदान के साथ हमभी विभिन्न निर्णय लेने के लिये नैतिक रूप से जिम्मेदार बन जाते हैं। (आप कई मनोचिकित्सकों से बड़ी मुश्किल से यह बात सुनते हैं, जो बाइबल की सच्चाई को नज़र अंदाज करते हैं)।

मनुष्य की सृष्टि के बाद, मनुष्य जाति में प्रथम क्रम की एक

दुःखद घटना हुई थी। अदन की वाटिका में, वृक्षों के बीच, दो वृक्ष विशेष थे। एक जीवन का वृक्ष कहलाता था; और दूसरा, भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष (उत्पत्ति 2:9)। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बताया था कि वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के अलावा सभी वृक्ष में से फल खा सकते हैं। परमेश्वर ने उन्हें आज्ञाकारिता और उदंडता के बीच चयन करने की आजादी देने के द्वारा यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है कि उसने मनुष्य को - पुरूष और नारी को - स्वतंत्र इच्छाशक्ति के साथ बनायॉ था। अब यह उन पर निर्भर था कि वे परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहते थे अथवा नहीं। यह उनका निजी व्यक्तिगत निर्णय था।

दुर्भाग्यवश, आदम और हव्वा ने उस सर्वोत्तम बात के विरूद्ध विद्रोह किया जिसे परमेश्वर ने मनुष्य जाति के लिये उपलब्ध किया था। परमेश्वर समय से पहले यह जानता था कि उदंड या अनाज्ञाकारी होने के लिये उनका निर्णय उसे अवर्णनीय कष्ट देगा और इससे समस्त मनुष्य जाति के लिये पीड़ा आयेगी। परंतु अपनी सृष्टि के लिये उसके प्रेम और उस महिमा को जानते हुए जो बाद में उन लोगों के लिये उपलब्ध की जायेगी, जो सही चयन करेंगे, उसने प्रत्येक व्यक्ति को चयन करने की आजादी प्रदान की है।

शैतान, जो झूठा है, ने आदय और हव्वा को ग़लत चयन करने की परीक्षा में डालने के लिये अपने प्रबल प्रभाव का उपयोग किया था। उसने यह सुझाव देने के द्वारा प्रतिबंधित फल को मनमोहक बना दिया कि अगर वे उसे खायेंगे, तो वे परमेश्वर के

समान हो जायेंगे। (शैतान अभी भी यह सुझाव देता है कि मनुष्य, स्वयं ही अपना ईश्वर बन सकता है। परंतु जिस तरह परमेश्वर, परमेश्वर है और कभी परमेश्वर के कम नहीं हो सकता है, उसी प्रकार मनुष्य, मनुष्य है और वह कभी मनुष्य से अधिक नहीं हो सकता है)। इसके बावजूद, शैतान ने आदम और हव्वा को मोहित किया कि वे परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध अपनी इच्छा को प्रबल कर सकें। इसके परिणामस्वरूप, लोगों की प्रत्येक नयी पीढ़ी सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के साथ उनकी महत्वपूर्ण, व्यक्तिगत और घनिष्ट संगति से पृथक हो गयी है; क्योंकि सभी आदम के वंशज हैं। और जिस प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आयी, और इसी प्रकार से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गयी, इसलिये कि सबने पाप किया (रोमियों 5:12)।

संसार ने प्रत्येक कब्रिस्तान, हर अस्पताल, हर सेना और हर कैदी को इसलिये जाना; क्योंकि मनुष्य ने सृष्टि के आरंभ में ग़लत चयन किया था। मनुष्य जाति में मौजूद यह भयावह और घालक बुराई, जिसे पाप कहते हैं, अंदर से उत्पन्न एक बीमारी है, जो संपूर्ण मानव जाति को प्रभावित करती है। पाप ने न सिर्फ़ परमेश्वर के साथ मनुष्य की सच्ची संगति को कठोर बनाकर हानि पहचाया है, बल्कि इसने मनुष्य को उसके साथी मनुष्य से भी पृथक कर दिया है।

परंतु आप और मैं जन्म से ही पापी नहीं है; बल्कि हम कर्म से भी पापी हैं।

जहां तक हमारे जन्म का सवाल अर्थात संबंध है, भजन

संहिता के लेखक ने हम सब के लिये यह कहा है: देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा'' (भजनसंहिता 51:5)। परंतु पाप की वारिसाना दशा पाप की गति विधियों के लिये कोई बहाना प्रदान नहीं करती है, जिसे हम सबने किया है। बाइबल भी यह बताती है कि हम पहिले इस संसार की रीति पर और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इनमें हम भी सबके सब पहले अपने शरीर को लालसाओं में दिन बिताते थे और शरीर और मन की मनसाओं को पूर्ण करते थे तथा और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की संतान थे (इफ़िसियों 2:2,3)।

हां, हम परमेश्वर के सामने अपराधी हैं और इसका कारण हमारी उदंडता या अनाज्ञाकारिता है। किसी भी दूसरे व्यक्ति को दोष नहीं दिया जा सकता है - न तो पत्नी को, न मित्र को और न ही माता - पिता को। यहां तक कि हम जिस पृष्ठभूमि से और वातावरण से आते हैं, जिसमें हम रहते हैं, उन पर भी दोष नहीं लगाया जा सकता है। आप उसी प्रकार अपने निजी पाप के लिये जिम्मेदार हैं, जिस प्रकार मैं अपने पाप के लिये जिम्मेदार हूँ।

इसका वास्तविक कारण हम यह देखते हैं कि पाप ही हम सबके लिये सामान्य मुख्य अर्थ में लोगों के बीच इतनी अधिक शत्रुता और फूट का कारण है। पाप, किसी मास्तिक को एक विश्वासी के प्रति और किसी अरबी अर्थात् अरब निवासी को एक

यहूदी से जोड़तो है। पाप, तीसरे विश्व के लोगों को औद्योगिक संसार में लोगों से प्रति कृतज्ञ बांथता है। पाप किसी मार्क्सवादी या कम्युनिस्ट को एक पूंजीपति से, किसी पुलिस को एक अपराधी से और किसी फेमिनिस्ट को एक पुरूष Chauvinist से जोड़ता है। चाहे लोग वेश्याएँ अथवा उपदेशक हों, चाहे वे विलासता की उच्चतम दशा में रहते हों अथवा दरिद्रता की गहराई में रहते हो; चाहे वे शिक्षित हों या अशिक्षित अथवा निरक्षर हो- सबने पाप किया है और सभी परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:23)। इसके अलावा हम यह भी देखते हैं कि लोगों के बीच मौजूद सारे तनाव का मूल कारण पाप ही है।

परंतु यीशु पापी की आशा है! उसने कहाः मैं धर्मी को बुलाने के लिये नहीं, परंतु पश्चाताप के लिये पापियों को बुलाने आया हूँ (मत्ती 9:13)। चाहे पास से हो अथवा बड़ी दूर से हो, आपने और मैं ने परमेश्वर की पवित्रता के चिंह या संकेत को गंवा दिया है। पाप शब्द का सामान्य अर्थ ''चिंह या निशान से चूक जाना'' है। हम उसे सुधारने के लिये अपने आप स्वयं कुछ नहीं कर सकते हैं। यह सोचना व्यर्थ की एक आशा है कि हम अच्छे बनने या अच्छे कार्य करने के द्वारा परमेश्वर के साथ शांति या मेल प्राप्त कर सकते हैं। वह हैं। वह हैः और ऐसा न हो कि कोई कर्मो के कारण घमंड करे (इफ़िसियों 2:9)। इसी कारण यीशु ने उद्धार के बारे में वार्तालाप करने के दौरान यह कहाः मैं बलिदान नहीं; परंतु दया चाहता हूँ (मत्ती 9:13)।

परमेश्वर की दया की एक सच्ची समझ, उन लोगों के लिये अभिभूत करने वाली राहत लाती है, जो अपने व्यक्तिगत पाप की गंभीरता से जकड़े हुए हैं।

चूंकि परमेश्वर दया का (में) धनी है (इफ़िसियों 2:4) इसलिये वह सिर्फ़ यह कहता है कि आप उद्धार को उसके मुफ़्त वरदान के रूप में ग्रहण करें। क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है (रफ़िसियों 2:8)। यीशु ने स्वयं ही किसी भी पापी के लिये सर्वोच्च बलिदान दिया है; ताकि उस पापी को परमेश्वर को पवित्र उपस्थिति में प्रवेश करने के लिये द्वार खुल जाये।

दया के परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, अब बहुतायत का जीवन मुफ़्त में उपलब्ध कराया है। परंतु उसने आपको एक इच्छाशक्ति प्रदान की है, इसलिये वह उस जीवन का भागीदार बनने के लिये आप पर कोई जबरदस्ती नहीं करेगा। आप परमेश्वर के मुफ़्त वरदान के प्रस्ताव का कैसा प्रत्युत्तर देते हैं, यह बड़ी अनिवार्यता का एक विषय है। परमेश्वर कहता हैः अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैं ने तेरी सहायता कीः देखो, अभी वह उद्धार का दिन है (2 कुरिंथियों 6:2)। अब आपके द्वारा स्वयं ही अपने जीवन को मजबूत बनाने के लिये आपने जो प्रयास किया है, उसके बाद भविष्य में कुछ नहीं है। याद रखें कि यीशु ने कहाः मैं धर्मी को बुलाने नहीं; परंतु पापियों को बुलाने आया हूँ (मत्ती 9:13)।

आपकी सच्ची समस्या के बारे में सच्चाई यह है कि पाप की

समस्या, उसके समाधान की ओर पहला कदम है। आज यीशु की बाहें आपको ग्रहण करने के लिये खुली हुई हैं, चाहे आप कहीं भी हों और कैसी भी दशा या स्थिति में क्यों न हों। वह आप से सिर्फ़ यह सुनना चाहता हैः हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर (लूका 18:13)।

ध्यान देने के लिये रूकें

1. क्या आप यह देखते हैं कि आज समाज के साथ कुछ दुःखद ढ़ंग से ग़लत है?
2. जब आप बीमार हैं, तब क्या यह महत्वपूर्ण है कि आपका डॉक्टर आपको दवाई देने से पहले आपकी बीमारी को सही ढ़ंग से पहचाने?
3. बाइबल आपकी समस्या को कैसे पहचानती है? अपनी समस्या के लिये इलाज का पर्चा लिखें (बतायें)?

अब शमौन नामक एक व्यक्ति था। जो नगर में पहले जादू दिखाया करता था; और सामरिया के लोगों को अचंभित किया करता था, वह एक महान् व्यक्ति होने का दावा करता था; और वे सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक यह कहते हुए उसकी ओर ध्यान देते थे कि यह व्यक्ति, परमेश्वर की महान् शक्ति है।

डॉ. लूक

अध्याय - 6

लोग इतने अधिक पथभ्रष्ट क्यों हैं?

एक बालक के रूप में, मैं ब्रिटिश आइसल्स के एक भाग में रहता था, जिसके ऊपर से शत्रु के बमवर्षक विमान लगातार उड़ते थे। वह युद्ध का समय था और ये बमवर्तक विमान अपने निशाने के क्षेत्रों के मार्ग में औद्योगिक मिडलैंड्स और नॉदर्न (उत्तरी) इंग्लैंड में उड़ रहे थे। मेरे मित्रों और मैं ने शत्रु के बमवर्षक विमानों की गड़गड़ाहट भरी आवाज को हमारे अपने निजी लड़ाकू विमानों के गरजने की आवाज के बीच अंतर करना सीख लिया था। जब हमने आकाश में शत्रु के एक सर्चलाइट वाले चमकते विमान को देखा, तब हम अत्याधिक उत्सुक और उत्तेजित हो गये। हम भूमि पर एक एक () बंइको या हवा में () को जानते थे, जो कभी - कभी किसी बमवर्षक विमान के द्वारा गिरा दिये जाते थे।

किसी शत्रु विमान को मार गिराने के साथ ही साथ, वहां हमेशा इस बात की संभावना रहती थी कि कुछ () पैराशूट से सुरक्षित उत्तरेंगे। सुरक्षित बचे हुए लोगों के लिये मार्ग ढूंढ़ना और बचना और बचकर बम का दूसरा कोटा लाते हुए वापस आना इत्यादि को कठिन बनाने के लिये अधिकारी लोग सड़क के चौराहों पर लगे संकेत स्तंभों को हटा देते थे। इस प्रकार सड़कों पर कोई संकेत स्तंभ नहीं होते थे।

इसके बावजूद, हम लड़कों को यह मालूम था कि शहर के बाहर वुटेन वुड्स में अभी भी एक छोटा संकेत स्तंभ एक अत्याधिक

महत्वहीन चौराहे पर बचा हुआ था। जब हम उस संकेत स्तंभ को घुमाकर, गलत दिशा की ओर संकेतक या सूचक के रूप में छोड़ देते थे, तब हम सचमुच यह सोचते थे कि हम युद्ध के प्रयास में मदद कर रहे हैं। हम स्थानीय अधिकारियों को पसंद करते थे और हमारी तरफ़ आये हुए बिनाबुलाये मेहमानों को भ्रम में डालना चाहते थे।

वास्तव में, अगर ऐसा कोई व्यक्ति अपने हाथों में एक विश्वसनीय नक्शा पकड़ ले, तो सच्चाई यह है कि वहां के कोई संकेत स्तंभ से कोई समस्या नहीं होगी। यहां तक कि हम लड़कों के द्वारा संकतेस्तंभ को उल्टी दिशा में घुमा देने वाली युक्ति भी शत्रु को भ्रमित नहीं कर सकती थी, यदि उसने अपने नक्शे की जानकारी को नज़र अंदाज नहीं करने का निर्णय लिया हो।

परमेश्वर हमें उन लोगों के बारे में बताता है, जो परमेश्वर की खोज में किसी झूठे संकेत स्तंभ के द्वारा पथभ्रष्ट हो जायेंगे।

किसी ऐसे व्यक्ति के साथ आरंभ करने के लिये, जो सच्चाई या तथ्य को नज़र अंदाज़ करने का चयन करता है कि इस अद्‌भुत विश्व का अस्तित्व सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की ओर संकेत करता है - सचमुच भ्रम में पड़ जायेगा।

वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गये..... और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचाननान चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें.... (रोमियों 1:22,28)।

और वह निकम्मा मन स्वयं सृष्टिकर्त्ता के बजाय सृष्टि के कार्यों की आराधना करेगा। दूसरी ओर स्पष्ट रूप से सोचने या विचार

करने वाला मनुष्य, अपने सृष्टिकर्त्ता की आराधना करेगा। इस प्रकार, यदि आप यह विश्वास करने से इंकार करते हैं कि परमेश्वर ने विश्व की सृष्टि की, तो परमेश्वर आपको आपके भ्रष्ट मन पर छोड़ देगा और आपको कुछ अव्यवस्थित तीव्र धारणा पर विश्वास करने के लिये छोड़ देगा, जो इस बात से संबंधित हैं कि विश्व, अस्तित्व में कैसे आया। एक निकम्मा मन, एक भ्रमित अर्थात् भरमाया हुआ या भ्रम में पड़ा हुआ मन होता है।

परमेश्वर यह भी चेतावनी देता है कि जो लोग परमेश्वर के वचन को सत्य के रूप में ग्रहण करने से इंकार करते हैं, वे शीघ्र ही धोखा देने वाले मार्ग की ओर जायेंगे, जो विनाश की ओर ले जायेगा। सचमुच, ऐसा कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन के सत्य का सकारात्मक रूप से और सक्रिय रूप से चयन नहीं करता है, वह खुद को अत्याधिक खतरनाक स्थिति में रखता है।

नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया, जिससे उनका उद्धार होता। और इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा; ताकि वे झूठ की प्रतीति करें (2 थिस्सलुनिकियों 2:10,11)।

एक बार किसी व्यक्ति ने सत्य को नज़र अंदाज कर दिया या ठुकरा दिया; वह शीघ्र ही जान जायेगा कि झूठ कौन सा है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि एक बार जब धुंध से भरे लंदन में, मैं घर पहुंचने के लिये रास्ता ढूंढ़ने का प्रयास कर रहा था। सड़क के किनारे अपना रास्ता पाने या ढूंढ़ने के लिये मुझे हरसंभव मिलने

वाली हर मदद की आवश्यक्ता थी। यहां तक कि मेरे फ्लैश लाइट का प्रकाश तब भी दिखाई नहीं दे रहा था, जब उसे मैं अपनी बाहों की लंबाई तक पकड़े हुए था। परमेश्वर हमें यह बताता है कि कोई दृढ़ या कठोर भ्रम, जो सचमुच किसी मानसिक धुंध के समान है, पृथ्वी ग्रह पर मौजूद वस्तुओं की इस वर्तमान श्रेणी के अंत तक साथ रहेगा; क्योंकि लोग परमेश्वर के वचन के सत्य को ठुकरा देंगे। यीशु के चेलों ने उससे पूछाः आपके आगमन का चिंह क्या होगा और संसार के अंत का चिंह क्या होगा? उसने अन्य चीजों या बातों के बीच उत्तर दियाः

क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिंह और अद्‌भुत काम दिखायेंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें (मत्ती 24:24)।

यहां तक कि अभी भी आप शायद स्वयं से यह कहते हैंः ''अच्छी बात है, मुझे कोई धोखा नहीं हुआ हैं''। यहां तक कि आप इस सच्चाई में घमंड कर सकते हैं कि आप झूठे मसीह को आसानी से पहचान सकते हैं अथवा आप किसी झूठे नबी को आसानी से पहचान सकते हैं। लेकिन आप एक क्षण के लिये रूप जायें और अपने निष्कर्ष के बारे में सोचें। यदि आपने सत्य से प्रेम नहीं किया है, इस कारण परमेश्वर ने आपके मन को धोखा देने के खातिर शैतान को अनुमति दी है, तो आपको निश्चय ही इस बात की जानकारी नहीं होगी। यदि आप वास्तव में यह जानते हैं कि किस्री झूठे भविष्यद्वक्ता ने आपको धोखा दिया है, तो आप सचमुच में बिल्कुल धोखा नहीं

खायेंगे। सभी प्रकार के भ्रम मन में होने चाहिये और जो कोई व्यक्ति बौद्धिक तौर पर घमंडी है, वह इस बात को कठिनाई से ग्रहण करेगा कि उसके मन को झूठ पर विश्वास करने के लिये चालाकी या युक्ति से धोखा दिया गया है।

यथार्थ में दो प्रकार के लोग होते हैं, जो बाइबल को पढ़ने के दौरान सत्य का विरोध करेंगे। जो कि संसार के द्वारा सिखाये गये धोखे के प्रति खुद को खुला या उपलब्ध रखना है। एक प्रकार का व्यक्ति वह है जो बौद्धिक रूप से घमंडा है और आत्म संतुष्ट दिखाई देता है। दूसरा व्यक्ति वह हैं, जो नैतिक रूप से उदंड या आज्ञा नहीं मानने वाला है। परंतु प्रत्येक उस व्यक्ति के लिये, जो सचमुच में परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने की इच्छा रखता है, प्रभु यीशु के पास उसके लिये एक विशेष प्रतिज्ञा हैः ''यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जायेगा कि वह परमेश्वर की ओर से है....'' (यूहन्ना 7:17)।

यदि आप सचमुच परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहते हैं, तो आप इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर आपको बाइबल के माध्यम से शिक्षा देगा कि क्या विश्वास करना चाहिये और क्या विश्वास नहीं करना चाहिये, तथा कैसा व्यवहार करना चाहिये और कैसा व्यवहार नहीं करना चाहिये।

तथापि, हमें उन स्वयं नियुक्त हुए धार्मिक शिक्षकों के वचन को ठुकराने के प्रति सावधान भी रहना चाहिये, जो परमेश्वर के सच्चे वचन की शिक्षा नहीं देते हैं; परंतु इसके विपरीत वे आपको इस बात

के लिये ढूंढ़ते रहते हैं कि आप ग़लत बातों पर विश्वास करें और ग़लत कार्य करें।

इस पीढ़ी में, शैतान के कुछ ऐसे एजेंट लोग, जो लोगों को ग़लत दिशा दिखाते हैं, बनावटी या नकली मसीही समूहों के सदस्य हैं। कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसने पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर से संबंधित सत्य को अस्वीकार करने का चयन किया है - वह झूठा भविष्यद्वक्ता है। (यहां पिता परमेश्वर पुत्र परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर एक में तीन और तीन में एक हैं)। यद्यपि ऐसे लोग बाइबल से कुछ पृथक पदों को उद्धरित करते हैं, तौभी वे पदों के अंश या खंड को संदर्भ से पूरी तरह विच्छेदित कर देते हैं और इस प्रकार वे बाइबल रहित एक धर्म को प्रोत्साहित करते हैं। आप यह पूछते हुए किसी झूठे शिक्षक को हमेशा पहचान सकते हैंः ''यीशु मसीह कौन है?'' वह कारण का एक भाग है कि यह जानना आपके लिये इतना अधिक महत्वपूर्ण क्यों है कि वह अर्थात परमेश्वर कौन है।

जब आप सचमुच में यह जानते हैं कि यीशु को पुत्र परमेश्वर होना है, तब विभिन्न गुप्त समाज भी जो एक-दूसरे की मदद करने के लिये एक ऐसी बड़ी कामरेड्री रखते हैं, एक अन्य आत्मिक भ्रम* के रूप में दिखाई देंगे। जहां ऐसे समाज में परमेश्वर का उल्लेख किया जाता है, वहां ऐसे समूह यीशु मसीह की शिक्षाओं को नज़रअंदाज करते हैं, जिसने यह कहाः

बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता हैं (यूहन्ना

14:6)। बाइबल में ऐसे लोगों के बारे में हानिकारक कटु वचन लिखे हैं, जो परमेश्वर के बारे में एक पथभ्रष्ट विश्वास या मत रखते हैं। तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर हैः तू अच्छा करता हैः दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं (याकूब 2:19)।

आज हम विभिन्न बड़े धर्मो से गतिविधि की एक चेतावनी पूर्ण वृद्धि भी देख रहे हैं, जो बाइबल के परमेश्वर को ठुकराती या अस्वीकार करती है। हिंदू धर्म के विभिन्न वर्ग या पंथ अनेक नये लोगों की रूचि और शिष्यता को आकर्षित कर रहे हैं। ऐसे देश, जो कभी बाइबल संबंधी अपनी विरासत के लिये प्रख्यात थे, वे हिंदू दार्शनिक सिद्धांतों को सर्वोत्कृष्ट या सर्वोच्च मनन के रूप में अथवा योग और वैराग्य (संयास) जैसे पूर्वी रहस्यवाद के रूप में प्रस्तुत करते हैं। हिंदू धर्म से ही उत्पन्न हुए विभिन्न धार्मिक संप्रदाय या वर्ग, सृष्टि के परमेश्वर के बजाय सृष्टि में अनेक ईश्वरों की मूर्खतापूर्वक आराधना करते हैं। इसके साथ ही साथ, यह दुःखद कथन है कि अनेक भ्रमित मन उन गुरू लोगों के प्रति मोहित हैं, जिन्होंने ''स्वयं को सर्वमहिमायुक्त'' बना लिया है। ये लोग यह भूल गये हैं कि वे सृष्टि के उस परमेश्वर के साथ हैं, जिसने पृथ्वी ग्रह पर आने के लिये खुद को दीन बनाया।

मुस्लिम संसार अर्थात् इस्लाम भी अपने मत या विश्वास को फैलाने में अत्याधिक जोश प्रदर्शित कर रहा है। तेल बेचने अर्थात् पेट-ोल बेचने से प्राप्त उनके डॉलर और उनकी बढ़ती हुई राजनीतिक क्षमता, उन्हें इस बात के लिये समर्थ और योग्य बनाते हैं कि कुछ

वर्षों पहले वे जिन सीमाओं को पार करना असंभव समझते थे, उन्हें आज पार करके वे अपने विश्वास का प्रकार बड़े पैमाने में कर रहे हैं। उनके सबसे अधिक ''पवित्र'' तीर्थस्थानों या मंदिरों में से एक, जो ''डोम ऑफ़ द रॉक'' कहलाता है और यरूशलेम में टेम्पल माऊंट पर स्थित है, से वे निर्भीकता पूर्वक परमेश्वर के शुभ संदेश के प्रमुख केंद्रबिंदु को अस्वीकार करते हैं। () को चारों ओर से घेरनेवाला अरबी भाषा में लिखा अभिलेख बताता है कि ''न तो परमेश्वर उत्पन्न किया गया है और न ही वह (परमेश्वर) उत्पन्न या पेदा किया जा सकता है।'' जबकि बाइबल में यह बताया गया हैः।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया; ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो; परंतु अनंत जीवन पाये (यूहन्ना 3:16)।

परंतु आत्मिक भ्रम धार्मिक संसार या जगत तक ही सीमित नहीं है। धर्मनिरपेक्ष जगत ने एक मानवतावादी दार्शनिक सिद्धांत को अपना लिया है, जिसके अनुसार मनुष्य विश्व का केंद्र है और समाज का सर्वोच्च उद्देश्य मनुष्य का विकास है। मानवतावाद की घोषणा विश्वविद्यालयों, अखबारों, बहु-राष्ट्-ीय सहकारी सेमीनारों, लोकप्रिय पत्रिकाओं, रेडियो एवं टेलीविज़नों में की जाती है। विज्ञापन जगत के माध्यम से लोकप्रियता प्राप्त शीर्षक ''पेम्पर योरसेल्फ () एक स्वार्थी शीर्षक है।

मानवता वाद, जोकि मनुष्य की आराधना करने से बढ़कर कुछ अधिक नहीं है सचमुच एक नया दार्शनिक सिद्धांत नहीं है जैसा

कि कुछ लोग सोचते हैं। अगर हम थोड़ा पीछे पौलुस के दिनों में वापस जायें, तो हम पाते हैं कि परमेश्वर ने कहाः क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बन डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है (रोमियों 1:25)। परमेश्वर यह पूछता है कि मानवता वादी के लिये निश्चित् रूप से अत्याधिक नम्रतापूर्ण प्रश्न क्या होना चाहियेः जब मैं ने पृथ्वी की नींव डाली, तब तू कहां था? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे (अय्यूब 38:4)। यह पुरानी कहानी है। जब शैतान हव्वा के पास आया, तब उसने यह कहते हुए एक असंभव बात को संभव बनाकर प्रस्तुत कियाः तुम परमेश्वर की समानता में हो जाओगे अर्थात् तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे (उत्पत्ति 3:5)। हमारे दिनों में, शैतान सांसारिक मानवतावाद की धूर्तता पूर्ण शिक्षाओं के माध्यम से अपने गंदे काम को जारी रखता है।

संभवतः, आप एक आधुनिक युवा हैं, जिसे न तो राजनीतिक और न ही धार्मिक दृश्य से जोश आता है। आपके लिये राजनीतिज्ञ लोग संदिग्ध हैं और धर्म प्रतिकूल या असंगत है। आप अपने हमउम्र लोगों के साथ शामिल होने को प्राथमिकता देते हैं और व्यक्तिगत परिपूर्णता के लिये कहीं और तलाश करते हैं। आप यह सोच सकते हैं कि () इत्यादि के गीतों के शब्द के माध्यम से जो दृश्य दिखाया जाता है, वह आपको उस एकांत जगत से छुटकारा देगा, जिसमें आप खुद को पाते हैं।

वास्तव में, आप उन शब्दों को जानते हैं, जिन्हें आप सुनते हैं

और जिनके लिये नृत्य करते हैं। यद्यपि आप इनका वर्णन इस तरह से नहीं करना चाहते हैं; तौभी आप इस बात से अवश्य सहमत होंगे कि उनके अधिकांश भाग में, वे शैतानवाद, क्रूरतापूर्ण परपीड़न विलासिता और सेक्स से संबंधित बातों से तालमेल रखते हैं। नर्क की भयावह त्राहि बार - बार संगीत में अनुमानतः अर्थहीन अस्तित्व के लिये एक आकर्षक विकल्प के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। ऐसे वातावरण में, जो कभी - कभी तीव्र क्रोधपूर्ण हिंसा तक पहुंच जाता है, जिस झंडे के नीचे ये युवा लोग संयुक्त या एकता में जुड़ते हैं, उन्हें खुद को और एक - दूसरे को नष्ट करने के लिये प्रोत्साहित करता है।

मैं आपको लॉस एंजिलस नगर में एक जगह के बारे में बताता हूँ। यह मुर्दाघर () कहलाता है। वहां 600 मृत युवा लोगों के शव इस आशा के साथ तीन महीने तक इस आशाके साथ जमा करके रखे जाते हैं कि कोई उन्हें पहचान सकेगा। ''गुमनाम लिख पर्चियाँ उनके पैरों के अंगूठों में बांध दी जाती हैं। ये दुर्भाग्यशाली अधिकांश लोगों को धीरे - धीरे, दरिद्रों या भिक्षुकों की कब्रों में () कब्रिस्तान में अपरिचितों के रूप में दफ़ना दिया जाता है। इनमें से अधिकांश नशीले पदार्थो का सेवन करने वाले होते हैं, उसी संदेश के अनुसार जीवन बिताते हैं, जो डिस्कोस से प्रसारित या घोषित होते हैं। ये लाखों परिवारों में () प्लेयर्स को सुनते हैं। उन्होंने ग़लत संकेत स्तंभ का अनुकरण किया था। अब सड़क के अंत में, परिवर्तन करने के लिये बहुत अधिक देर हो जाती है। अगर उन्होंने यीशू के वचन को सिर्फ सुना और उस पर ध्यान दिया होता, जहां उसने कहा हैः मैं

इसलिये आया हूँ कि वे जीवन प्राप्त कर सकें और बहुतायत का जीवन पा सकें (यूहन्ना 10:10)।

लेकिन अब सभी तरह के इस भ्रम के साथ ही साथ ''ब्लैक आर्ट्स - ()) में रूची की बढ़ती हुई प्रक्रिया अर्थात् अद्भुत वृद्धि पायी जाती है। विश्वसनीय सूत्र यह संकेत देते हैं कि रहस्यों या गुप्त बातों में सक्रिय रूचि आज उसी प्रकार प्रचलित है, जिस प्रकार () के समय में ज्ञात और प्रचलित थी। और यह वर्तमान के ''वैज्ञानिक ज्ञानवर्धन'' के बावजूद भी पायी जाती है।

अधिकांश अनजान जगहों पर शैतान के आराधकों की संख्या बढ़ती जा रही है। () समाराहे को मनाने के लिये लंदन शहर से व्यवसायी लोग के सिंग्टन में एकत्र होते हैं। ''चुड़ैलों'' के () केवल यूरोप में ही नहीं वरन् वैंकूवर द्वीप जैसे सुंदर ग्राणीण स्थानों में भी फैले हुए हैं। संपूणी विश्व में, पूर्वजों की आराधना या पूजा की अंधेरी अर्थात् अंध विश्वास से भरी प्रथाएँ, जो अफ्रीका में पायी जाती हैं, की नकल प्रेतवाद में की जाने लगी है। विभिन्न प्रकार के पार्लर खेल जैसे ''() और () बुरी और अलौकिक बातों के प्रति लोगों के बढ़ते हुए मोह और आकर्षण को प्रोत्साहित करते हैं। ऐसी प्रसारित होने वाली प्रक्रियाएँ, सतही या उथली आत्मिक जिज्ञासा का परिणाम हैं। कई लोग, परमेश्वर के लिये अपनी पथभ्रष्ट खोज न सिर्फ़ परमेश्वर के प्रकाश से मुख मोड़ लेते हैं; बल्कि कुछ तरह की झूठी, खाली आत्मिक भरपूरी के लिये रहस्यों के अंधेरे की ओर भी चले जाते हैं। इसके अतिरिक्त, यह सबकुछ सभ्य जगह में होता है।

हम यह स्मरण करके उचित करते हैं कि परमेश्वर ने अंतिम दिनों के बारे में क्या कहा है। वह हमें झूठे नबियों और नूकली व बनावही चिंहों तथा चम-त्कारों के बारे में चेतावनी देता है, जो अंत समय के बड़े (महान्) भ्रम के साथ होंगे। वास्तव में, परमेश्वर हमें यह बताता है कि उस समय धोखा या धूर्तता का एक स्वामी प्रकट होगा। ''उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ और चिंह, और अद्‌भुत काम के साथ और नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया, जिससे उनका उद्धार होता'' (2 थिस्सलुनिकियों 2:9,10)।

झूठी शिक्षाओं और बुरी प्रथाओं में इस उत्प्रेरित रूचि के कारण, इस बात को समझना कठिन नहीं है कि राष्ट-ों और समुदायों की बढ़ती हुई संख्या संदेहवाद, रिक्त इस्तीफ़ा और आशाहीनता या निराशावाद की अत्याचारी शक्तियों के साथ आच्छादित या ढ़ंकी हुई है। अगर शैतान के संकेत स्तंभ का उल्लेख करें तो ये कई हैं; परंतु आप इस बात के प्रति निश्चित् हो सकते हैं कि उनमें से एक भी मनुष्यों के एकमात्र उद्धार कर्त्ता प्रभु यीशु मसीह की ओर संकेत नहीं करते हैं।

जीवन के उदासीन चित्रण के संसार के विपरीत, परमेश्वर का संदेश निश्चित् रूप से उदासीनता, संदेह और मृत्यु में से एक नहीं है। उसका संदेश आशा, आश्वासन और सक्रिय जीवन का संदेश है, जैसा कि हम मसीह में पाते हैं। जब परमेश्वर की तलाश के दौरान,

आप बाइबल पढ़ते हैं, तब पवित्र आत्मा आपको हमेशा प्रभु यीशु मसीह की ओर संकेत करेगा, जिसने कहा हैः मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ; और दूसरा कोई नही है। क्योंकि यीशु जारी रखते हुए कहता हैः बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता है (यूहन्ना 14:6)।

परमेश्वर ने आपको धोखा देने वाले संकते स्तंभ के बारे में चेतावनी दी है; ताकि आप पथभ्रष्ट न हों। उसने आपको बढ़ते हुए भ्रम के बारे में भी सूचित कि यह है जो आपके विचारों को ढ़ंक सकता है या छिपा सकता है। अब वह आपको यह प्रतिज्ञा देता हैः

जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय में करता हूँ, मैं उन्हें जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् - कुशल ही की हैं, और अंत में मैं तुम्हारी आशा पूरी करूंगा। तब उस समय तुम मुझे पुकारोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा। तुम मुझे ढंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम संपूर्ण मन से मेरे पास आओगे। मैं तुम्हें मिलूंगा। यहोवा की यह वाणी है (यिर्मयाह 29:11-14)।

<u>विचार करने के लिये रूकें</u>

1. किस प्रकार का अर्थात् कैसा मन सृष्टिकर्ता के बजाय सृष्टि की आराधना करेगा? (रोमियों 1:22-28 पढ़ें)।
2. परमेश्वर के खातिर आपकी तलाश में, वह कौन सी कुंजी है, जो आपकी किसी बौद्धिक समस्या को खोलेगी? (यूहन्ना 7:17 पढ़ें)।

क्या आपका मन है?

क्या आपकी इच्छा और इच्छाशक्ति है?

3. क्या परमेश्वर ने आपको अपनी ओर पथ प्रदर्शन के लिये कोई स्पष्ट ''संकेत स्तंभ'' प्रदान किया है? (यूहन्ना 8:12 पढ़ें)।

कई वर्ष पहले, इंग्लैड के एक संडे स्कूल में, एक लड़के ने अपने संडे स्कूल टीचर से पूछाः ''क्या परमेश्वर नटखट लड़कों को च्यार करता है?'' और टीचर ने कहा कि ''नहीं, अवश्य नहीं''। ओह, किसी बालक को अनैच्छिक ग़लत बात बताने के लिये। उस बालक वाला लड़का विली डॉल्ट बारह वर्ष का था, जब उसकी नियुक्ति सात नास्तिक सैनिकों के साथ एक तंबू में हुई। इनमें से एक व्यक्ति का नाम बिल था। तथापि, बिल के विपरीत, विली प्रभु यीशु मसीह में एक भक्त विश्वासी था। प्रत्येक रात्रि, वह अपने बिस्तर के किनारे घुटने हेककर शांतिपूर्वक प्रार्थना करता था और अपनी बाइबल पढ़ता था। जब वह ऐसा किया करता था, तब दूसरे सैनिक उसका मजाक उड़ाते थे और उसकी निंदा करते थे।

एक दिन कोलोनेल - इन -चार्ज ने कंपनी को परेड के लिये बुलाया। जिस तंबू या टेंट में बिल और विली की नियुक्ति की गयी थी, वहां एक चोर का पता लगाया गया था। अपराधी का पता लगाने के अनिवार्य प्रयास में, कोलोनेल ने पूरी कंपनी को सूचना भेजी। उसने कहाः ''मेरी पिछली चेतावनियां निरर्थक नहीं गयीं। पिछली रात चोर फिर आया था। आज, मैं अपराधी को उसका खुद का परिचय देने का आखिरी अवसर देता हूँ और इसके साथ ही उसे एक

पुरूष की तरह उसकी सजा लेने का अंतिम अवसर देता हूँ। यदि वह कोई प्रत्युत्तर नहीं देता है, तो कंपनी के प्रत्येक पुरूष को उसकी नंगी पीठ पर दस कोड़े लगाये जायेंगे। परंतु आप लोगों में से यदि एक पुरूष आकर दंड को स्वयं पर लेगा, तो शेष सभी सजा से बच जायेंगे।''

एक तनावपूर्ण चुप्पी के बाद, विली सीधा होकर खड़ा हो गया, उसने कदम आगे बढ़ाया और कहाः ''सर, अभी - अभी आपने बताया कि यदि एक पुरूष सजा लेने के लिये सामने आयेगा, तो शेष सभी सजा से बच जायेंगे। सर, मैं वह पुरूष हूँ।'' कोलोनेल ने सोचा कि अगर परमेश्वर नटखट लड़कों को प्यार नहीं करता है, तो उसने मुझसे कभी प्यार नहीं किया है। शेक्सपियर कहता हैः ''वह प्रेम, प्रेम नहीं होता है, जो रद्दोबदल का अवसर मिलने पर बदल जाता है''

जी. कैम्पबेल मोर्गन

अध्याय - 7

क्या परमेश्वर मुझसे सचमुच प्रेम करता है?

क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति के प्रेम के प्रति प्रश्न किया है, जो आपके लिये अत्याधिक महत्वपूर्ण है? अथवा क्या आपने कभी यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि आप किसी व्यक्ति से प्रेम करते हैं, जब उन्हें इस बात पर अर्थात् इस बात का यकीन नहीं था? इन दोनों ही मामलों में आपको यह मालूम होगा कि ऐसे समय आते हैं जब सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति शब्दों के बजाय कार्यों के माध्यन से बेहतर रूप में की जा सकती है।

चूंकि कार्य, शब्दों अर्थात् वचन की अपेक्षा अत्याधिक शक्तिशाली हैं, इसलिये परमेश्वर ने आपके प्रति अपने प्रेम को इसके द्वारा प्रदर्शित किया कि क्रूस पर जब यीशु मरा, तब उसने (परमेश्वर ने) क्या किया। जब आप इस बात के अर्थ एवं महत्व को समझते हैं, तब आपको यह समझने के लिये किसी मदद की जरूरत नहीं होगी कि परमेश्वर सचमुच आपसे प्रेम करता है।

मसीह के प्रति मेरा हृदय परिवर्तित होने के ठीक बाद, मैं ने एक बिगल बजाने वाले छोटे लड़के और एक सैनिक की सच्ची कहानी पढ़ी। बोईर युद्ध के दौरान, दोनों सेना में काम या सेवा करते थे। बिगुल बजाने वाला लड़का विली डॉल्ट बारह वर्ष का था, जब उसकी नियुक्ति सात नास्तिक सैनिकों के साथ एक तंबू में हुई। इनमें से एक व्यक्ति का नाम बिल था। तथापि, बिल के विपरीत, विली प्रभु - यीशु मसीह में एक भक्त विश्वासी था। प्रत्येक रात्रि, वह

अपने बिस्तर के किनारे घुटने हेककर शांतिपूर्वक प्रार्थना करता था और अपनी बाइबल पढ़ता था। जब वह ऐसा किया करता था, तब दूसरे सैनिक उसका मजाक उड़ाते थे और उसकी निंदा करते थे।

एक दिन कोलोनेल - इन-चार्ज ने कंपनी को परेड के लिये बुलाया। जिस तंबू या टेंट में बिल और विली की नियुक्ति की गयी थी, वहां एक चोर का पता लगाया गया था। अपराधी का पता लगाने के अनिवार्य प्रयास में, कोलोनेल ने पूरी कंपनी को सूचना भेजी। उसने कहाः ''मेरी पिछली चेतावनियां निरर्थक नहीं गयीं। पिछली रात चोर फिर आया था। आज, मैं अपराधी को उसका खुद का परिचय देने का आखिरी अवसर देता हूँ और इसके साथ ही उसे एक पुरूष की तरह उसकी सजा लेने का अंतिम अवसर देता हूँ। यदि वह कोई प्रत्युत्तर नहीं देता है, तो कंपनी के प्रत्येक पुरूष को उसकी नंगी पीठ पर दस कोड़े लगाये जायेंगे। परंतु आप लोगों में से यदि एक पुरूष आकर दंड को स्वयं पर लेगा, तो शेष सभी सजा से बच जायेंगे।''

एक तनावपूर्ण चुप्पी के बाद, विली सीधा होकर खड़ा हो गया, उसने कदम आगे बढ़ाया और कहाः ''सर, अभी - अभी आपने बताया कि यदि एक पुरूष सजा लेने के लिये सामने आयेगा, तो शेष सभी सजा से बच जायेंगे। सर, मैं वह पुरूष हूँ।'' कोलोनेल क्रोधित होकर उस अपरिचित डरपोक व्यक्ति के विरूद्ध चिल्ला उठाः ''एक नादान और निर्दोष लड़के को तुम अपनी सज़ा कैसे और क्यों लेने दे रहे हो?'' कोई व्यक्ति अपनी जगह से नहीं हिला। तब

कोलोनेल ने कहाः ''तुम सब उस अपराधी पुरूष के खातिर एक नादान और निर्दोष लड़के को सजा पाने का क्रूर दृश्य देखोगे।''

अपने वचन की सच्चाई के अनुसार, कोलोनेल ने विली की पीठ को नंगी करने की आज्ञा दी और तब कोड़े की क्रूर वर्षा आरंभ हो गयी। जब विली बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा, तब अनायास ही बिल, जो अधिक देर तक अपना चश्मा संभालने में असमर्थ था, दौड़कर आया और चिल्लायाः ''रूक जाओ। मैं चोर हूँ। मैं अपना दंड स्वयं लूंगा।'' अपनी मूर्छा से वापस होश में आते हुए विली ने कोमलतापूर्वक धीरे से अपनी आंखें बिल की ओर उठाई और फुसफुसाते हुए कहाः ''सब कुछ ठीक है बिल, अब कोलोनेल अपने शब्द वापस नहीं ले सकता है। मैं तुम्हारे सारे दंड ले लूंगा''। और उसने वैसा ही किया!

छोटा विली, कोड़े की मार के अनेक प्रभाव से कभी उबर या ठीक नहीं हुआ। परंतु विली के स्वर्ग जाने से पहले, बिल, जो कि अब एक टूटा व्यक्ति था, उसके बिस्तर के किनारे रोते हुए पूछने लगाः ''विली क्यों? तुमने मेरे लिये यह क्यों किया? मैं उसके योग्य नहीं हूँ''। विली का उत्तर साधारण व सामान्य था और वह कह रहा थाः ''बिल, मैं ने अक्सर तुम्हें यह बताने का प्रयास किया कि परमेश्वर तुमसे कितना अधिक प्यार करता है, लेकिन तुम हमेशा हंसते थे; मैं ने सोचा कि अगर मैं तुम्हारा दंड ले लूंगा, तो यह तुम्हें इस बात को समझने में मदद कर सकता है कि जब यीशु ने क्रूस तुम्हारी जगह ली और तुम्हारे पाप के खातिर मृत्यु सह ली, तब उसने

तुमसे कितना अधिक प्रेम किया।'' विली के स्वर्ग जाने से पहले, प्रेमी मसीह के द्वारा मुफ़्त में प्रदान किये गये उद्धार को बिल ने ग्रहण किया।

खोयी हुई मानवता के खातिर, स्वर्ग ने मसीह में अपना जयवंत बचाव अभियान प्रारंभ किया। और वह प्रेम हीथा हममें से प्रत्येक के लिये परमेश्वर का प्रेम - जिसने मसीह के बलिदान और कष्ट के अद्‌भुत कार्य को प्रोत्साहित किया।

सिद्ध पुरूष

गुलगुता की पहाड़ी पर तीन क्रूस खड़े किये गये थे। उनमें से दो में डाकुओं को क्रूस पर चढ़ाया गया था। इन अपराधियों के बीच प्रभु यीशु को कीले ठोकी गयी और वहां उसकी मृत्यु हो गयी।

कष्ट देकर सताये जाने के उसके अंतिम घंटों के दौरान, डाकुओं में से एक ने उस अवास्तविक न्यायिक प्रणाली के बारे में अपने विचार व्यक्त किये, जिसके अंतर्गत उन सभी तीन को मृत्युदंड सुनाया गया था। यह अद्‌भुत प्रतीत होता है कि प्राथमिक तौर पर उसे पहले अपनी पीड़ा की फ़िक्र नहीं थी और न ही उसे अपने प्रताड़ित किये हुए घायल शरीर की चिंता थी। इसके बजाय, उसके विचार रोमी न्यायिक समिति की ओर थे कि किस तरह कानून की सही विधि का पालन न करते हुए यीशु को भी दो डाकुओं की तरह समान मृत्यु दी जा रही थी। यह सख्त अन्याय था, जिससे उस डाकू को तकलीफ़ हो रही थी। स्पष्ट और नम्र रूप से मरते हुए उस डाकू ने अपने जीवन के अंतिम क्षण में पहुंचते हुए तीन महत्वपूर्ण अवलोकन किये।

पहलाः हम वह प्राप्त कर रहे हैं, जिसे हम अपने कार्यों के कारण प्राप्त करने के योग्य हैं। उस संक्षिप्त और नम्र वक्तव्य में, मरते हुए उस डाकू ने उसके अपराध के लिये अपनी व्यक्ति गत जिम्मेदारी का अंगीकारी किया और इसलिये उसने अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व को पहचाना।

दूसराः और हम सचमुच न्यायपूर्वक मरते हैं.... हमारे दिनों या समय में, जहां छोटी - छोटी चोरी और डकैली की हिंसक गतिविधियाँ सामान्य घटनाएँ हैं, वहीं यह समझना कठिन हो सकता है कि प्रथम शताब्दी में ऐसे अपराधों को कितने गंभीर दृष्टिकोण से देखा जाता था। परंतु इन तीन संक्षिप्त शब्दों में, मरते हुए डाकू ने अपने इस दृढ़ निश्चय को अभिव्यक्त किया कि उसके समय में, उसका मृत्यु दंड वैध और न्याय पूर्ण था। हम न्यायपूर्वक .... मरते हैं।

तीसराः इस व्यक्ति ने कोई ग़लती नहीं की है। यद्यपि यह पढ़ना महत्वपूर्ण एवं अद्भुत बात है कि उस डाकू ने अपने निजी व्यक्तिगत अपराध को कैसे पहचानो और उसने कानून व्यवस्था के न्याय को किस प्रकार स्वीकार किया था, उस यीशु के लिये उसकी फ़िक्र या चिंता के बारे में पढ़ना बिल्कुल ही अचंमित करनेवाला है जिसे ठीक उसके बगल में क्रूस पर लड़काया गया था। यह व्यक्ति - यह यीशु - मरते हुए उस डाकू ने यह अवलोकन किया - निरापराधी अर्थात् निर्दोष था और इसलिये उसे अन्यायपूर्वक मरने की अर्थात् मृत्यु की सजा दी गयी थी।

जब वह डाकू, अपने निजी पाप का अंगीकार करते हुए क्रूस पर लटका हुआ था, तब उसके पास यीशु की ओर उन्मुख होने के अलावा कोई दूसरी आशा नहीं थी। इसलिये उसने सच्चाई के साथ विनती की जब तू अपने राज्य में आये, तो मेरी सुधि लेना। अपराध के इस सच्चे अंगीकार और उस डाकू की आवश्यक्ता के प्रति यीशु ने हमेशा की तरह प्रत्युत्तर देते हुए, तुरंत यह प्रतिज्ञा की आज तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा (लूका 23:39-43)।

उस दिन, सभी पश्चातापी पापियों की तरह उस मरते हुए डाकू को, जिसने प्रभु यीशु के प्रति अपना हृदय परिवर्तन किया था, अनंत जीवन का आश्वासन दिया गया था। वह सही व्यक्ति - प्रभु यीशु मसीह - की ओर उन्मुख हुआ था - और सही स्थान पर - क्रूस जिस पर यीशु की मृत्यु हुई - दया के लिये विनती की थी।

हां, उस भयानक दिन, डाकुओं में से एक की दृष्टि में, प्रभु यीशु मसीह सचमुच निर्दोष था। तथापि, बाद में दो शिष्यों ने अपेक्षाकृत अधिक विशिष्ट ढ़ंग से अवलोकन किया। उन्होंने यह गवाही दी कि यीशु, निष्पाप था। इनमें से प्रत्येक शिष्य ने प्रेरित पौलुस के साथ मिलकर यीशु के निष्पाप होने से संबंधित अपनी व्यक्तिगत गवाही को लिखा।

पतरस, जो प्रभु यीशु का घनिष्ट मित्र था, दुःसाहस पूर्ण करने वाले एक व्यक्ति के रूप में जाना जाता था। अतः जब उसने यीशु के निष्पाप होने की गवाही दी, तो उसने अपने व्यक्तित्व के अनुसार एक दुःसाहसी एवं सक्रिय वचन का उपयोग किया थाः उसने (प्रभु यीशु

ने) कोई पाप नहीं किया था (1 पतरस 2:22)।

यूहन्ना की भी प्रभु यीशु के साथ एक अत्याधिक खास दोस्ती थी। इस कारण, उसे अपने प्रभु का उस समय अवलोकन करने का बार - बार अवसर प्राप्त होता था, जब वह भीड़ की जटिल दृष्टि से ओझल होकर दूर हो चला जाता था। इस सुविधा जनक दृष्टिकोण से यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से यह गवाही दी किः उसनें (प्रभु यीशु में) कोई पाप नहीं है (1 यूहन्ना 3:5)।

दूसरी ओर हम यह देखते हैं कि पौलुस, कुछ विख्यात शास्त्रियों में से एक अपवाद के रूप में जाना जाता था। इसलिये, जब पौलुस ने, जो शिक्षा और ज्ञान वाला एक व्यक्ति था (अर्थात् शिक्षित एवं ज्ञानी) प्रभु यीशु के बारे में जब यह घोषित किया, तो यह कोई चौंकाने वाली बात नहीं थीः वह पाप से अनजान था (2 कुरिंथियों 5:21)। मसीह के निष्पाप जीवन के बारे में ऐसी तीन अधीकृत गवाही अत्याधिक प्रभावशाली है।

परंतु यह संभव है कि कुछ लोग इन विचारशील अवलोकन का बहिष्कार करना चाहते हैं। वे यह कहते हैं कि ''न तो मरता हुआ वह डाकू और न ही प्रेरित पतरस, यूहन्ना और पौलुस का लक्ष्यपूर्ण गवाहियों के रूप में वर्णन किया जा सकता है। मरता हुआ वह डाकू एक अत्याधिक जरूरतमंद व्यक्ति था और प्रेरितों को प्रभु यीशु के प्रति उनकी भक्ति के कारण अंधविश्वास अर्थात् उनकी भ्रांतिपूर्ण धारणा ने जकड़ रखा था''। यह ठीक है, तब यहूदिया के रोमी गवर्नर (राज्यपाल) पंतुस पीलातुस के बारे में क्या विचार है निश्चय ही, वह

मसीह का मित्र नहीं था। फिर भी, जब उसने यीशु पर आरोप लगाने वाले उन लोगों को उत्तर दिया, जिन्होंने उसके विरूद्ध झूठे दोष आरोपित कर दिये थे; पीलातुस ने यीशु की मृत्यु को बचाने की मनसा के साथ यह घोषित कियाः तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकाने वाला ठहराकर मेरे पास लाये हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे सामने उसकी जांच की पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैं ने उसमें कुछ भी दोष नहीं पाया है (लूका 23:14)।

परंतु ये सभी मानवीय गवाहियाँ क्या हैं, जब उनकी तुलना उस घोषणा के साथ की जाये, जिसे पिता परमेश्वर ने स्वर्ग में अपने सिंहासन से जारी किया था? जब कोई व्यक्ति किसी सार्वजनिक सभा में बोलने वाला होता है, तब इसे उचित और उपयुक्त समझा जाता है कि उस व्यक्ति का नम्रतापूर्वक परिचय दिया जाये। इसी तरह, जब यीशु अपनी सार्वजनिक सेवकाई की शुरूआत करने ही वाला था, तब पिता परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र का परिचय देने का विशेषाधिकार अपने लिये आरक्षित कर लिया था। स्वर्ग से तुरही की एक आवाज के साथ पिता ने यह घोषणा कीः यह मेरा प्रिय पुत्र है, इससे मैं अति प्रसन्न हूँ (मत्ती 3:17)।

पिता परमेश्वर को यह मालूम था कि जब यीशु इस संसार में मानव रूप में था, वह उसी तरह रहा, जिस तरह परमेश्वर ने मनुष्य को रहने के लिये सृजा था। प्रत्येक दूसरा व्यक्ति परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियों 3:23)। परंतु यीशु नहीं! वह हर तरह से सिद्ध

था। इसलिये, जब यीशु अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरंभ करने वाला था, तब उसके पिता ने उसका परिचय वहां खड़े हुए लोगों को दिया और वह उसका परिचय वहां खड़े हुए लोगों को दिया और वह उसका पवित्र पिता था (यूहन्ना 17:11), जिसने अपने प्रिय पुत्र के जीवन व्यतीत करने के ढ़ंग के प्रति अत्याधिक प्रसन्नता व्यक्त की।

जैसा कि हमने पहले ही इस बात की व्याख्या कर दी है कि प्रभु यीशु कभी भी परमेश्वर से कम नहीं था। इसलिये इस बात को महसूस करना एक विचित्र बात है कि परमेश्वर ने स्वयं को दीन किया था और अपना बड़ापन छोड़कर नम्र होते हुए एक कुंवारी माता के गर्भ से जन्म लेकर, खुद पर मानव रूप धारण किया था। तथापि, अगर यीशु मनुष्य रूप में अपने स्वर्गीय पिता के प्रति पूरी तरह अधीन नहीं हुआ होता, तो वह अपने पिता को अधिक प्रसन्नता कभी प्रदान नहीं कर सकता था। इसके बावजूद, यीशु, पृथ्वी पर अपनी संपूर्ण यात्रा के दौरान, अपने पिता के प्रति हमेशा आज्ञाकारी रहा और उस पर निर्भर रहा। इस प्रकार, उसकी मानवता उसके स्वर्गीय पिता की पवित्रता, उसके प्रेम और कष्ट, स्वार्थ एवं पाप के इस जगत में उसका उद्देश्य बन गयी।

हां, यीशु, मानव रूप में इस ग्रह पर चलता था, जिसे उसने परमेश्वर होने के नाते बनाया था। यद्यपि प्रभु यीशु कभी भी परमेश्वर से कम नहीं था; तौभी उसने 33 वर्षों तक मनुष्य को यह दर्शाया कि परमेश्वर मनुष्य से कैसा जीवन जीने की अपेक्षा रखता था। यीशु ने अपनी मानवता में कभी किसी उस बात का उल्लंघन नहीं किया, जिस

तरह से परमेश्वर चाहता था कि मनुष्य बने। उन वर्षों के दौरान, स्वर्ग के अपने पिता के लिये हमेशा पूरी तरह उपलब्ध था। इसलिये, पिता, जब अपने प्रिय पुत्र पर दृष्टि डालता था, तब अति प्रसन्न होता था; क्योंकि उसके पुत्र ने मनुष्यों के बीच में सिद्ध पुरूष के रूप में जीवन बिताया था।

निर्दोष! निष्पाप! सिद्ध! मरते हुए उस डाकू और पंतुस पीलातुस के लिये यीशु निरापराधी या निर्दोष था। पतरस, यूहन्ना और पौलुस के लिये यीशु निष्पाप था। स्वर्गीय पवित्र पिता के लिये यीशु, सिद्ध था। निर्दोष। निष्पाप सिद्ध! - इसके बावजूद वह मर गयाः हममें से प्रत्येक व्यक्ति के लिये अपने महान् प्रेम के कारण वह हमारे लिये मर गया!

<u>असीमित प्रेम</u>

अब आप अपनी कल्पना में, उन दर्शको में शामिल होने का प्रयास करें; जिन्होंने प्रथम पुण्य शुक्रवार () के दिन भयानक घटनाओं को देखा था। क्रूस के चारों ओर भीड़ एकत्र थी। जब वे डरावना और भयावह तमाशा देख रहे थे, तब उनका सामना उनकी आशा के विपरीत रूधिरमय अर्थात् लहूलुहान दृश्य को देखकर भौंचक्के रह गये।

यीशु की दोनों तरफ़ एक - एक अपराधी लटका हुआ था। ये दोनों व्यक्ति अपने साथी लोगों के समक्ष अपराधी थे और दोनों ही अपने सृष्टिकर्त्ता के सामने अपराधी थे। उस देश की कानून - व्यवस्था के अनुसार उन दोनों के लिये मृत्यु की सजा आवश्यक थी।

इन दो पुरूषों के बीच यीशु अपने निजी क्रूस पर लटका हुआ था। अनेक बातों के लिये यीशु की तुलना इन डाकुओं से करने पर, सिर्फ यीशु ही लोगों के समक्ष निर्दोष और निष्पाप था; परंतु वह अपने पवित्र पिता के सामने सिद्ध भी था। हां, परमेश्वर .... मसीह में (2 कुरिंथियों 5:19) एक निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने की तरह क्रूस की ओर गया (1 पतरस 1:19), तथा पापियों के खातिर मसीह की प्रतिस्थापन्न मृत्यु परमेश्वर के प्रेमी हृदय के कारण स्वैच्छिक थी।

उन डाकुओं को मरना पड़ा, लेकिन प्रभु यीशु निश्चित रूप से नहीं मरा। इससे पहले यीशु ने अपने आलोचकों से बातें करते हुए इस बात की पुष्टि कीः मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूं। काई मुझसे उसे छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँः मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार हैः यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है (यूहन्ना 10:17,18)। यीशु ने अपने चेलों को उस सीभा के बारे में समझाते हुए जहां तक उसका प्रेम शीघ्र ही जायेगा अर्थात् पहुंचेगा, कहाः इससे बड़ा कोई प्रेम नहीं है, कि कोई व्यक्ति अपने मित्रों की खातिर अपना प्राण दे (यूहन्ना 15:13)।

प्रभु यीशु की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के बाद, पौलुस प्रेरित ने आगे इस बात पर जारे दियाः जो परमेश्वर, मसीह में था और उसने (परमेश्वर ने) उसे (मसीह को) बनाया था, जो हमारे खातिर पाप होने के लिये पाप से अनजान था; ताकि उसमें हम परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें (2 कुरिंथियों 5:21)। सदियों के बाद, हमारे

पाप के खातिर मसीह की प्रतिस्थापन्न मृत्यु की अद्‌भुत सच्चाई को इन शब्दों में अर्थपूर्ण ढ़ंग से व्यक्त किया गया है:

तुम मेरी धार्मिकता हो,
मैं तुम्हारा पाप था,
मेरा जो था, उसे तुमने ले लिया,
और जो तुम्हारा था, उसे मुझे दे दिया,
तुम वह बन गये, जो तुम नहीं थे
ताकि मैं वह बन सकूं, जो मैं नहीं था।

गेहूं का एक दाना

प्रभु यीशु मसीह ने अपनी आसन्न मृत्यु के प्रति अत्याधिक सचेत होते हुए, अपना हृदय अपने चेलों के लिये खोला और कहा:

अब मेरा मन व्याकुल हो रहा है। इसलिये अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ो से बचा? परंतु मैं इसी कारण इस घड़ी तक पहुंचा हूँ। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर: तब यह आकाशवाणी हुई कि मैं ने उसकी महिमा की है और फिर भी करूंगा। (यूहन्ना 12:27,28)।

लेकिन शायद आप यह सोच रहे हैं कि रोमी क्रूसीकरण जैसे एक रूधिरमय अर्थात् लहुलूहान दृश्य में परमेश्वर की महिमा कैसे हो सकती है?

प्रभु यीशु ने पिता परमेश्वर से प्रार्थना करने के पहले ही अपने चेलों को इस बात का स्मरण दिलाया था कि इससे पहले कि कोई ऊपज या फ़सल उत्पन्न हो सके, बीज को अंकुरित होने के लिये मरना

आवश्यक होता है।

मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परंतु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है (यूहन्ना 12:24)।

चूंकि यीशु एक निष्पाप मनुष्य था; इसलिये उस पर मृत्यु का कोई दावा नहीं था। परंतु उसने मरने का चयन किया; मेरे और आपके पाप के खातिर एक स्थावा पन्न पूरक के रूप में एक क्रूर मृत्यु से मरना/इस रीति से वह छुटकारा पाये हुए अर्थात् छुड़ाये गये लोगों की एक अनंत फ़सल काटेगा। इसलिये प्रभु यीशु अपनी योजना के बारे में बताता है और प्रत्येक सच्चे विश्वासी को वह प्रतिज्ञा भी देता हैः

(उसकी योजना) मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूँः (उसकी प्रतिज्ञा) यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हे अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं जाता हूँ, तुम वहां का मार्ग जानते हो (यूहन्ना 16:28; 14:3)।

यह बात अद्भुत है, लेकिन अविश्वसनीय प्रतीत होती है कि लोगों के प्रति उद्धारकर्त्ता के अद्भुत प्रेम के बावजूद कुछ लोग उस क्षमा को ठुकराना या अस्वीकार करना पसंद करेंगे, जिसे वह प्रदान करता है। अन्य लोग उसकी मृत्यु के बारे में निष्क्रिय और उदासीन बने रहेंगे। तथापि चाहे लोग सक्रिय तौर पर उद्धारकर्त्ता को ठुकरायें अथवा चाहे वे निष्क्रिय रूप से उसे नज़र अंदाज करें - परिणाम एक

अर्थात् समान होगा - अनंत जीवन; अनंत ज्योति और अनंत प्रेम के एकमात्र स्त्रोत से सदा के लिये अलगाव। इस भयावह स्थिति का, वर्णन इन शब्दों में किया गया हैः

तुम मरते हुए मरोगे,
एक अत्याधिक महान् मृत्यु मरोगे,
अनंतकाल के लिये मरोगे,
हमेशा मरते रहो, फिर भी कभी मृत न हो।

तथापि, प्रभु यीशु न सिर्फ़ आपको नर्क से बाहर करने और स्वर्ग में ले जाने के लिये मरा, परंतु वह परमेश्वर को स्वर्ग से बाहर लाकर आप तक पहुंचाने के लिये भी मरा!

नहीं, अनंत जीवन, स्वर्ग में मेरे भविष्य का केवल आश्वासन नहीं है। बाइबल भी सच्चे विश्वासी को यह आश्वासन देती है कि अनंत जीवन एक महिमायुक्त, वर्तमान की जीवित सच्चाई है।

वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया हैः और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है (1 यूहन्ना 5:11,12)।

अनंत जीवन एक व्यक्ति - प्रभु यीशु मसीह में है। जब वह मानव हृदय में अपना निवास स्थान बना लेता है, तब उसी क्षण अनंत जीवन आरंभ होता है।

बहुत अधिक (बड़ी) कीमत

मसीह के क्रूस पर परमेश्वर की पवित्रता, परमेश्वर का न्याय

और परमेश्वर का प्रेम सभी बलिदान के एक सर्वोच्च कार्य में साथ मिल गये। वहां, उसकी पवित्रता सुरक्षित कर दी गयी थी, उसका न्याय संतुष्ट कर दिया गया था और वहां परमेश्वर के प्रेम ने आपके और मेरे जैसे पापी लोगों को ग्रहण कर लिया था अर्थात् अपना लिया था। परंतु इसके लिये उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी।

ऑस्वाल्ड चैम्बर्स ने अपने दैनिक मनन की पुस्तक () में यह स्वास्थ्यवर्द्धक परमेश्वर के वितृत्व के इस आनंद दायक दृष्टिकोण को जानें, जिसमें कहा गया हैः ''परमेश्वर अत्यंत ही दयालु और प्रेमी हैं कि वह हमें सचमुच क्षमा करेगा''। लेकिन नये - नियम में इस संवेदनशील भावना के लिये कोई स्थान नहीं है। केवल यही एक ही आधार पर, परमेश्वर पाप क्षमा कर सकता है और मसीह के क्रूस के माध्यम से अपने पक्ष में नियुक्त कर सकता है; इसके अतिरिक्त, कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इसके बावजूद, यदि हम समझते हैं कि यह सच है, तो अब भी विश्वास के साधारण ढ़ंग के साथ पाप की क्षमा लेने की संभावना बनी रहती है और तब यह भूलना भी संभव हो जाता है कि परमेश्वर इसे हमारा बनाने के लिये कितनी बड़ी कीमत चुकायी है।

यद्यपि हमने विली डॉल्ट के स्वार्थहीन कार्य का उल्लेख पहले किया था, तौभी हम यह पाते हैं कि दुःख उठाने वाले परमेश्वर ने कलवरी पर जो सहा, सचमुच उसकी बराबरी को मनुष्य नहीं कर सकता है। यह उदाहरण हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम का एक अनुकूल और संगतपूर्ण उदाहरण है। आत्मा की श्वास से लिखित वचन को

हम पवित्र बाइबल कहते हैं, परमेश्वर ने स्वयं ही अपने निजी पर्दे को खींचकर या हटाकर हमें अपने इस बलिदानयुक्त प्रेम की एक पूर्ण झलक दिखायी है। इसके बावजूद भी उसके प्रेम का विस्तार हमारी सीमित समझ की क्षमता से बहुत अधिक परे है। तथापि, एक अचंभित करने वाले प्रेम के ऐसे कार्य पर ध्यान देते हुए, हम परमेश्वर के प्रेम की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई और गहराई के थोड़े परिभाण अर्थात् थोड़ी मात्रा की सराहना आरंभ कर सकते हैं।

जब यीशु, क्रूस पर मरा, तब उसने तीन स्तरीय ढ़ंग से हमारे पापों के लिये दुःख उठाया।

क्रूस पर यीशु की देह, पीड़ा के साथ तोड़ दी गयी थी; क्रूस पर उसका प्रेम अनंत तक फैला दिया गया था; इससे भी अधिक दुःखद बात यह थी कि क्रूस पर यीशु को उस प्रकाश, महिमा और शांति से अलग कर दिया गया था, जिसका आनंद वह हमेशा पिता के साथ अपनी एकता में उठाता था । हां, यीशु ने जो कष्ट सहे, वे सचमुच हमारी मानवीय समझ से परे है।

तथापि, जब हम उसके शारीरिक कष्ट सहने की ओर ध्यान देते हैं, और उसके भावनात्मक कष्ट सहने और विशेष तौर पर उसके आत्मिक कष्ट सहने पर विचार करते हैं, तो पापी लोगों के खातिर उसके प्रेम की मात्रा की एक नये ढ़ंग से सराहना करेंगे।

शारीरिक कष्टः () के एक टुकड़े की कांटइंट के साथ एक अनमोल रेम्ब्रेन्ट पेंटिंग को नष्ट करने के समान ही यह सचमुच बिल्कुल असंभव है। ठीक इसी तरह, सिद्ध पुरूष यीशु मसीह की

मृत्यु की समानता या उपयुक्त, ढ़ंग से तुलना किसी अन्य मानव प्राणी की मृत्यु के साथ कभी नहीं की जा सकती है।

हम पुराने - नियम में, एक भविष्यद्वाणी पाते हैं जिसमें शारीरिक तौर पर विकृत करने के बारे में सही भविष्यद्वाणी की गयी थी जिसे यीशु बाद में सहेगा। वहां हमें यह बताया गया है कि उसका रूप इतना बिगड़ जायेगा कि वह किसी मनुष्य के समान दिखाई नहीं देगा (यशायाह 52:14)। तथापि, इस वाक्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद, मौलिक इब्रानी बाइबल की पूर्ण शक्ति को नहीं बताता है। परमेश्वर ने उस वक्तव्य में इस बात की व्याख्या की है कि उसके प्रिय पुत्र को इतनी अधिक क्रूरता से कुचला या घायल किया जायेगा कि वह किसी मनुष्य प्राणी के समान दिखाई नहीं देगा। मसीह के शारीरिक रूप की ऐसी कांटछांट की भविष्यद्वाणी स्वयं यीशु के द्वारा की गयी थीः।

देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जायेगा और वे उसको घात के योग्य उहरायेंगे और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे। वे उसको ठट्ठों में उड़ायेंगे और उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा (मरकुस 10:33,34)।

बिल्कुल ठीक यही हुआ था! बाद में, मरकुस ने उन बातों का वर्णन किया था, जिन्हें चश्मदीद गवाहों ने देखा थाः वे उसके सिर पर सरकडे मारते और उस पर थूकते और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते

रहे। जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तब उस पर से बैंजनी वस्त्र उतार कर उसी के कपड़े पहनाये; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गये (मरकुस 15:19,20)।

रोमी कोड़ा, जो उद्धारकर्त्ता की देह पर बरसता था, चमड़े के तसमे से बना था, और हड्डी या सीसे के नकीले टुकड़ों से जड़ा या भरा हुआ था। ये क्रूरतापूर्वक उसकी पीठ और छाती दोनों के मांस को फाड़ या चीथ रहे थे। इसीलिये भजनसंहिता में यह भविष्यद्वाणी की गयी है कि मसीहा कहेगाः... वे मेरे हाथों और पैरों को छदेते थे। मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूँ; वे मुझे देखते और निहारते हैं (भजनसंहिता 22:16,17)। हां, प्रभु यीशु - हर तरह से सिद्ध - एक दुःखदायी और असहनीय पीड़ायुक्त मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसने जिस कठोर और हृदयविदारक शारीरिक अंगच्छेद या अंगों की कांट छांट का कष्ट उठाया, उससे उसका शारीरिक रूप बिल्कुल भी मनुष्य के समान नहीं रहा अर्थात् उसका शारीरिक पूरी तरह बिगड़ गया।

क्या यह आपको यह समझने में बेहतर ढ़ंग से मदद करता है कि परमेश्वर आपसे कितना अधिक प्रेम करता है?

भावनात्मक कष्टः यद्यपि क्रूस पर चढ़े प्रभु यीशु का शारीरिक कष्ट हमारी मानवीय समझ से परे है, तौभी हम यह जानते हैं कि वह केवल उसके सच्चे या यथार्थ कष्ट का एक भाग था। उसकी शारीरिक पीड़ा ने सिर्फ उसकी गहरी पीड़ा के सतह को स्पर्श किया था।

यीशु ने क्रूस पर महान् अर्थात् बड़ी वेदना का अनुभव किया।

यूहन्ना ने उन भयावह घंटों की घटनाओं को हमारे लिये लिखा हैः

परंतु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें न तोड़ी। परंतु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरंत लोहू और पानी निकला (यूहन्ना 19:33,34)।

मैंने चिकित्सीय अधिकारियों से उनके इस मत को व्यक्त करते हुए सुना है कि लोहू और पानी दोनों की उपस्थिति इस बात का संकेत करती है कि यीशु की मृत्यु एक छेदे गये टूटे हुए हृदय के कारण हुई। कुछ हृदय विशेषज्ञ इस प्राकृतिक प्रक्रिया को आगे समझाते हुए यह सुझाव देते हैं कि जब वास्तव में यीशु का हृदय टूट गया, तब उसका लोहू, हृदयावरण के चारों ओर एक बड़े थैले में प्रवाहित हो गया। यह उस तथ्य की व्याख्या करता है कि जब सैनिक ने उद्धारकर्त्ता के बांयें बगल को भेदा, तब वहां से लोहू और पानी दोनों बाहर आये। भजनसंहिता 69, जो कि मसीह की मृत्यु के बारे में दूसरी विशिष्ट एवं स्पष्ट भविष्यद्वाणियों में से एक है, में हम उसकी हृदय - विदारक पीड़ा की सविष्यद्वाणी युक्त प्रतिच्छाया के बारे में पढ़ते हैंः मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया और मैं बहुत उदास हूँ। मैं ने किसी तरस खाने वाले की आशा तो की; परंतु किसी को नहीं पाया, और शांति देने वाले ढूंढ़ता तो रहा; परंतु कोई न मिला (भजनसंहिता 69:20)। हां, यीशु का अवर्णननीय भावनात्मक कष्ट उसके प्रेमी हृदय को पूरी तरह तोड़ दिया।

जब उसके प्रेमी हृदय को आर-पार भेदा गया, तो मानव जाति

के कष्ट का कुल औसत कष्ट उमड़ पड़ा; और जब उसके निष्कलंक प्राण (उसका प्राण, जो पापियों से अलग था) (इब्रानियों 7:26) - पर नर्क की अशोचनीय, अकथनीय गंदगी लुढ़कने लगी या लिपटने लगी, तब प्रभु यीशु ने टूटे हृदय के कारण अपने प्राण को त्याग दिया।

क्या आपको इससे यह बेहतर ढ़ंग से समझने में मदद मिलती है कि परमेश्वर आपसे कितना प्रेम करता है?

आत्मिक कष्टः अधिकांश लोग प्रभु यीशु की आत्मिक वेदना की अपेक्षा उसके शारीरिक और भावनात्मक कष्ट को जल्दी समझ सकते हैं। इसके बावजूद, यह निश्चित् है कि यीशु ने जो सबसे बड़ा कष्ट सहा, वह यह था कि पिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा के साथ, उसकी अनंत संगति टूट गयी थी।

तीन घंटे के एकांत अंधकार के लिये - 12 बजे से लेकर 3 बजे दोपहर तक - यीशु को पिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा ने त्याग दिया था। उस समय के दौरान - परमेश्वर पुत्र - ऊँची आवाज़ में चिल्लाया थाः हे परमेश्वर, हे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? (मत्ती 27:46)।

उस चौंकाने वाले दिन परमेश्वर की एकता का त्रिएकत्व (जिसने अनंत रूप से अवर्णननीय प्रकाश को ग्रहण कर लिया था) सख्त था। मेरे और आपके पाप के कारण कठोर था। इसके परिणामस्वरूप, जब यीशु क्रूस पर लटक गया, तब परमेश्वर उस पाप के साथ नहीं रह सका, जिसे यीशु ने अपने निष्पाप शरीर में उठा लिया था; ''क्योंकि परमेश्वर ने उसे हमारे खातिर पाप बना दिया

था, जो पापसे अनजान था....'' (2 कुरिंथियों 5:21)।

इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब यीशु की मृत्यु हुई, तब यह दुष्ट जगत तीन घंटों के सुनसान अंधकार में ढ़क गया था।

अच्छा, सूर्य, अंधकार में छिप सकता है

और अपनी विभिन्न महिमा को ढ़क या बंद कर सकता है कता जब सामर्थी निर्माता या सृष्टिकर्ता मसीह, मर गया मनुष्य प्राणी के पाप के खातिर आइज़क वाट्स (1674-1748)।

''परमेश्वर ज्योति है और उसमें कोई अंधकार नहीं है'' (1 यूहन्ना 1:5)। परमेश्वर की पवित्रता का प्रकाश और मनुष्य के पापमय जीवन का अंधकार साथ - साथ कभी नहीं रह सकते हैं। जिस प्रकार, जब आप लाइट जलाते हैं, तब अंधेरा मिट जाता है, ठीक उसी प्रकार, जब आप लाइट बुझाते हैं, तो अंधेरा बना रहता है। जब यीशु ने खोयी या भटकी हुई मानवता के पाप को स्वयं पर उठा लिया, तब अंधकार बना रहा अर्थात् जयवंत हुआ।

यह दुःखद बात है कि यह आत्मिक अंधकार प्रत्येक उस व्यक्ति की भी अनंत दशा बन जायेगा, जो परमेश्वर के छुटकारा देने वाले प्रेम के प्रकाश से मुख फेर लेता है। अंधकार, जो मध्यरात्रि से भी अधिक गहरा है; एकांत या सुनसान कैद से भी अधिक अकेला तथा स्वयं समय से भी अधिक लंबा। क्योंकि ''दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना; क्योंकि उनके काम बुरे थे'' (यूहन्ना

3:19)। यीशु से मुख फेरने का परिणाम आत्मिक अंधकार और मृत्यु - आत्मिक मृत्यु और अनंत मृत्यु के रूप में होगा।

वितेता की दोहाई

शुभ संदेश यह है कि जब अंधकार के वे तीन वीरान या सूने घंटे अपने निष्कर्ष तक पहुंचे, तब यीशु ने दुःख के साथ यह विलाप नहीं किया कि ''मैं खत्म हो गया हूँ''। निश्चय ही नहीं! प्रेम का छुड़ाने वाला कार्य पूर्ण नहीं किया गया था। इसलिये अब उसने विजयी होते हुए यह घोषणा की ''पुरा हुआ'' (यूहन्ना 19:30)।

आपके और मेरे पाप के खातिर पूरी कीमत चुका दी गयी है। पूरा हुआ!

इसके पश्चात्, प्रभु यीशु ने अपने छुटकारे के कार्य को पूर्ण करते हुए, उसने प्रकाश की जिस संगति का आनंद त्रिएक परमेश्वरत्व में हमेशा उठाया था, उसे अनंतकाल के लिये पुनस्थापित किया गया था (यूहन्ना 17:5)। अब पाप के खातिर चुकाने के लिये आपके और मेरे लिये कुछ भी नहीं बचा था। लेकिन अब शैतान आपके खातिर यीशु के द्वारा किये गये पूर्ण कार्य को रद्द करने के लिये कुछ नहीं कर सकता था। शैतान का डंक अर्थात् विषैले सर्प के विष दंत को नष्ट कर दिया गया था।

<u>मृत्यु, मृत्यु के राजकुमार पर विजयी होती है</u>

इसका कारण कि परमेश्वर ने स्वयं पर ''मांस और लोहू'' धारण कर लिया है, यह नही था कि वह आपके और मेरे पाप के खातिर मर सकता है। परंतु यह भी हैः इसलिये जबकि लड़के मांस

और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे, जिसे शक्ति मिली थी अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे (इब्रानियों 2:14)।

जिस प्रकार दाऊद ने गोलियत की ही निजी तलवार से घबड़ाये या बौखलाये गोलियत का नाश किया, उसी प्रकार यीशु ने शैतान के निजी हथियार - मृत्यु - को लिया और उसे पूरी तरह पराजित करने के लिये प्रयुक्त किया। यीशु मनुष्य - पुरूष और महिलाओं - का सच्चा उद्धारकर्त्ता है। वह परमेश्वर का छुटकारा देने वाला है - एकमात्र जन, जो लोगों को अनंत मृत्यु और आत्मिक गुलामी में मुक्त करता है - आत्मिक गुलामी, जो कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये शैतान ने अपना उद्देश्य, उस परमेश्वर के विरूद्ध अपने विद्रोह के खातिर बनाया है, जिसने मनुष्य जाति को अपने निजी स्वरूप में सृजा है।

यह वास्तविक मांस और वास्तविक लोहू की उसकी वह मानवीय देह थी जिससे यीशु ने शैतान को पराजित किया था, मृत्यु पर विजयी हुआ था और कब्र से जीवित हुआ था। इसके बाद, हम स्वर्ग के लिये उसके आरोहण के बारे में पढ़ते हैं, जहां यीशु ने हमारे खातिर एक अग्रगामी के रूप में प्रवेश किया है (इब्रानियों 6:20)। प्रथम बार किसी मनुष्य ने - एक निर्दोष, निष्पाप और सिद्ध पुरूष ने स्वर्ग में प्रवेश किया था। क्रूस पर उसकी मृत्यु के कारण, उसने अब दूसरों के लिये द्वार खोल दिया है; ताकि वे उस में उसके पीछे चलें।

चार्ल्स वेस्ली अपने समय में, इस बात के प्रति निश्चित् था

कि परमेश्वर ने सचमुच उससे प्रेम किया है। उसने यह गीत लिखाः ''अद्भुत प्रेम यह कैसे हो सकता है; तू मेरा परमेश्वर; मेरे खातिर मरे?'' (Amazing love : "How can it be; That thou, my God; Should die for me?")।

परंतु अब मसीह जी उठा है!

परंतु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गये हैं, उनमें पहिला फल हुआ। क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरूत्थान भी आया (1 कुरिंथियों 15:20-21)।

स्वर्गीय डॉ. सेंगस्टर, सर्वाधिक वरदान युक्त निपुण सार्वजनिक व्याखाताओं में से एक थे, जिन्हें मैं ने सुना है। वे अपने प्रभु और उद्धारकता मसीह के बारे में अच्छी बातें कहने के लिये अपनी चांदी की जीभ अर्थात् अच्छे वचन बोलने वाली जीभ का उपयोग करने में प्रसन्न होते थे। डॉ. सेंगस्टर मरने से पहले, मुंह में कैसंर के कारण बात करने में बिल्कुल असमर्थ थे। स्वर्ग जाने से पहले, उन्होंने संकेत करके अपनी पुत्री से एक पेंसिल और पेपर देने के लिये कहा। उस ईस्टर की सुबह, उन्होंने लिखाः ''इसके बजाय कि यह चिलमाकर कहने के लिये ज्वलंत इच्छा नहीं रखने वाली जीभ हमारे पास हो कि ''मसीह जी उठा है'', तो इससे बेहतर होगा कि हमारे पास जीभ ही न हो, जो यही बात चिल्लाकर कहने की ज्वलंत इच्छा न रखती हो!''

जब पौलुस प्रेरित, राजा अग्रिप्पा के सामने खुद पर लगे झूठे

आरोपों के विरूद्ध अपना बचाव करने के लिये प्रकट हुआ, तब उसने उनका ध्यान मसीह के कष्ट सहने और मसीह के पुनरूत्थान दोनों की ओर खीं चा. ''कि मसीह को दुःख उठाना होगा, और वही सब से पहिले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में और अन्य जातियों में ज्योति का प्रचार करेगा'' (प्रेरितों के काम 26:23)।

तथापि, नये - नियम में, प्रभु यीशु मसीह के पुनरूत्थान के पहिले यह वृतांत दिया गया है कि दूसरे लोग शारीरिक रूप से मृत में से जीवित किये गये थे। लाजर और भाई की पुत्री के साथ ही साथ नाईन की विधवा का पुत्र भी था। यद्यपि यीशु ने अद्‌भुत रीति से इन लोगों के शारीरिक जीवन को पुनर्स्थापित किया था; तौभी वे सभी कुछ वर्षो के भीतर फिर मर गये थे। तथापि, प्रभु यीशु मसीह के साथ ऐसा नहीं हुआ था। आज, वह केवल शारीरिक रूप से जीवित नहीं है; परंतु वह आत्मिक और अनंत से भी जीवित है।

मृत्यु और सड़न की एक कब्र, जीवन के सृष्टिकर्त्ता को कैद या बंदी बनाकर कैसे रख सकती थी? चूंकि प्रभु यीशु मसीह, सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर है; इसलिये उसने शून्य से जीवन को अस्तित्व में लाया। चूंकि यीशु, एक सिद्ध पुरूष के रूप में उद्धारकर्त्ता परमेश्वर है; उसने कब्र के बाहर जीवन लाया और स्वर्ग की ओर जानेवाले मार्ग की शुरूआत की - उस प्रत्येक व्यक्ति के लिये जो उसे विश्वास के द्वारा ग्रहण करेगा। उनके लिये यह प्रतिज्ञा की गयी हैः

''परंतु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए

थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)। (इफ़िसियों 2:4-6)।

पौलुस प्रेरित, कुरिंथुस नगर के विश्वासियों को लिखते समय, उन्हें इस बात का स्मरण दिलाता है कि उन्हें उनके पाप परिणामों से इस कारण बचाया गया था; क्योंकि उन्होंने इस बात को ग्रहण कर लिया था (इस मत पर दृढ़ हो गये थे; विश्वास करके उस पर निर्भर हो गये थे) कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा (1 कुरिंथियों 15:3,4)। आज, प्रत्येक सच्चा विश्वासी इस महिमायुक्त तथ्य पर निर्भर रहता है कि ''मसीह, मेरे पापों की खातिर मरा; और फिर से जी उठा, और परमेश्वर में मुझे नया जीवन देता है''।

<u>एक दिन से तीसरे दिन तक</u>

अब आप शायद सोच रहे हैं कि ''यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाने और तीन दिन के बाद कब्र में से जी उठने के बीच के समय में उसे क्या हुआ था''? परमेश्वर ने ऐसे एक प्रश्न की अपेक्षा करते हुए, उसका प्रत्युत्तर दिया:

उसके चढ़ने से और क्या पाया जाता है, केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। और जो उतर गया, यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे (इफ़िसियों 4:9,10)।

हां, बाइबल हमें यह बताती है कि वास्तव में, प्रभुयीशु

मसीह, स्वर्ग पर चढ़ने से पहले पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा। उसके बाद पुराने - नियम के संतों की (जो विश्वास करते हुए मर गये थे) अगुवाई करते हुए अपनी विजय की रेलगाड़ी में ले जाते हुए, वह स्वर्ग पर चढ़ गया। आज, प्रत्येक सच्चा विश्वासी प्रसन्नतापूर्वक इस बात के प्रति आश्वस्त है कि मृत्यु का दुःख उसको महिमा तक ले जाने के लिये सचमुच उसका मार्गद्वार है। यीशु मसीह ने स्वयं ही आश्चर्यजनक रूप से हमारे खातिर शारीरिक और आत्मिक दोनों मृत्यु पर विजय प्राप्त की है।

हे मृत्यु, तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परंतु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवंत करता है (1 कुरिंथियों 15:55-57)।

अनुबंध - उसके अर्थात् यीशु के प्रेम की विरासत

यह जानना एक अद्भुत बात है कि प्रभु यीशु स्वर्ग जाने के मार्ग का पथप्रदर्शक बनने में अग्रणी रहा और अब हम उसकी विजय की में उसके पीछे चल सकते हैं।

यह जानना भी ठीक उतना ही अद्भुत है कि यीशु ने अपने लोगों के खातिर प्रेम में, अपनी मृत्यु से पहले, यह प्रतिज्ञा की कि वह अपने स्वर्गारोहण के बाद, पृथ्वी पर विश्वासियों तक पवित्र आत्मा भेजेगा।

उसने अपने शिष्यों से कहाः

जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है,

उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां वह निकलेंगी। उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक नहीं उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा तक नहीं पहुंचा था (यूहन्ना 7:38-39)।

परंतु अब मैं अपने भेजने वाले के पास जाता हूँ.... और मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे... अर्थात् सत्य का आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता हैः तुम उसे जानते हो; क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुममें होगा.... मेरा जाना, तुम्हारे लिये अच्छा है; क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आयेगा; परंतु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा.... वह मेरी महिमा करेगा; क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बतायेगा (यूहन्ना 16:5; 14:16,17; 16:7,14)।

हमने पहले ही इस बात पर ध्यान दिया था कि परमेश्वर ने अपने पुत्र की मृत्यु में किस प्रकार महिमा प्राप्त की थी? अब आप एक दूसरा प्रश्न पूछ सकते हैंः ''यीशु, आपको और मुझको अपना पवित्रात्मा भेजने के द्वारा कैसे महिमा प्राप्त कर सकता है?''

इस प्रश्न का उत्तर आंशिक रूप से इस तथ्य के द्वारा दिया गया है कि यीशु, प्रत्येक उस विश्वासी के जीवन में, उस विश्वासी के हृदय में प्रवाहित होनेवाले परमेश्वर के प्रेम के द्वारा महिमा प्राप्त कर

सकता है। हम पढ़ते हैंः क्योंकि पवित्र आत्मा, जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है (रोमियों 5:5)। परमेश्वर का निवास करने वाला प्रेम - पवित्र आत्मा के द्वारा सच्चा बना - मानवीय आकर्षण या मोह की सबसे ऊँची मीनार से अत्याधिक परे। जबकि आप विश्वास के द्वारा, क्रूस पर यीशु के पूर्ण किये गये कार्य के लिये प्रत्युत्तर देते हैं, पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में, प्रभु यीशु, आपके माध्यम से दूसरे लोगों को प्रेम करना शुरू करेगा। अति अद्‌भुत!

यह विश्वास करने के लिये कि मसीह आपके पापों के खातिर मर गया और तब इस तथ्य के लिये अपने हृदय में धन्यवाद देना आपके लिये है; ताकि आप परमेश्वर की क्षमा और उद्धारदेने वाले प्रेम के व्यक्तिगत आश्वासन का आनंद उठा सकें।

इसके पश्चात्, प्रभु यीशु मसीह की निवास करने वाली उपस्थिति के लिये अपने जीवन उपलब्ध को उपलब्ध करना या बनाना आपके लिये है; ताकि आप प्रेम रहित संसार के लिये उसके प्रेम की गाड़ी बन सकें।

एक जर्मनी आध्यात्मवादी, जो अपनी विद्वता के लिये विख्यात, ने एक बार यह प्रश्न पूछाः ''परमेश्वर के बारे में आपका सबसे अधिक महत्वपूर्ण विचार क्या है?'' उसने अचंभित होते हुए, बच्चों के कोरस के शब्दों में उत्तर दियाः ''यीशु मुझसे प्यार करता है; मैं यह जानता हूँ, क्योंकि बाइबल मुझे यह बताती है।''

हां, परमेश्वर सचमुच मुझसे प्रेम करता है! और हां, परमेश्वर

सचमुच आपसे प्रेम करता है!

ओह, प्रेम, जो उद्धार की प्रेम करता है!
ओह, अनुग्रह, जिसने उसे मनुष्य तक नीचे लाया,
ओह, प्रबल खाड़ी, जिसे परमेश्वर ने फैला दिया,
कलवरी में!
वहां बड़ी दया थी और मुफ़्त अनुग्रह था,
मुझे कई गुना क्षमा मिली,
वहां मेरी बोझिल आत्मा ने आज़ादी प्राप्त की कलवरी पर।

ईराक से एक पत्र

''मैं एक मुस्लिम (शेल्टी) घर में था। मेरे परिवार ने मुझे सिखाया था कि एक मुस्लिम होने के नाते, मुझे कैसे प्रार्थना और उपवास करना चाहिये। मैं मुस्लिम महिलाओं की तरह पोशाक पहनती थी, मैं अपना चेहरा ढंक कर रखती थी; ताकि मेरे चेहरे को देखने के कारण कोई पुरूष पाप न करे।

''इन सबके कारण, मैं कुछ नहीं करती थी और मेरे पास काफ़ी खाली वक्त रहता था। इसलिये मैं अपने खाली समय का उपयोग की रेडियो कार्यक्रमों को सुनने में इस्तेमाल करती थी और बाइबल के कई संदेश सुना करती थी। एक दिन, मैं ने अपनी भाभी को कुछ सुंदर और रंग बिरंगे चिपकने वाले छोटे-छोटे चित्र () के साथ देखा। तब मैं ने अपना पहला पत्र अपनी भाभी के पते पर लिखा। उत्तर में मुझे यह ''परमेश्वर की खोज'' नामक आपकी पुस्तक प्राप्त हुई।

''मैं ने समझने की कोशिश की कि ''परमेश्वर की खोज'' का अर्थ क्या था। अध्याय 7 में एक प्रश्न हैः ''क्या परमेश्वर सचमुच मुझसे प्रेम करता है?'' विशेष तौर पर, मैं एक पैराग्राफ़ पर रूक गयी, जिसमें यह कहा गया हैः ''परमेश्वर ने क्रूस पर आपके खातिर जो किया, उसके द्वारा, वह आपके प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करता है। जब आप क्रूस का अर्थ समझते हैं, तब आपको किसी और अगले प्रमाण की आवश्यक्ता नहीं है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।''

''मैं ने इस अध्याय को 100 से अधिक बार पढ़ा है। तब मैं ने बिना किसी संदेह के यह समझना शुरू किया कि मेरे लिये क्रूस ही एकमात्र मार्ग है।''

<u>ध्यान देने के लिये रूकें</u>

1. यह प्रमाणित करने का सबसे उचित तरीका कौन सा है कि आप किसी से प्रेम करते हैं?

   क्या यह आपकी कही बातों के द्वारा है?

   क्या यह आपके कार्य के द्वारा है?

2. परमेश्वर ने आपके प्रति अपना प्रेम कैसे प्रमाणित किया है?

3. आप व्यक्तिगत तौर पर, परमेश्वर के प्रेम का प्रत्युत्तर कैसे देंगे?

शल्यचिकित्सा कक्ष (ऑपरेशन रूम) के इलेक्ट-ॉनिक वातावरण में, प्रत्येक सर्जन जीवन के साथ खून अर्थात् लोहू की पहचान करना सीखता है। दोनों अपृथक्करणीय (पृथक न करने या

होने योग्य) हैंः अगर आप एक को गंवाते हैं, तो आप दोनों को गंवाते हैं।

डॉ. पॉल बैंड

अध्याय - 8

मैं जीवन कहां प्राप्त कर सकता हूँ?

मध्यरात्रि का समय जल्द ही आने वाला था। अठ्ठारह घंटे की थकानपूर्ण रेलयात्रा के बीच में, मैं और मेरी पत्नी पेरिस के () रेल्वे स्टेशन पर सैकड़ों साथी यात्रियों के साथ खड़े थे। हम सब धैर्य पूर्वक रेल्वे अधिकारी की प्रतीक्षा कर रहे थे; ताकि वह टिकट देना आरंभ करे और हम अपनी टेन की तरफ़ जा सकें।

वहाँ खड़े लोगों में, बड़ी संख्या में अधिकांश युवा लोग थे। जब डॉरथी और मैं ने उनसे मुलाकात की, तब ऐसा प्रतीत हुआ कि उस भीड़ में प्रत्येक देश का एक प्रतिनिधि यूरोप में मौजूद था। कुछ लड़के और लड़कियाँ, आरामदेय तकिया के बदले में एक कमजोर पूरक के रूप में अपने टाट के झोले या थैले का उपयोग करते हुए, सोने का प्रयास कर रहे थे। जब वे बेफ़िक्र या बेखबर होकर पक्की टेक लगाकर सो रहे थे, तब उनके मित्र उनकी पहरेदारी में खड़े हुए सेंडविच खा रहे थे और बोतल से पानी पी रहे थे।

हमने अपनी प्रतीक्षा के दौरान, इनमें से कई युवा लोगों के साथ बातचीत की और हंसी मजाक किया। उनकी युवा उत्सुकता के बावजूद, जब उनके बाहरी व्यवहार और तौर-तरीके में थोड़ा ढ़ीलापन आया, तब उनमें से अदिकांश लोग इस बात के प्रति सजग एवं फ़िक्रमंद थे कि उन्होंने अब तक उस गायावी 'जीवन' को प्राप्त नहीं किया है, जिसे वे ढूंढ़ रहे थे। शीघ्र ही, हमारा वार्तालाप उस व्यक्ति की ओर उन्मुख हो गया, जो डॉरथी और मेरे साथ यात्रा कर

रहा था; और वह व्यक्ति था - प्रभु यीशु मसीह!

जब हमने इनमें से कुछ अशांत, बेचैन और रोमांचक युवा लोगों से बातें की, तब उन्होंने हमारे साथ खुलकर बातचीत की और अपने लिये ''सच्चा'' जीवन प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। कुछ लोगों को यह आशा थी, कि वह अगले नगर में होगा; कुछ लगों ने सोचा कि वह अगली मित्रता में होगा; दूसरे लोगों ने घबड़ाकर यह विश्वास किया कि वे अगली ड-ग पार्टी (नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले लोगों की पार्टी) में अपने जीवन के अनुभव को विस्तृत करेंगे या बढ़ायेंगे। कुछ लोग महामारी रोग से संक्रमित होने के भय से बड़े चिंतित थे।

अफ्रीका के पिछड़े ग्रामीण इलाकों में, वे इस भयानक बीमारी को ''दुबले व्यक्ति की बीमारी'' कहते हैं। चिकित्सीय भाषा में इसे () के रूप में पहचाना जाता है। जब यह किसी पुरूष, महिला, लड़के या लड़की में पूरी तरह विकसित हो जाता है, तब इसे () के रूप में जाना जाता है। इस बीमारी से संक्रमित होने का भयावह समाचार हमेशा समान रहता हैः तात्कालिक और संपूर्ण विनाशक विश्व में चारों ओर लोग यह जानते हैं कि एड्स () की भयानक विपत्ति 'रक्त या खून की एक बीमारी' है। जबकि रक्त - प्रवाह को जीवन की एक शुद्धिकारक नदी होना चाहिये, वह मृत्यु की एक दूषित नदी बन गया है।

तथापि, मुझे यह स्वीकार करना है कि यद्यपि रक्त एक अत्याधिक अनिवार्य जीवनदायक धारा है; फिर भी मेरे लिये

रूधिरमय दृश्य हमेशा घृणित रहा है। वास्तव में, एक बार अपने असामान्य भय या अरूचि पर नियंत्रण एवं विजय प्राप्त करने के लिये, मैं ने एक निर्भीक प्रयास के तौर पर, शल्यक्रिया वाले एक ऑपरेशन को एक मीनार से देखने के लिये लदन के एक चिकित्सालय में जाने का नियंत्रण स्वीकार कर लिया। जब मरीज अर्थात् रोगी की त्वचा को काटने के लिये औजार त्वचा के नीचे घुसकर चलने लगा, तो मैं फिर से लगभग मूर्छित सा हो गया। मेरे डॉक्टर ने जिसने यह ध्यान दिया कि मैं पसीने तर-बतर होकर म्लान अर्थात् सफेद सा हो चुका था, सुझाव दिया कि मैं अवलोकन कस से बाहर निकल जाऊं। मुझे आगे और देखने के लिये राजी करने या मनाने की आवश्यक्ता नहीं थी!

परंतु रक्त के दृश्य के प्रति किसी व्यक्ति की प्रतिक्रिया को छोड़कर, जीवन और स्वास्थ्य उस व्यक्ति के लिये पुनर्स्थापित किये जा सकते हैं, जो संक्रमित अशुद्ध रक्त को शुद्ध एवं निरोग रक्त देने की प्रक्रिया के कारण गंभीक्षरता पूर्वक टूट रहा हो। आज, आधुनिक विज्ञान की अद्भुत बातों एवं कार्यों के कारण किसी स्वस्थ्य व्यक्ति की शिरा से लिया गया रक्त, बाद में जीवनदायी नदी के रूप में मरते हुए अथवा गंभीर रूप से बीमार रोगी की शिरा में प्रवाहित किया जा सकता है।

चिकित्सीय खोज ने जब रक्त के अद्भुत कार्यों और रहस्यों को खोलना आरंभ किया, उससे काफ़ी पहले, परमेश्वर ने स्वयं यह घोषित कियाः ''क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है... (लैव्य

व्यवस्था 17:11)। डॉ. पॉल ब्रैंड संक्षिप्त रूप से इस बात से सहमत हैं कि रक्त, जीवन के सार या तत्व को रखता हैः ''शल्य चिकित्सा कक्ष के इलेक्ट-ॉनिक वातावरण में, प्रत्येक सर्जन रक्त को जीवन के समान समझना या मान्यता देना, सीखता है। दोनों अपृथक्कणीय अर्थात् अलग न होने योग्य होते हैंः यदि आप एक को गंवाते हैं, तो आप दोनों को गंवाते हैं।''

तथापि, कई लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि यद्यपि रक्त के प्रदूषण जैसे कि () संक्रमण गिनीचुनी बातों के संपर्क में आने पर निर्भर होते हैं, एक अन्य विश्वव्यापी ''बीमारी'' है। ''परमेश्वर ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनायी हैं; और उनके ठहराये हुए समय और निवास के सिवानों को इसलिये बांधा है'' (प्रेरितों के काम 17:26)। इस महामारी युक्त घातक प्रदूषण ने संपूर्ण मानव जाति को पीड़ित किया है। बाइबल में, इस स्त्रोत या उत्पत्ति का पता लगाने पर हम आदम तक पहुंचते हैं, जो सभी क्रमबद्ध तौर पर बारी - बारी आने वाली सभी पीढ़ियों का पूर्वज था।

जबः प्रथम पुरूष, आदम ने पाप किया (1 कुरिंथियों 15:45), तब सभी परवर्ती पीढ़ियाँ (चाहे वे जिस रंग की चमड़ी की हों), रहने के स्थान अथवा जीवन में पड़ाव सभी मृत्यु दंड के अंतर्गत आ गये। बाइबल में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है.... आदम में सभी मर गये .... (1 कुरिंथियों 15:22)। जिस प्रकार प्रदूषित रक्त के माध्यम से () के साथ मृत्यु शरीर में लायी जाती है; उसी प्रकार

पाप के कारण उत्पन्न यह प्रदूषण भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचारित होता रहा है। अगर ऐसा नहीं होता, तो लोग, शारीरिक रोग और मृत्यु को पार किये बिना ही सीधे स्वर्ग चले जाते।

तथापि, परमेश्वर को धन्यवाद, कि जब यीशु का जन्म हुआ, तब रक्त की जीवन दायनी धारा का परिचय मनुष्य जाति से कराया गया था। इस तरह यह हुआ है। जिब्राइल स्वर्गदूत ने मरियम को बताया कि उसे गर्भवती होना है और एक पुत्र को जन्म देना है और उसका नाम यीशु रखा जायेगा। जिब्रइल ने इस शुद्ध अविवाहित कुंवारी को यह भी समझाया कि उसका गर्भधारण किस प्रकार होगा।

स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी; इसलिये पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा'' (लूका 1:35)। जब स्त्री का बीज, पवित्र आत्मा के बीजके द्वारा उर्वर हुआ अर्थात् दोनों का संयोजन हुआ, तब एक आश्चर्यकर्म हुआ। इस नाटकीय घटना में परमेश्वर का जीवन मनुष्य जाति के साथ परिचित हुआ। इसके पश्चात्, जब मरियम के गर्भ में, शिशु ने विकसित होना आरंभ किया, और रक्त भ्रूण में प्रवाहित होने लगा, तब उसका (परमेश्वर का) बहुमूल्य लोहू व्यभिचार और दूषण से रहित था। हां, प्रभु यीशु का लोहू स्वयं ही जीवन था!*

मानव रक्त, अविश्वसनीय रूप से एक जटिल पदार्थ है। यहां तक कि आज, जो लोग चिकित्सीय अनुसंधान में संलग्न हैं, वे इस अद्भुत द्रव के जीवनदायी रहस्यों के बारे में और अधिक जानकारी

मालूम करना चाहते हैं। सामान्य शब्दों में, मानव शरीर में रक्त के कुछ कार्य का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता हैः शरीर का शुद्धिकारक, जीवन दायक और रोग से मुक्त करने वाला। यह इतना अधिक हो सकता है, यहां तक कि यह जानने के लिये इतना अधिक आश्चर्य जनक भी हो सकता है कि परमेश्वर ने आपके और मेरे लिये एक ऐसी रक्त - धारा उपलब्ध की है, जो समान होने के बावजूद, कल्पना से अधिक आश्चर्यकारी उद्देश्यों से भरपूर है। वह रक्त, उन सबके लिये वहां है, जो एक ''सच्चा'' जीवन तलाश कर रहे हैं। किसी पापी के लिये, यीशु का लोहू, पाप से शुद्धि प्राप्त करने के लिये परमेश्वर का शुद्धिकार एजेंट (अभिकर्ता) है। आत्मिक तौर पर मृत लोगों के लिये, उसका बहुमूल्य लोहू जीवन प्रवाहित एवं प्रवेश करता है। आत्मिक रूप से जीवित लोगों के लिये, यीशु का लोहू, शैतान के आक्रमणों से रक्षा करने वाला परमेश्वर का रक्षक एजेंट या अभिकर्ता है। हम इस बहुमूल्य लोहू के बारे में पढ़ते हैंः

क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी, सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। परंतु निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ (1 पतरस 1:18,19)।

लोहू : उसकी शुद्धिकरण शक्ति

कुछ समय पहले, समाचार पत्रों में यह बताया गया था कि एक लालची यातायात कंपनी ने रोगाणुरहित स्वास्थ्यवर्द्धक वस्तुओं

के लिये समझौता किया था। इस कंपनी ने अपने लाभ को बढ़ाने के लिये एक टेंक ट-क में जहरीले पदार्थों या सामग्रियों को एक दिशा में ले जाने का प्रबंध किया था और वापसी यात्रा पर उसी टेंक में द्रवयुक्त खाद्य पदार्थों को लाने का बंदोबस्त था। इसका परिणाम यह हुआ कि कई लोग गंभीर रूप से बीमार पड़ने लगे।

तथापि, मानव शरीर में, परमेश्वर ने एक अद्‌भुत यातायात प्रणाली बनायी है, जो कोशिकाओं के लिये भोजन ले जाती है और उसी समय अशुद्ध पदार्थों अर्थात् गंदगी को बाहर ले जाती है या निष्कासित करती है। परमेश्वर की सिद्ध अर्थात् त्रुटिहीन सृष्टि के कारण, रक्तधारा के अंदर किसी भी प्रकार का प्रदूषण या गंदगी स्थायी नहीं रह सकती है। यहां आश्चर्य की बात यह है कि मानव शरीर की कोई कोशा चौड़ाई में एक रक्त वाहिनी की तुलना में हमारे सिर के एक बाल से अधिक चौड़ी नहीं होती है। यदि इन कोशाओं से जहरीले पदार्थों को अलग नहीं किये जाते हैं, तो इसके परिणाम रोग और मृत्यु होंगे।

ठीक इसी प्रकार परमेश्वर इस बात वर्णन किया, जब उसने हमारे जीवन से पाप की दूषित उपस्थिति को हटाने से संबंधित अपनी विधि की व्याख्या की। ऐसा शुद्धि करण सिर्फ़ यीशु के बहुमूल्य लोहू के द्वारा ही हो सकता हैः परंतु यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक - दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7)। आगे यह भी बताया गया है कि हमारे पापों की क्षमा के लिये इसके

अतिरिक्त कोई - दूसरा मार्ग नहीं है; क्योंकि बिना लोहू बहाए, क्षमा नहीं होती (इब्रानियों 9:22)।

लोहूः इसकी जीवन प्रदान करने वाली शक्ति

रक्त का एक अन्य कार्य जीवन को जीवित रखते और संभाल ने के लिये संपूर्ण शरीर में आवश्यक जल और पोषण सामग्री ले जाना है। यदि रक्त, शरीर की कोशाओं और उसके उत्तकों तक पहुंचने में असफ़ल हो जाता है, तो शरीर की वे संरचनाएँ शीघ्र ही मर जाती हैं। इस प्रकार, जब रक्त का संचार होना बंद हो जाता है, तब शरीर मर जाता है। यह बिल्कुल स्पष्ट बात है कि रक्त में जीवन है।

यह महसूस करते हुए, हमें प्रभु यीशु मसीह के ये वचन स्मरण आते हैं, जिसने उसके शिष्यों को चकित कर दिया, जिसमें उसने अपने निजी रक्त के बारे में जोर देते हुए कहाः

मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका लोहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, अनंत जीवन उसी का है और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लोहू वास्तव में पीने की वस्तु है (यूहन्ना 6:53-55)।

इसके बावजूद, यीशु ने अपने कहने या कथन के सच्चे अर्थ को स्पष्ट करना, जारी रखा। उसने कहा... जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है और मैं उसमें (यूहन्ना 6:56)। आत्मिक जीवन के सच्चे स्त्रोत को समझना कितने

आनंद की बात है! यीशु का लोहू, पापियों को उनके पाप से छुड़ाने के लिये बहाया गया था। उसके बहाये हुए रक्त के कारण, अब हम उसके हिस्सदारी के जीवन में भाग ले सकते हैं अर्थात् भागीदार बन सकते हैं। जब प्रभु यीशु ने यह कहाः ''मैं उसमें''! अद्भुत!, तब उसने अपने लोहू के पीने के सच्चे अर्थ को समझाया।

विश्वासियों के भीतर निवास करनेवाली मसीह की उपस्थिति के पुनरूत्थित सामर्थ का व्यक्ति ळगत तौर पर अनुभव करते हुए, वे विजयी होकर विजेता के रूप में यह गवाही दे सकते हैंः पुनरूत्थित मसीह, अब मुझ में निवास करता है!'' ऐसे लोगों के लिये प्रभुभोज के समय रोटी और दाखरस में भागीदार होना, आभार प्रकट करने और गवाही देने की एक साधारण और प्रतीकात्मक प्रक्रिया है।*

जब कोई विश्वासी ऊपर से जन्म लेता है, तब पवित्र आत्मा के सामर्थ के द्वारा उसके जीवन में (के लिये), यीशु के बहुमूल्य लोहू की अंकुरित जीवन प्रदान करने वाली शक्ति संचारित होती है।

लोहू : इसकी सुरक्षा करने वाली शक्ति

इसके अतिरिक्त, मानव शरीर के लोहू का एक दूसरा आश्चर्यकारी कार्य है। यह न सिर्फ़ जीवन शुद्धिकारक और जीवनदायक लोहू है; परंतु यह जीवन रक्षक लोहू भी है।

जब भारतवर्ष में () (शरीर सूजने की बीमारी) का पता चला, तब समस्त संसार में भय व्याप्त हो गया। उस देश अर्थात् भारत में ही बनाये गये अन्तर महाद्वीपीय जेट विमानों को संक्रमण निवारण के लिये धुंआ से भरा जा रहा था और कुछ मामलों में

यात्रियों को अस्थायी तौर पर चिकित्सीय जांच - पड़ताल के लिये रोग से संक्रमित लोगों से अलग रखा जा रहा था। दूसरे देशों तक इस महामारी घातक रोग के फैलाव को रोकने के लिये, भारत वर्ष जाने वाली सभी पखर्ती उड़ानों में अस्थायी रोक लगा दी गयी थी।

शारीरिक सूजन के इस रोग के भय और आतंक के बिना भी, मानव शरीर पर हमेशा बाहरी और प्राणधातक जीवाणुओं की बड़ी संख्या में बमावारी अर्थात् आक्रमण होता रहता है। परंतु रक्त में आक्रमण रोकने की एक अद्‌भुत प्रणाली होती है। यह जीवन रक्षक धारा में विषनाशक एवं अन्य विशिष्ट पदार्थों को लेकर प्रवाहित होता है, जो जीवाणुओं के प्रवेश के विरूद्ध पद्धति या संस्थान का बचाव करता है। जब इस तरह का प्रवेश पाया जाता है, रक्त के सफेद कण (प्राथमिक तौर पर बचाव के उद्‌देश्य से) नाटकीय ढ़ंग से संख्या में बढ़ जाते हैं और बचाव करने की पद्धति में कूद पड़ते हैं।

यह जानना कितना आश्चर्यजनक है कि प्रभु यीशु मसीह के लोहू की भी, मानव रक्त की अद्‌भुत शक्ति के अत्याधिक समान ही जीवन रक्षा करने की सेवकाई करता है। वह यीशु का लोहू ही है, जो विश्वासी को शैतान की शक्तियों की निरंतर बमबारी अर्थात् आक्रमण से सुरक्षित रखता है। अंत के समय में शैतान और परमेश्वर के लोगों के बीच युद्ध के बारे में की गयी भविष्यद्वाणी में, हम पढ़ते हैंः और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवंत हुए और उन्होंने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली (प्रकाशित वाक्य 12ः11)।

आप भी, यीशु के बहुमूल्य लोहू की रक्षा करने वाली शक्ति के द्वारा शैतान की गंदी और दूषित उन्नति पर जयवंत हो सकते हैं।

शैतान के द्वारा आदम और हव्वा को मोहवश करने अर्थात् बहकाने के तुरंत बाद, शैतान पर यीशु की विजय की भविष्यद्वाणी की गयी थी। इसके बाद, प्रभु परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि स्त्री का बीज, शैतान के विनाश का कारण होगा। ''और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इस स्त्री के वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा'' (उत्पत्ति 3:15)। स्त्री का बीज, शैतान के सिर को कुचलेगा; परंतु इससे पहले कि सर्प, मसीहा की एड़ी को डसे हां, वह स्वयं प्रभु यीशु मसीह ही स्त्री का बीज था, जिसने अपना बहुमूल्य लोहू बहाया; ताकि ...

''मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे (इब्रानियों 2:14)।

पेरिस के गेयर सेंट लाजारे स्टेशन पर माया के पीछे भागने वाले जिन विद्यार्थियों से हमारी मुलाकात हुई थी, उनके ठीक विपरीत, अनेक दूसरे विद्यार्थी हैं; जिन्होंने सच्चे जीवन के स्त्रोत को खोज लिया है।

कुछ समय पहले, डॉरथी और मेरी मुलाकात ऐसे सैकड़ों यूगांडा निवासियों से हुई, जिन्हें इस बात के प्रति आश्वस्त किया गया था कि उन्होंने सच्चा जीवन प्राप्त कर लिया है। प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लोहू में, उन्होंने एक हृदय शुद्धिकारक, जीवनदायक

और शैतान का विरोध या सामना करनेवाली शक्ति का पता लगा लिया था। वे सचमुच यह गवाही दे सकते हैं कि उनके लिये पुरानी बाते बीत गयी है और सब बातें नयी हो गयी हैं।

यद्यपि यह बात, कीनिया में राजदूत - कार्यालय के अधिकारियों की सलाह के विरूद्ध थी; जिन्होंने हमें आनेवाले संभावित खतरे की चेतावनी दी थी, फिर भी मेरी पत्नी और मैं, परमेश्वर के आत्मा के बताये अनुसार यूगांडा की ओर निकल पड़े। परमेश्वर ने यूगांडा के पास्टरों और उनकी पत्नियों के साथ हमारे विलंबित सेमीनार का समय सुनियोजित किया था। बाद में, जब हमने पता लगाया कि उसने पहले ही से हमारी वापसी की उड़ान की भी योजना बना ली थी। (ऐसा हुआ कि एंटेबी छोड़ने वाला हमारा विमान, एक दूसरे मिलीटरी कूप (सैन्य दल) से पहले, अंतिम विमान था)।

हवाई अड्डे पर हमारे पहुंचते ही तुरंत ही हमें तनाव और भय के वातावरण का अहसास हो गया था। हम जिस भ्रमपूर्ण और गंदगी से भरी स्थिति का सामना किया, वह अवर्णननीय है। उस क्षेत्र की कुछ कार में एक कार को हवाई अड्डे से उस सड़क पर ले जाने के लिये उपलब्ध किया गया था, जो अब तक बमबारी के परिणामस्वरूप खड्डों से भरी थी। थोड़ी ही दूरी के बाद, हमें एक उदंड सैनिक ने बंदूक की नली दिखाकर गिरफ़्तार कर लिया। हमें यह मालूम नहीं था कि वे सरकारी सैनिक थे, या सरकार विरोधी सैनिक थे अथवा सैनिकों की पोशाक में ठग थे। यहां ध्यान देने योग्य बात

यह थी, कि उन्होंने शीघ्र ही हमारे डाइवर को पहचान लिया कि वह उनके निजी अनुसूचित जन जाति वर्ग में से था; इसलिये उन्होंने हमें बिना हमें लूटे या चोट पहुंचाये ही आगे जाने की अनुमति दे दी।

अपने गंतव्य स्थल पर पहुंचने पर, मैं ने और मेरी पत्नी ने हमारे सेमीनारों के लिये सभा स्थल को पा लिया, जो कि भय से आतंकित एक समुदाय के बीच में खड़ा अंधेरा और गंदा एक ढ़ांचा था। जब पास्टर और उनकी पत्नियां पहुंचे, तब इन सबके बावजूद, हम अपने आस पास स्थित इन सब चीजों को भूल गये। स्वयं परमेश्वर ने हमें अपनी महिमा और अपनी उपस्थिति के अहसास से अभिभूत करते हुए हमें अनुग्रहित किया। यूगांडा की वे सभाएँ, हमारे स्मृति - पटल में हमेशा के लिये, जीवित परमेश्वर के साथ हमारी मुलाकात के उच्च-शिखरीय अनुभव के रूप में खुदी रहेंगी अर्थात् लिखी रहेंगी।

सभी पास्टर और उनकी पत्नियाँ ध्यानभग्न होकर, डॉरथी और मेरे द्वारा बतायी गयी बाइबल से परमेश्वर की सच्चाई को दिन में आठ घंटे तकलीफ़देय बेंचों में बैठ कर सुनते थे। जब मैं पढ़ा था, तब मेरी पत्नी, विभिन्न संदेश की रूपरेखाओं को पुराने काले तख्ते पर लिखती थी; ताकि श्रोताओं को उन्हें पेपर के टुकड़ों में नोट्स के रूप में लिखने में मदद मिल सके। अचानक ही, द्वार पर थपथपाने की आवाज आयी। हालांकि शराबी लोगों में से एक ने अपनी राइफ़ल को प्रवेशद्वार पर तान दिया था, लेकिन उसके साथी ने भीड़ को चीरते हुए आकर उसकी राइफल को दिशा को मोड दिया, जिसे उसने

डॉरथी के हृदय की ओर तान रखी थी।

''आइये, हम सब प्रार्थना करें कि यह प्रिय व्यक्ति यीशु को जान सके''; यह डॉरथी ने धीरे से कहा।

कुछ क्षणों के बाद, जो मुझे एक अनंतकाल जैसे प्रतीत हुए थे, मेरे अनुवादक ने अत्याधिक अचंभित होते हुए, मेरी ओर देखकर कहाः ''उस शराबी सैनिक ने जो कहा, मुझे उस पर यकीन नहीं होता है - उसने अभी - अभी कहा कि मैं इस स्त्री के परमेश्वर को जानना चाहता हूँ।''

इन सबके बावजूद, अनुवादक ने कहा कि मैं ने जो दृश्य देखा है, मैं उसे कभी नहीं भूलूंगा। चाहे कारण जो भी रहा हो - या तो उस प्रवेश करने वाले शराबी व्यक्ति को एक स्वर्गदूत जबरदस्ती युटने टेकने के लिये विवश कर रहा था, या फिर यह परमेश्वर की पवित्रता और शक्ति के श्रद्धामिश्रित भय का अहसास था, जो हमारी सभाओं में जयवंत होकर उस शराबी सैनिक के लिये आवश्यक्ता से अधिक हो गया था अथवा यह दीनता की एक स्वेच्छापूर्ण प्रक्रिया थी, जो उसके हृदय की गहरी जरूरत ''मैं नहीं जानता हूँ'', को खुले तौर पर प्रकट करने के लिये उत्प्रेरित कर रही थी। मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि उस विशिष्ट क्षण में, बंदूक अर्थात् राइफ़ल की नली धीरे - धीरे नीचे की ओर सरक गयी। इसके पश्चात्, जब वह सैनिक अपने युहनों पर झुका, तब वह विनाशकारी, मारने के लिये तैयार हथियार भूमि पर गिर पड़ा।

यह निर्देश की सभा के ठीक तुरंत बाद हुआ! डॉरथी यह

जानती थी, उसने कहाः ''मेरे पीछे यह प्रार्थना करें''। तब उसने उसके भ्रमजाल में फंसे मायावी और जरूरतमंद दरिद्र आत्मा की क्रमबद्ध स्तरों में आगे बढ़ने में अगुवाई करते हुए, क्रूस के चरण तक पहुंचाया - पापी लोगों का उद्धार कर्त्ता - जहां उसने यीशु के लोहू के द्वारा सभी सच्चे जीवन का स्त्रोत पा लिया था।

मैं इस अनुभव को अभी क्यों बता रहा हूँ? क्योंकि उस यादगार सभा में आगे क्या हुआ था, यह बताना चाहता हूँ।

हमारी सभा में कई ऐसे लोग थे, जिनमें भयभीत होने की हर संभावना थी और यहाँ तक कि वे उस प्रवेश करने वाले व्यक्ति से घृणा भी कर सकते थे; जिसने अत्याधिक हिंसक रूप से हमारी सभा में घुसने के लिये अपना रास्ता बनाया था। हमारे बीच में ऐसे भी लोग थे, जिन्हें हाल ही में जान से मारने की धमकी दी गयी थी। सभा में उपस्थित एक पास्टर की अंगुलियों को एक सैनिक ने उसे जान से मारने के असफल प्रयास के दौरान जला दिया था। लेकिन उनके व्यक्तिगत रूप से प्रभु यीशु को जानने और प्रेम करने के कारण, इन सब लोगों ने उसके चारों ओर एकत्र होकर उसे ग्रहण किया, गले लगाया और मसीह में इस नये भाई के लिये प्रार्थना किया।

तब उन्होंने बिना किसी संगीत की संगति के, लेकिन महिमायुक्त अफ्रीकी स्वरों के समान ताल में गीत गाने लगे। जब मैं ने गाये हुए गीत के शब्दों पर ध्यान दिया, तब मैं अभी भी अपने हृदय को आदर युक्त भय से भरपूर पाता हूँ।

ओह, यीशु का लोहू

ओह, यीशु का लोहू
ओह, यीशु का लोहू
जो मुझे पाप से शुद्ध करता है।

यदि उस दिन हमारे विश्व के अगुवागण हमारे साथ होते, तो उन्होंने अपनी आंखों से अंतर - अन्यजातीय (अनुसूचित जन जाति), अंतर वर्ण या वर्गीय और अंतराष्ट-ीय मतभेदों के लिये परमेश्वर के समाधान को भी अवश्य देखा होताः।

और उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे.... (कुलुस्सियों 1:21)।

हां, वे लोग, जिन्हें परमेश्वर के साथ एक सही या उचित संबंध में लाया गया था,... अब उसके (मसीह के) लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पायेंगे'' (रोमियों 5:9-10)।

ध्यान देने के लिये रूकें

1. क्या आप बड़े अक्षर ''ज'' के साथ सचमुच ''जीवन'' की इच्छा रखते हैं? यही वह जीवन है जिसका प्रभु यीशु ने यह कहते हुए वर्णन किया हैः मैं इसलिये आया कि वे जीवन पायें और बहुतायत से पायें (यूहन्ना 10:10)।
2. बाइबल के अनुसार, मानव शरीर में जीवन कहां पर पाया

जाता है? (लैव्यव्यवस्था 17:11 पढ़ें)।

3. प्रभु यीशु के बहुमूल्य लोहू का अनंत अर्थ और महत्व क्या है?

क्या आप उसकी शुद्धिकरण शक्ति में भरोसा करते हैं?

क्या आप उसकी जीवन दायक शक्ति में भरोसा करते हैं?

क्या आप उसकी सुरक्षा प्रदान करनेवाली शक्ति में भरोसा करते हैं?

प्रभु यीशु ने कहाः पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाये; तौभी जीएगा; और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनंतकाल तक न मरेगा (यूहन्ना 11:25,26)।

निश्चय ही, इनमें से किसी का भी उपयुक्त वर्णन ध्वनि या आवाज़ के माध्यम से नहीं किया जा सकता है - किसी चित्रकार के चित्र की सिद्धता, मानव जाति की चमक या कांति, प्राकृतिक भू-दृश्य का वैभव। दृष्टि की आवश्यक्ता है।

अध्याय - 9

मैं परमेश्वर के परिवार का हिस्सा या अंग कैसे बन सकता / सकती हूँ?

सन् 1940 के आरंभ के दौरान, चिकित्सीय विज्ञान ने आंखों की शल्य - क्रिया के क्षेत्र में बड़ी प्रगति कर ली थी। इतनी अधिक उन्नति कि वास्तव में, किसी हाल ही में मृत व्यक्ति आंखों से स्वस्थ्य कॉर्निया निकालकर किसी दूसरे अंधे व्यक्ति की जरूरत मंद आंखों में लगाना संभव हो गया। डॉ. सेंगस्टर ने हमें प्रथम सफल कॉर्निया रोपण के परिणामों को अपनी आंखों से देखने के बारे में हमें बताया।

सूर्योदय से बहुत पहले, डॉ. सेंगस्टर, दो लोगों के साथ इंग्लैंड के सुंदर सुरे डाऊन्स में गये। उनमें से एक महिला थी, जो जन्म से ही अंधी थी; और दूसरा व्यक्ति उसकी आंख का सर्जन था। उसके ऑपरेशन के बाद, मरीज की आंखों (उसकी आंखों) को दिन के किसी भी प्रकाश से सुरक्षित रखने के लिये उसकी आंखों में पट्टियों की कई तह से बांध दिया गया था। धीरे - धीरे उन्हें हटा दिया गया था। वह प्रकाश के प्रति एक नयी संवेदन शीलता से अवगत हो चुकी थी और अत्याधिक उत्सुक थी। अब सूर्योदय से पहले, इस महिला की आंखों से, जिसने पहले कभी नहीं देखा था, शेष अंतिम पट्टी को हटा दिया गया था।

उस दिन सूर्योदय अपेक्षाकृत अधिक महिमायुक्त न हो सका, जब सुबह के सूर्य ने क्षितिज से ऊपर झांका। छाया छोटी होने लगीं

और हरी पत्तियां प्रातः की शोभा की बूंदों पर अपनी नाजुक सुंदरता का काला प्रकाश दर्शाने लगीं। संपूर्ण दृश्य उस महिला के लिये सूक्ष्म मनोरंजन प्रस्तुत कर रहा था, जो अपने जीवन में पहली बार देख सकती थी। उसने अपने गालों पर बहती हुई आंसुओं की धारा के साथ अचंभित होकर कहाः ''ओह, आपने मेरे लिये वर्णन करने का प्रयास किया; परंतु मैं ने कल्पना नहीं की थी कि कोई चीज़ इतनी अधिक अद्‌भुत हो सकती है!'' तब वह परमेश्वर की सृष्टि की शोभा के सामंने आदरयुक्त भय के साथ चुपचाप बैठ गयी।

आप उस व्यक्ति के लिये लाल रंग का वर्णन कैसे करेंगे, जिसने कभी उसे देखा नहीं है? अथवा ऐसे व्यक्ति के सामने सूर्योदय का नाटक कैसे प्रस्तुत करेंगे, जिसकी आंखों ने कभी प्रकाश का प्रत्युत्तर नहीं दिया है? यह अवश्य ही असंभव होगा। वे शब्द, जो दृष्टिगत सौंदर्य का वर्णन करते हैं, उस समय वे बहुत थोड़ा अर्थ रख सकते हैं या समझा सकते हैं, जब ऐसे श्रोता के कानों में पड़ते हैं, जिसके पास संकेत या निर्देश का कोई दृष्टिगत ढ़ांचा नहीं होता है। किसी चित्रकार के चित्र की सिद्धता, मानव जाति की कांति या चमक, प्राकृतिक भूदृश्य का वैभव - निश्चय ही ध्वनि या स्वर के माध्यम से उपयुक्त रीति से बखान या वर्णन नहीं किये जा सकते हैं। दृष्टि का होना, आवश्यक है।

ठीक इसी कठिनाई का सामना उस समय करना पड़ता है, जब कोई विश्वासी, आत्मिक सुंदरता का वर्णन, किसी अविश्वासी व्यक्ति के लिये करने का प्रयास करता है। मेडीकल कॉलेज के एक

विद्यार्थी से बात चीत करने के दौरान, जो लंदन के () में अंतिम परीक्षा के लिये अध्ययन कर रहा था; मैं ने परमेश्वर के प्रेम के चमत्कार को समझाने का प्रयास किया। उस विद्यार्थी ने उत्तर दियाः ''मैं उसे बिल्कुल नहीं देख सकता हूँ''। मैं समझ गया; परंतु मैं ने वार्तालाप को थोड़ा आगे और खींचते हुए कहाः ''नहीं, मुझे तुम पर संदेह नहीं है कि तुम नीं समझ सकते हो; क्योंकि तुम उस व्यक्ति के समान हो, जो एक अंधेरे कक्ष में रहता है। मैं जानता हूँ कि वह कैसी बात है; मैं स्वयं आत्मिक अंधकार में रह चुका हूँ; परंतु अब मैं बाहर हूँ, जहाँ परमेश्वर के प्रेम का सूर्य चमक रहा है''। मैं ने कहाः ''डेविड, यदि तुम परमेश्वर के प्रेम को समझना चाहते हो, तो तुम्हें उस अंधेरे कक्ष से निकलकर परमेश्वर के सूर्यप्रकाश में आना चाहिये।'' उस दिन डेविड ने घुटनों पर गिर कर अपने पाप की क्षमा के लिये और उसके जीवन में प्रवेश करने के लिये प्रभु यीशु से प्रार्थना की। उसने अपने घुटनों से उठते हुए, जो कहा मैं उसे कभी नहीं भूलूंगाः ''मैं ने कभी नहीं सोचा था कि वह इस तरह आश्चर्यजनक हो सकता है!''

ठीक जिस प्रकार शारीरिक दृष्टि, मानव अनुभव के लिये परमेश्वर की सृष्टि की शोभा का वर्णन करती है, उसी प्रकार मानव आत्मा के लिये आत्मिक दृष्टि परमेश्वर की उपस्थिति, उसके सामर्थ और प्रेम की वास्तविकता का वर्णन करती है।

प्रभु यीशु ने अपने स्वर्गारोहण के बाद, प्रेरित यूहन्ना के माध्यम से कहते हुए, लौदी किया नगर में, लोगों की आत्मिक दशा

के बारे में अचंभित करनेवाली एक पहचान बतायी। उसने उनसे कहाः ''तू जो कहता है कि मैं धनी हूँ और धनवान हो गया हूँ, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं है और यह नहीं जानता कि तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और अंधा और नंगा है'' (प्रकाशितवाक्य 3:17)। क्या आप एक अंधे व्यक्ति की कल्पना कर सकते हैं, जो अपनी दुःखद दशा को नहीं जानता है? आत्मिक अंधेपन की पहचान होने के बाद, प्रभु यीशु ने अपना उपचार या इलाज बताना जारी रखा। ''इसीलिये मैं तुझे सुझाव देता हूँ कि अपनी आंखों में लगाने के लिये सुर्मा ले कि तू देखने लगे.... (प्रकाशितवाक्य 3:18)। वह उपचार कितना महत्वपूर्ण है! आत्मिक अंधेपन के लिये आत्मिक दृष्टि की शल्यक्रिया आवश्यक होती है, जो पवित्रआत्मा का कार्य है।

जब पहली बार आपने जन्म लिया था, तब वह आपका शारीरिक जन्म था। परंतु उसने आपको आत्मिक दृष्टि और समझ प्रदान नहीं किया। यदि आप आत्मिक अंधकार से परमेश्वर की महिमा के ज्ञान के प्रकाश में जाने के लिये अपना मार्ग ढूंढ़ रहे हैं (2 कुरिंथियों 4:6), तो आपको दुबारा अर्थात् दूसरी बार जन्म लेने की जरूरत है। यीशु ने नीकुदमुस से कहाः

क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचंभा न कर कि मैं ने तुझ से कहा कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है (यूहन्ना 3:6,7) यदि कोई नये सिरे से न जन्मे, तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता (यूहन्ना 3:3)।

इसलिये अगर आप परमेश्वर का राज्य देखना चाहते हैं, तो आपको भी पुनः अर्थात् दूसरी बार जन्म लेना आवश्यक है।

प्रत्येक अन्य मानव प्राणी की तरह, आपका जन्म भी परमेश्वर द्वारा आकृति प्रदान किये गये एक खालीपन के साथ हुआ है, जो आपके जीवन में है तथा भरपूर होने के लिये दोहाई देता है। यह आत्मिक रिक्तता या खाली पन, केवल पुनरूत्थित मसीह की आने वाली और भीतर निवास करने वाली उपस्थिति से संतुष्ट की जा सकती है। जब आप उसे अपने जीवन में अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करते हैं, तब उसकी मृत्यु का उद्देश्य और उसकी मृत्यु की आवश्यक्ता आपके जीवन में फलवंत होंगे। वह सिर्फ आपको आपके पापों से क्षमा देने के लिये ही नहीं मरा; वह इसलिये भी मरा ताकि आपका हृदय उसका निवास स्थान बनने के लिये आत्मिक रूप से शुद्ध स्थान बनाया जा सके। इसके साथ ही साथ यह अनिवार्य है कि आपके हृदय में उसके आकर रहने से पहले आपके पाप क्षमा किये जा सकें।

एक अफ्रीकी युवा विश्वासी के साथ वार्तालाप करने के दौरान, मुझे यह मालूम हुआ कि उसके मन में अपने समुदाय के युवा लोगों के मसीह के बारे में शुभ - संदेश बताने का तीव्र बोझ है। अगले सप्ताह मुझे लगभग दो सौ पास्टरों को बाइबल से शिक्षा देने के लिये आमंत्रित किया गया था; इसलिये मैं ने उसे हमारे साथ शामिल होने का नियंत्रण दिया। जिस स्थान पर सभी पास्टर लोग एकत्र होने वाले थे, डालांकि हम उस जगह से कई सौ मील दूर थे; फिर भी मैं ने

यह सुझाव दिया कि वह लंबी और उबड़-खाबड़ सड़क पर बस से यात्रा करके हम तक पहुंचे विलियम थकामांदा पहुंचा, लेकिन परमेश्वर और उसके वचन के बारे में अधिक सीखने के लिये सक्षम होने के कारण अत्याधिक प्रसन्न था। विलियम ने भीड़ से खचाखच भरी बस में यात्रा नहीं की थी। बस की यात्रा सिर्फ कॉन्फ़रेंस (सम्मेलन) तक पहुंचने के लिये उसका स्पष्ट साधन थी। उसका यथार्थ लक्ष्य उसकी यात्रा के अंत में उसके खातिर प्रतीक्षारत बात थी।

इसी तरह, प्रभु यीशु जानता था कि आपके साथ वह संगति कर सकें - इस उद्देश्य के लिये आपके जीवन में उसके प्रवेश करने के खातिर सिर्फ यह मार्ग है कि आप अपने हृदय में उसके लिये एक मार्ग बनायें, ताकि आपका हृदय पाप से शुद्ध हो सके। यद्यपि आपके पापों की क्षमा अनिवार्य थी; तौभी मसीह में आपका नया जीवन और परमेश्वर के साथ संगति करने की आपकी क्षमता आपके लिये उसकी अंतिम इच्छा थे। क्या आप इससे कम किसी बात या चीज़ से संतुष्ट हो सकते हैं? अंततः, मसीह के साथ यह व्यक्तिगत संबंध ही लक्ष्य था, जिसके खातिर आपको सृजा गया था।

यह जानना कि मसीह, आपके हृदय में रहता है, यह जानना है कि वह अनंत जीवन यहां और अभी आरंभ हो गया है। मसीह की आंतरिक निवास करने वाली उपस्थिति, उसके जीवन को आपके जीवन में लाती है।

और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया

हैः और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है (1 यूहन्ना 5:11,12)।

इस प्रकार, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मेरे मित्र डेविड ने प्रभु यीशु से अपने पाप की क्षमा मांगने और उसे अपने प्रवेश करने के लिये प्रार्थना करने के बाद, अचंभित होकर कहाः ''मैं ने यह कभी नहीं सोचा था कि वह सब इतना अद्‌भुत हो सकता है!''

परंतु कैसे?

जब लोगों ने पतरस को यीशु के जीवन, उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के बारे में प्रचार करते हुए सुना, तब परमेश्वर ने उन्हें यह इच्छा प्रदान की कि वे उसे उद्धारकर्त्ता के रूप में जानें। पवित्र आत्मा ने उनके लिये वही किया, जो वह आपके लिये कर रहा है। उन्होंने पतरस को उन्हें यह बताते हुए सुना कि यीशु, प्रभु था () और परमेश्वर का मसीहा था। यीशु कौन है, इस नयी समझ ने उनमें, आत्मविभोर करनेवाले निश्चय का अहसास और उनके उद्धार की आवश्यक्ता का अहसास उत्पन्न किया। जब उन्होंने क्रूस पर चढ़ाये गये - उद्धारकर्त्ता - को उनके द्वारा ठुकराने पर ध्यान दिया, तब हमें यह बताया गया है कि उनके हृदय छिद गये और वे सच्चे दिल के साथ यह पूछने लगे कि भाइयो, हम क्या करें? (प्रेरितों के काम 2:37)।

पतरस ने उन्हें पहला प्रत्युत्तर में पश्चाताप करने की शिक्षा दी। बिना पश्चाताप के विश्वास, सच्चा विश्वास नहीं होता है; यह सिर्फ ''विश्वास करने के लिये विवश करना'' या ''कल्पना

करना'' है। बचाने वाले विश्वास में भरोसा रखने का व्यवहार और व्यवहार का परिवर्तन दोनों शामिल होते हैं।

जब आप साधारण तौर पर भरोसा करने में यीशु को धन्यवाद देते हैं कि उसने क्रूस पर आपके लिये प्राण देकर क्या किया है, तब परमेश्वर और पाप के प्रति आपका व्यवहार एक नाटकीय परिवर्तन से गुज़रता है। ठीक इसके बाद ही पवित्र आत्मा आपकी आत्मिक आंखों की शल्य चिकित्सा करता है और आपका मन बातों और चीजों को विभिन्न दृष्टिकोण से देखना आरंभ करता है। वास्तव में, पश्चाताप शब्द का अर्थ ''मन का परिवर्तन'' है। अतः, एक सच्चे नये जन्म के अनुभव में परमेश्वर और पाप से संबंधित मन का एक मौलिक परिवर्तन शामिल होता है।

परमेश्वर से संबंधित - पश्चाताप (मन का एक परिवर्तन) परमेश्वर से संबंधित प्रत्येक झूठी धारणा को ठुकराता है। मैं ने अफ्रीका में लोगों को देखा है, जो अपने पुराने ढ़ंग और मूर्ति पूजा की प्रथाओं के साथ बड़ी प्रबलता से संघर्ष करते हैं; उन्होंने यीशु को ग्रहण करने के बाद, पूजा करने के प्रतीकों को खुले आम जला दिया। मेरे ऐसे मित्र भी हैं, जिन्हें बड़े सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ा, यहां तक कि जब उन्होंने उन धार्मिक या सामाजिक पद्धतियों को छोड़ा, जो बाइबल के परमेश्वर के लिये सच्ची नहीं थीं, तब उन्हें अनेक धमकियों और खतरों का सामना करना पड़ा। उद्धार देने वाले या बचाने वाले विश्वास को इस दृढ़ निश्चय में आधारित होना चाहिये कि यीशु, यहोवा है एकमात्र उद्धारकर्त्ता परमेश्वर।

पाप से संबंधितः जब आप विश्वास के द्वारा, अपने उद्धार के अनुभव में प्रवेश करते हैं, तब आप दुःख और शर्म के साथ अपनी निजी पापमय दशा को पहचानेंगे। पाप के प्रति आपके मन का परिवर्तन (पश्चाताप) का यह मतलब होगा कि आप अपने पाप को अब बिल्कुल नज़र अंदाज़ करने की कोशिश नहीं करते हैं; आप अपने पाप के लिये अब कोई बहाना बनाने का प्रयास नहीं करते हैं; और अब यह आशा नहीं करते हैं कि आपकी धार्मिकता आपको बचायेगी। ''मनुष्य के धर्म के पवित्र परमेश्वर के सामने काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं (यशायाह 64:6)। परंतु जब आप यीशु के पास जाते हैं, तब आपको आपके जीवन की उन बातों को त्यागने की इच्छा होगी, जो उसके लिये अप्रसन्नकारी रही हैं।

कल्पना करें कि एक सैन्य दल का अगुवा अपने बैरेक की ओर जाने के लिये निकल पड़ता है। एक दिन उसे दो पत्र मिलते हैं। एक उसके किसी मित्र से; और दूसरा उसके कमांडिंग अफसर से। पहले पत्र में, उसके मित्र के विवाह का निमंत्रण है, लेकिन दूसरे पत्र में उसके बॉस की ओर से आर्डर आया है कि वह ड्यूटी पर हाजिर हो। यहाँ अवश्य ही आमंत्रण और आज्ञा के बीच में अंतर है। निमंत्रण को नम्रतापूर्वक अस्वीकार किया जा सकता है; परंतु आज्ञा का प्रत्युत्तर या तो आज्ञाकारिता से या फिर विद्रोह से दिया जा सकता है।

क्योंकि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपको जानता है कि पाप आपके जीवन नाश करेगा; इसलिये वह आपको पश्चाताप करने के लिये आमंत्रित नहीं करता हैं, वह आपको पश्चाताप करने

की आज्ञा देता है। जैसा कि पौलुस ने ग्रीस के विश्वविद्यालय में दार्शनिकों और के सामने सुसमाचार को प्रस्तुत करते हुए कहाः ''परंतु अब (परमेश्वर) सब जगह के लोगों को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है'' (प्रेरितों के काम 17:30)। और ''सब'' में आप भी शामिल हैं।

आश्चर्यकर्म यह है कि जब आप परमेश्वर से संबंधित अपनी ग़लत धारणाओं को अस्वीकार करते हैं तथा इसी तरह अपने व्यक्तिगत पाप को त्याग देते हैं और ऐसा करते हुए विश्वास के द्वारा यीशु की ओर देखते हुए जब उसके बारे में अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर होने का दावा करते हैं, तब पवित्र आत्मा आपके मन में इच्छा और काम दोनों बातों को करने का प्रभाव डालेगा, जो परमेश्वर की दृष्टि में उचित है (फिलिप्पियों 2:13)। इस प्रकार, परमेश्वर उन लोगों से प्रतिज्ञा करता है, जो सचमुच पश्चाताप करते हैं; कि वे काम करने की इच्छा रखते हैं और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करने की शक्ति रखते हैं। केवल तभी आपका जीवन रूपांतरित होगा और परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त योग्यता एवं क्षमता तक पहुंचेगा।

मैं एक मित्र होने के नाते, आप से विनती करता हूँ कि आप बिना विलंब किये प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करें। कोई शांत जगह ढूंढ़ लें, जहां आप प्रार्थना में परमेश्वर के सामने झुक सकें। वास्तव में, अगर आप तोने की तरह रटकर (कंठस्थ याद करके) शब्दों अथति वचन को दोहराते रहेंगे, तो वे आपके लिये कुछ नहीं करेंगे। यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि आप यीशु को विश्वास में प्रत्युत्तर देते

हैं, जिसने कहा हैः मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता है (यूहन्ना 14:6)।

अब अगर आप चाहें, तो अपनी आंखें बंद कर सकते हैं और आपके हृदय से आने वाले स्वतः प्रत्युत्तर के रूप में प्रार्थना करें अथवा आप सुझाव के अनुसार आगे दी गयी प्रार्थना को सहायक पायेंगे।

मेरा प्रार्थनापूर्ण प्रत्युत्तर

हे परमेश्वर, मैं न तो आपको जाना है और न ही मैं ने आपसे प्रेम किया है। परंतु मैं आपको धन्यवाद देता / देती हूँ कि आपने मुझे जाना है और प्रेम भी किया है।

मैं एक पापी हूँ और मैं अपना उद्धार अर्जित करने के लिये स्वतः कुछ नहीं कर सकता / सकती हूँ। मैं विश्वास के साथ, हे प्रभु यीशु, अब आपके पास आता हूँ / आती हूँ और अपने पापों के खातिर क्षमा मांगता / मांगती हूँ! मैं यह अंगीकार करता / करती हूँ कि मैं एक पापी हूँ और मैं अपने पाप का प्रायश्चित करता / करती हूँ। हे प्रभु यीशु, मेरे खातिर अपना प्राण देने के लिये तथा आपके बहुमूल्य लोहू की जीवन दायक शक्ति देने एवं मुझे शुद्धिकारक शक्ति प्रदान करने के लिये आपको धन्यवाद। मैं विश्वास के द्वारा अब अपना जीवन उस बहुमूल्य लोहू की सुरक्षा के अंतर्गत रखता हूँ।

प्रभु यीशु, कृपया मेरे हृदय में प्रवेश करें और मेरे जीवन को अपने नियंत्रण में लें।

हे प्रभु यीशु, मैं आपको धन्यवाद देता / देती हूँ कि आपके

पवित्र आत्मा के द्वारा मैं ने पुनः जन्म लिया है। यह जानना मेरे लिये अद्‌भुत बात है कि आपकी पुनरूत्थित शक्ति के द्वारा मैं परमेश्वर की एक संतान हूँ और आपके साथ हमेशा रहूँगा। रहूँगी।

और जो कोई उस पर विश्वास करेगा (उस पर भरोसा रखेगा और उस पर निर्भर रहेगा), वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा (1 पतरस 2:6)।

आप, आप किसी व्यक्ति को बतायें कि अभी आपने क्या किया है। याद रखें कि मसीह आपमें रहता है और उसके खातिर आपको बोलने तथा जीने के लिये सक्षम बनाने हेतु आवश्यक सर्वशक्ति हैः।

.... यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पायेगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है (रोमियों 10:9-10)।

<u>स्लोवाकिया से एक पत्र</u>

प्रिय मित्रों, मैं ने अभी - अभी एक सर्वाधिक मनमोहक पुस्तक को पढ़ना समाप्त किया है, ऐसी मनमोहक पुस्तक मैं ने अपने जीवन में पहली बार पढ़ी है, जो हैः परमेश्वर की खोज। मुझे मालूम है कि मैं कभी फिर से इसी तरह समान नहीं रहूँगा। प्रभु यीशु ने मुझे ग्रहण किया है और मैं ने अपना जीवन उसे दे दिया है। मैं चाहता हूँ कि यह आनंद मेरे मित्रों में से प्रत्येक को प्राप्त हो और इसलिये मैं

नम्रतापूर्णक यह विनती करता हूँ कि क्या मैं दूसरों को सिर्फ़ पढ़ने के खातिर देने के लिये, दो और अतिरिक्त प्रतियों का आर्डर दे सकता हूँ....

''सुसमाचार और मसीह में उद्धार के वरदान को मेरे जीवन में लाने के लिये आपको धन्यवाद.... हम यह कभी नहीं जानते थे कि ऐसी सर्वोस्कृष्ट पुस्तक भी है।''

<u>ध्यान देने के लिये रूकें</u>

1. आप एक उदारतापूर्ण इनाम या पुरस्कार को ग्रहण करने के लिये अपना आभार किस तरह सर्वोत्तम ढंग से प्रकट कर सकते हैं?

   क्या यह करने के द्वारा: ''कृपया, उसे मुझे दें?

   क्या यह कहने के द्वारा: ''आपको धन्यवाद''?

2. क्या यह आपकी भावना है या आपका विश्वास है जो आपको यह आश्वासन देता है कि आप परमेश्वर के संतान हैं?

   क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है (इफ़िसियों 2:8)।

3. प्रभु यीशु में आपका विश्वास क्या इन बातों को शामिल करता है।

   पश्चाताप के एक तत्व को?

आभार के एक तत्व को?

उस पर पूर्णतः निर्भर होने की एक प्रवृत्ति?

4. क्या आप अब परमेश्वर को इस बात के लिये धन्यवाद देंगे कि उसने आपको बचाया है तथा प्रभु यीशु की प्रशंसा न सिर्फ़ इसलिये करेंगे कि उसने आपके लिये क्या किया है, परंतु इस बात के लिये भी कि वह कौन है?

ऐसी कोई चीज़ नहीं है - कोई परिस्थिति नहीं, कोई तकलीफ़ नहीं, कोई परीक्षा नहीं जो मुझे कभी इससे पहले स्पर्श करे, जब तक वह मुझमें से होते हुए परमेश्वर से आगे निकल जाये और मुझ में से होते हुए मसीह से आगे निकल जाये, यदि वह इतनी दूर आ गया है, तो वह किसी महान् उद्देश्य के साथ आया है; जिसे मैं उस क्षण नहीं समझ सकता हूँ। परंतु जब मैं आतंकित होने से इंकार करता हूँ, जब मैं अपनी आंखें उसकी ओर उठाता हूँ और इस तरह ग्रहण करता हूँ कि मानो परमेश्वर के सिंहासन से मेरे निजी हृदय के लिये आशीष का कोई महान् उद्देश्य आ रहा हो, तो मुझे कोई भी दुःख परेशान नहीं करेगा, कोई विपत्ति मुझे निहत्था नहीं करेगी, कोई परिस्थिति मुझे तंग नहीं करेगी - क्योंकि मैं अपने परमेश्वर, जो मेरा आनंद है, में विश्राम करूंगा। यही विश्वास की विजय है!

- एलेन रेडपाथ

अध्याय - 10

आगे क्या?

उद्धार बिल्कुल पूरी तरह मुफ़्त है! कोई व्यक्ति उसे अर्जित करने के लिये कुछ नहीं कर सकता है। प्रभु यीशु उसके लिये सबकुछ करता है।

जब आप सुझाव दिये गये इस प्रार्थना को सच्चे मन से करते हैं (या इस तरह की समान प्रार्थना) करते हैं, तब मसीह में आपके विश्वास ने आपको परमेश्वर का एक सच्चा संतान बना लिया है।

और जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के संतान होने का अधिकार दिया अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं (यूहन्ना 1:12)।

अधिकांश तौर पर यह अनुमान है कि अब आप यह प्रश्न पूछेंगे कि ''आगे क्या?''

यीशु ने अपने मिशन के दौरान, अपने चेलों को छोड़ने के ठीक पहले, यह कहाः तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में (यूहन्ना 15:4)। यीशु का मिशन थाः मृत्यु पर विजय प्राप्त करना और फिर स्वर्ग वापस लौटना। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि प्रभु यीशु ने मसीही जीवन जीन के सारतत्व की व्याख्या की। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, कोई विश्वासी, परमेश्वर के पुत्र में बना रहता है - विश्वासी को स्वर्ग में सुरक्षित पहुंचने तक बनाये और बचाये रखना है। तथापि, मानवीय दृष्टिकोण से, चूंकि पुनरूत्थित प्रभु भी सच्चे विश्वासियों में, बना रहता है; इसलिये उनके परिवार, मित्र और

साथी सहकर्मी जीवन के एक गुण से परिचित होंगे, जो सिर्फ़ अंतः निवास करने वाले मसीह के संदर्भ में ही समझाया जा सकता है।

आप यह कल्पना करें कि आपने धातु के एक छेदक अर्थात् भोंकने वाली वस्तु को आग में डाल दिया है। जब आप उसे देखते हैं, तब आप यह कह सकते हैं कि ''वह छेदक आग में है।'' परंतु जब आप अधिक नजदीक से देखेंगे, तब आप यह अवलोकन करेंगे कि छेदक स्वयं ही तप्ते लाल रंग का हो गया है और तब यह आपके लिये भी यह कहना बिल्कुल सही होगा कि ''आग छेदक में है!'' अथवा इसी तरह, एक प्याले की कल्पना करें कि वह एक बाल्टी पानी में डूब गया है। प्याला, पानी में है; परंतु पानी भी प्याले में है!

जब आपे पुनः जन्म पाया, तब पवित्र आत्मा ने मसीह की देह में आपको सचमुच बपतिस्मा दिया (डुबा दिया)।

अब बाइबल आपको यह आश्वासन देती हैः आपका जीवन परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है (कुलुस्सियों 3:3)। हां, चूंकि आपने फिर से जन्म लिया है; इसलिये अब आप मसीह में हैं। अति अद्भुत! इसके साथ ही साथ यह भी कि जब आपने पुनः जन्म लिया था, तब पुनरूत्थित मसीह का अंतः निवास करने वाला जीवन, पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा एक व्यक्तिगत और महिमायुक्त सच्चाई बन गया था। अब आप आनंदित हो सकते हैं कि मसीह आप में है अर्थात् मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है.... (कुलुस्सियों 1:27)। हां, चूंकि आपने जन्म ले लिया है, इसलिये अब पुनरूत्थित मसीह आपने रहता है। आश्चर्य कारी।

अब आइये, आगे हम इस बात की ओर ध्यान दें कि वास्तव में, बाइबल इन दो जुड़वा सच के छुड़ाने वाले अर्थात् छुटकारा या आजादी देने वाले प्रभाव के बारे में क्या कहती है - मैं मसीह में हूँ और मसीह मुझ में है।

मैं मसीह में हूँ

हम सबने एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया... (1 कुरिंथियों 12:13)।

क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गये; ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें (रोमियों 6:3,4)।

क्योंकि तुम तो मर गये और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है (कुलुस्सियों 3:3)।

कई वर्ष पहले, मेरी जान पहचान एक छोटे लड़के से थीं, जिसे ल्यूकीमिया (ब्लड कैंसर) था। उस समय उसकी उम्र केवल सात वर्ष थी और उसे हर तीन महीने में रीढ़ की सुई () लेने के लिये डॉक्टर के पास जाना पड़ता था। एक बार डॉक्टर ने डेरिल से पूछा कि ''जब सुई उसकी रीढ़ को भेदती है, तब वह दूसरे लड़कों और लड़कियों की तरह क्यों नहीं रोता है। क्या तुम्हें दर्द नहीं होता है?'' डेरिल ने उत्तर दिया: ''ओह! हां दर्द होता है; परंतु डॉक्टर आप यह क्यों नहीं समझते हैं कि इससे पहिले सुई मुझे स्पर्श करे, उसे यीशु के

हाथ से गुजरना पड़ता है''। यह जानना अद्‌भुत बात है कि चूंकि अब आप मसीह में हैं; इसलिये वह उन सब बातों को संभालने में सक्षम है, जो आपके जीवन की परीक्षा करती है और उसे स्पर्श करती है! वह विश्वास है!

जिस प्रकार आपने विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु को ग्रहण किया है, उसी प्रकार यह विश्वास का समान सिद्धांत है जो जीवन की प्रत्येक मांग को पूरी करने के लिये प्रभु यीशु मसीह की पर्याप्ति को अनुकूल एवं उपयुक्त बनाने के लिये सक्षम बनाता है। अगर दूसरे शब्दों में कहा जाये, तो आपके विश्वास के आरंभिक कार्य ने विश्वास की निरंतर प्रवृत्ति को अपनाने के लिये आपके खातिर द्वार खोल दिया है। ''सो जैसे तुमने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो'' (कुलुस्सियों 2:6)।

यद्यपि आपने फिर से जन्म ले लिया है, तौभी परमेश्वर आपसे यह अपेक्षा नहीं करता है कि आप यीशु के जीवन का सिर्फ अनुकरण करें। लाखों मसीहियों ने जब ऐसा करने का प्रयास किया और वह भी बिना किसी सफ़लता के, तब वे पूर्णतः निराश हो गये। परंतु परमेश्वर हमारे मसीही जीवन के लिये अपने अद्‌भुत प्रबंध के बारे में हमें बताता है। हम मसीह में मर चुके हैं। मसीह में मृत होने के कारण, हम व्यवस्था की सभी मांगों और उसके सभी दोष एवं दंड के लिये भी मर चुके हैं। इसलिये, जैसा कि अतीत में था, वैसा ही अभी और भविष्य में है। हम इस आशा के लिये मृत हैं कि हमारा आत्म - प्रयास, व्यवस्था की मांगों को पूर्ण करेगा। हां, हम आत्मिक जीवन

जीने के लिये स्वयं में आत्मविश्वास के प्रत्येक चिंह या निशान के लिये मृत हैं। परंतु, परमेश्वर की प्रशंसा हो कि हम पुनरूत्थित प्रभु यीशु मसीह की सभी सुरक्षात्मक और क्षमता प्रदान करने वाली पर्याप्ति के लिये महिमायुक्त ढंग से जीवित हैं!

उस समय समस्या खड़ी होती है, जब हम स्वयं ही जीवन की परीक्षाओं और विभिन्न प्रकार के दबाव का समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। नया विश्वासी यह अनुभव करेगा कि उसके नये जन्म के बाद वह मसीही जीवन को स्वतः प्रयास से जीवन में उसी तरह सक्षम नहीं है, जिस तरह वह पहले था। प्रभु यीशु ने इस झुकाव या रूझान के बारे में हमें चेतावनी देते हुए, स्पष्ट कहाः.... तुम मुझ से अलग होकर कुछ भी नहीं कर सकते हों (यूहन्ना 15:5)।

वास्तव में, गलतिया के क्षेत्र के विश्वासियों को पौलुस प्रेरित ने सीधे शब्दों में आत्म प्रयास की मूर्खता के बारे में संबोधित किया। विश्वास और सिर्फ़ विश्वास के द्वारा जीवन जीने के परमेश्वर के सिद्धांत से उनके मुख फेरे को सुधारने के लिये, पौलुस ने एक आलंकारिक प्रश्न पूछा, जो एक आत्म गवाही उत्तर की ओर ले जाने के लिये तैयार किया गया थाः

मैं तुमसे केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुमने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से, या विश्वास के समाचार से पाया? क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरंभ करके अब शरीर की रीति पर अंत करोगे? (गलतियों 3:2,3)।

वास्तव में, उन्होंने मसीह में अपने नये जीवन आरंभ किये,

जैसा कि आपने भी विश्वास के एक कार्य के माध्यम से किया। और यह सिर्फ़ उस आत्मानिर्भर समान विश्वास के द्वारा है, जिसकी वे आशा कर सकते हैंः वे एक मनुष्य के अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनंत जीवन में राज्य करेंगे (रोमियों 5:17)।

गलतिया में, आत्म निर्भर विश्वास की चेतना, धर्मव्यवस्था संबंधी आत्म प्रयास के बांझपन के द्वारा दुःखदपूर्ण ढ़ंग से विस्थापित कर दी गयी थी। परंतु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि अगर आप अपने उस नये प्राप्त प्रभु पर निर्भरता में जीवन जीन जारी रखते हैं, तो विभिन्न मामलों की दुःखद स्थिति, जो गलतिया में पायी जाती है, उसे आपके अनुभव की कभी कोई आवश्यक्ता नहीं है।

मसीह मुझ में रहता है

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैः और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिये अपने आपको दे दिया (गलतियों 2:20)।

और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परंतु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुममें बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलायेगा (रोमियों 8:10-11)।

जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्य जातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है (कुलुस्सियों 1:27)।

और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नींव डालकर... (इफ़िसियों 3:17)।

आप मसीह के अंतः निवास करने वाले जीवन पर निर्भर आपके जीवन को यह कहते हुए प्रकट कर सकते हैंः ''प्रभु यीशु आपको धन्यवाद, आप वह सबकुछ है, जो मैं नहीं हूँ। मैं आपको वह होने की अनुमति देता। देती हूँ, कि जो आप मुझ में और मेरे द्वारा - दोनों ही हैं।'' आपके जीवन की अचंभित करने वाली वास्तविकता यह है कि परमेश्वर ने आपकी सफ़लता के लिये उत्तर दायित्व को किसी दूसरे व्यक्ति पर स्थानांतरित कर दिया है - वह व्यक्ति हैः प्रभु यीशु मसीह! यीशु ही वह एकमात्र व्यक्ति है, जो आपके जीवन की उन परीक्षाओं और आपके जीवन के उन अवसरों से भेंट या मुलाकात करने के लिये अयुक्त है, जिनका आप अवश्य ही सामना करेंगे। यह आपके लिये संभव है कि आप मसीह के बिना एक ''आध्यात्मवादी'' हों, आपके लिये यह भी संभव है कि आप मसीह के बिना एक ''उपदेशक'' हों, आपके लिये यह भी संभव है कि आप मसीह के बिना एक ''मिशनरी'' हों; परंतु आपके लिये यह असंभव है कि आपके हृदय में मसीह नहीं रहता हो और आप मसीही हों।

यीशु ही ऐसा एकमात्र व्यक्ति है, जो एक सच्चा मसीही जीवन व्यतीत कर सकता है। अब, उसने आपके हृदय में आश्चर्यजनक रूप से अपना निवास स्थान बना लिया है। अब वह आपके द्वारा एवं आपके खातिर वह सब कर सकता है, जिसे आप अपने लिये कभी नहीं कर सके। वह जो शुद्ध या पवित्र है, इस नखर संसार में, वही आपकी शुद्धता या पवित्रता है; वह जो विजयी अर्थात् विजेता है, परीक्षा के इस संसार में वही आपकी विजय है; वह जो प्रेम है, आत्म - खोज करने वाले और खुद को ढंढ़ने वाले इस संसार में, वही आपका प्रेम है। सचमुच, जो पुनरूत्थान और जीवन है, वह अब आपका निजी व्यक्तिगत मसीही जीवन है।

जब आप दीनतापूर्वक अपने जीवन को प्रभु यीशु के लिये उपलब्ध बनाते हैं, जो खोये हुओं को ढंढ़ने और बचाने आया था (लूका 19:10)। आप भी अब अपने द्वारा खोयी और भटकी हुई आत्माओं को ढूढ़ने और बचाने के लिये उस पर भरोसा कर सकते हैं! जब विश्वासियों को यह मालूम होता है कि वे दूसरे लोगों के लिये परमेश्वर के जीवन का एक स्त्रोत है, तब जीवन सचमुच उत्साहपूर्ण बन जाता है।

याद रखें कि यद्यपि यीशु स्वर्ग वापस चला गया है; तौभी यह निश्चित् है कि उसने खुद को आपसे नहीं हटाया है। जब वह अपने शिष्यों को पृथ्वी पर छोड़कर जा रहा था, तब उसने उनसे कहाः

और थोड़ी देर रह गयी है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परंतु तुम मुझे देखोगे; इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे। उस

दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ और तुम मुझ में और मैं तुम में। (यूहन्ना 14:19-20)।

अब आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि ''किस प्रकार वे सभी स्त्रोत, जिन्हें परमेश्वर ने मसीह में मुझे दिये हैं मेरे जीवन में सच्चे और व्यवहारिक बन सकते हैं?'' वह एक अच्छा प्रश्न है। यह उस गहरे चौड़े दरे को पहचानता है, जो मानसिक विश्वास और प्रयोगात्मक विश्वास के बीच मौजूद है। यह प्रश्न, विश्वास के लिये आपकी उस गहरी इच्छा पर भी लागू होता है, जो कार्य करता है। इसका सरल व सामान्य उत्तर यह है कि मसीह का जयवंत जीवन, आभार के प्रत्युत्तर में विश्वासी के माध्यम से मुक्त या उत्पन्न होता है। सच्चा विश्वास हमेशा यह कहता हैः ''आपको धन्यवाद!''

उदाहरणार्थ, मसीह में अपने छुटकारे के विश्वास को इस सर्वोत्तम ढ़ंग से व्यक्त कर सकते हैंः उसके प्रति आभार हों कि आपके पाप क्षमा कर दिये गये हैं। अब, आप उसे इस तथ्य के लिये भी धन्यवाद दे सकते हैं कि वह आपके लिये ठीक वही बनेगा, जिसको आपको जरूरत के समय में जरूरत है। बिना विश्वास के उसको (परमेश्वर को) प्रसन्न करना असंभव है (इब्रानियों 11:6)। जब आप उसे प्रसन्न करने की इच्छा रखते हैं, तब आप अपने विश्वास के जीवन को, सब बातों में प्रभु यीशु की पर्याप्ति के लिये उसके प्रति निरंतर भरपूर धन्यवाद के साथ व्यतीत करें।

जब पतरस ने उन मसीहियों को लिखा, जो प्रभु यीशु मसीह के प्रति अपनी भक्ति (स्वामीभक्ति) के कारण सताव या प्रताड़ना

सह रहे थे, तब उसने उन्हें यह शिक्षा दीः मसीह को प्रभु जानकर अपने - अपने मन में पवित्र समझो (अलग करना; महिमा देना; पूर्ण शासन या अधिकार देना)... (1 पतरस 3:15)। जब आप अपने विश्वास के लिये सताव का सामना करते हैं, तब इनके समाधान के लिये परमेश्वर का खुला रहस्य उपलब्ध रहता है। इस बात को निश्चित् रूप से जानें कि यीशु, आपके जीवन का प्रभु है।

आप यह याद कर सकते हैं कि पुराने - नियम में, परमेश्वर के विभिन्न नाम में से एक नाम अडोनाई है। () का अर्थ ''मेरा स्वामी या मालिक'' होने के संदर्भ में प्रभु होता है। पतरस ने विश्वासियों को यह चेतावनी देते हुए, मेरे स्वामी के रूप में प्रभु परमेश्वर की इस धारणा का उपयोग कियाः अपने - अपने हृदय में मसीह को प्रभु समझ कर पवित्र जानो।

जब प्रभु यीशु आपके जीवन का स्वामी है, तब आप उसकी निरंतर संगति का आनंद उठायेंगे। केवल तब आप प्रतिदिन की मांगों और आपके जीवन के सुअवसरों के साथ उस पर भरोसा रखने के लिये सचमुच स्वतंत्र हो जायेंगे। जैसे कि गीतकार जॉर्ज माथेसन ने लिखा हैः

हे प्रभु, मुझे एक कैदी बना,

और तब मैं आजाद हो जाऊंगा;

मुझे मेरी तलवार सौंपने या अर्पण करने की शक्ति दे, और मैं विजेता हो जाऊंगा

आजादी की लोकप्रिय धारणा के विपरीत, जो मैं करना

चाहता हूँ, उसे करने का अधिकार रखने के बावजूद, सच्ची आजादी नहीं पायी जाती है। इसके बजाय, वह मेरे उस अधिकार में पायी जाती है, जिससे मैं वह करता हूँ, जो मुझे करना चाहिये! पौलुस प्रेरित के शब्दों को याद करें, जिसने कहा हैः मैं मसीह में सबकुछ कर सकता हूँ, जो मुझे सामर्थ देता है (फिलिप्पियों 4:13)।

सन् 1859 में, उत्तरी आयरलैंड में जागृति के दौरान हजारों लोग मसीह के पास आये। विश्वास के एक समर्पण पत्र'' पर हस्ताक्षर करने के द्वारा, उन नये मसीहियों ने मसीह के प्रति अपना निजी व्यक्ति गत और गंभीर समर्पण अभिव्यक्त किया। उस समय, कई लोगों ने पुनरूत्थित प्रभु यीशु का एक ऐसा जीवन परिवर्तन करनेवाला अनुभव किया कि देश का नैतिक वातावरण अक्षरशः रूपांतरित हो गया।

ऐसे दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने में कोई - प्रशंसा करने योग्य बात नहीं है, शायद इस समय आपके लिये भी यह सहायक होगा कि आप अगले विभिन्न पृष्ठ में दिये इस दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने के माध्यम से परमेश्वर के लिये अपने निजी प्रत्युत्तर की पुष्टि करें।

अब शांतिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान् रखवाला है, सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया। तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो और जो कुछ उसको भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे, जिसकी बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।। (इब्रानियों 13:20-21)।

हंगरी से एक पत्र

''रिचर्ड ए. बेनेट के द्वारा लिखित ''परमेश्वर की खोज'' पुस्तक के साथ पवित्र बाइबल, मेरे लिये भेजने के लिये आपको बहुत धन्यवाद।

''मैं ने पुस्तक को पढ़ लिया और बाइबल के साथ प्रत्येक संकेत पद को मिलाकर देखा।

''परमेश्वर की खोज'' ने इस बात को स्पष्ट करने में मेरी मदद की कि मुझे क्या विश्वास करना चाहिये और मुझे क्यों विश्वास करना चाहिये। अब मैं एक विश्वासी हूँ और इस पुस्तक की मदद से, मैं ने जीवन भर के लिये विश्वास का समर्पण निश्चित रूप से बनाया है या किया है।''

- Report translated and Submitted by Trans world Radio.

अब आपको आपका व्यक्तिगत विश्वास का समर्पण बनाने में आपकी मदद करने के लिये अगले पृष्ठों में पवित्रशास्त्र के वचन लिखे गये हैं।

मेरे विश्वास का समर्पण

मैं पिता परमेश्रर को अपना परमेश्वर होने के लिये ग्रहण करता हूँ।

तुम मूर्तियों से परमेश्वर की ओर फिरे, ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो। (1 थिस्सलुनिकियों 1:9)

मैं यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता होने के लिये

ग्रहण करता हूँ।

यीशु को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया कि वह इस्राएलियों को मन फ़िराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। (प्रेरितों के काम 5:31)।

मैं परमेश्वर के प्रेम से अपने आपको भरपूर करने के लिये पवित्र आत्मा को ग्रहण करता हूँ

आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियों 5:5)।

मैं परमेश्वर के वचन को अपने जीवन का सिद्धांत होने के लिये ग्रहण करता हूँ।

हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाये। (2 तीमुथियुस 3:16,17)।

मैं परमेश्वर के लोगों को अपने मेरे लोग होने के लिये ग्रहण करता हूँ।

तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा। (रूत 1:16)।

मैं स्वयं को प्रभु के प्रति संपूर्ण रूप से समर्पित करता हूँ।

क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिये जीता है और न कोई अपने लिये मरता है। क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिये

जीवित हैं; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं; सो हम जीयें या मरे, हम प्रभु ही के हैं। (रोमियों 14:7,8)।

और मैं यह जानबूझकर करता हूँ।

आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा ... परंतु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा। (यहोशू 24:15)।

और सच्चे मन से

क्योंकि हम अपने विवेक की इस गवाही पर घमंड करते हैं कि जगत में और विशेषकर तुम्हारे बीच हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो शारीरिक ज्ञान से नहीं, परंतु परमेश्वर के अनुग्रह के साथ था। (2 कुरिंथियों 1:12)।

और मुफ़्त में

तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं; तेरे जवान.... (भजन संहिता 110:3)।

और हमेशा के लिये

कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? (रोमियों 8:35)।

हस्ताक्षर ----------

तिथि ----------

अब आप लेखक के परिणाम स्वरूप इस पुस्तकः ''विश्वास के लिये भोजन को पढ़ने के लिये प्रोत्साहित रहें।

विश्वास के लिये
भोजन
लेखक
रिचर्ड ए. बेनेट

जिस क्रकार पाक - शास्त्र में दी गयी किसी भोजन बनाने की विधि के प्रति कोई व्यक्ति मोहित हो सकता है तथा इसके बावजूद भी, भूख से मर जाता है; उसी प्रकार कोई व्यक्ति सफ़ल जीवन जीने के लिये बाइबल में बतायी गयी विधियों एवं रीतियों के प्रति मोहित हो सकता है, लेकिन इसके बावजूद भी, आत्मिक रूप से अपर्याप्त भोजन अथवा कुपोषण के साथ रह सकता है।

विश्वास के लिये भोजन, बाइबल से संबंधित पुस्तिका है, जिसे आपके हाथ - से आपके दिमाग - से आपके हृदय तक परमेश्वर के वचन की पाचन क्रिया में आपकी मदद के लिये लिखा गया है।

FOOT NOTES

* उदाहणार्थ, सन् 1868 में, क्लेन नामक जर्मनी के यात्री ने प्राचीन मोआब की यात्रा की। आज मोआब को जॉर्डन कहा जाता है। वहां उसने पत्थर के एक स्मारक का पता लगाया, जिस पर मो आब के राजा मेशा के द्वारा चौंतीस पंक्तियां लिखी गयी थीं। इस्त्राएल के विरूद्ध, उसके द्वारा किये गये विद्रोह की स्मृति में इस लेख को लिखा गया था। राजाओं की दूसरी पुस्तक के पहले अध्याय में ओमरी और अहाब का जो उल्लेख किया गया है, वह स्मारक पर फिर से पाया जाता है अर्थात् लिखा गया है। इन दोनों मामलों में, हमें यह बताया गया है कि ये दोनों इस्त्राएली राजा मोआब पर अत्याचार करते थे। ऐसी अनेक आधुनिक खोज, बाइबल संबंधी वृतांत के ऐतिहासिक तौर पर यथार्थ होने की पुष्टि करते हैं।

''C max बंदीगृह से एक पत्र''

नीचे लिखे असंपादित उद्धारण, दक्षिणी अफ्रीका के सर्वोच्च सुरक्षा बंदीगृह में रखे गये एक कैदी से प्राप्त किये गये थे।

यह पुस्तक ''परमेश्वर की खोज''.... मुझे परमेश्वर के वचन को समझने में मदद करती है। मेरा मतलब यह है कि यह पुस्तक हमें जीवन का सच्चा मार्ग प्राप्त करने में हमारी मदद करती है। मुझे यकीन है कि आप मुझे समझते हैं। मेरे मित्र ने मुझे यह पुस्तक दी है.... मुझे विश्वास है कि परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है और वह संपूर्ण विश्व का सृष्टिकर्त्ता है।

मुझे इस बात का यकीन है कि जबकि मैं अभी बंदीगृह में हूँ, तब परमेश्वर मेरी मदद करेगा...''।

Report Submitted by Trans World Radio.

* इस बात की ओर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि पुरूष और स्त्री की सृष्टि की समानता, साग - सब्जी अर्थात् पेड़ - पोधों के राज्य की सृष्टि के साथ नहीं की जा सकती है; और न ही जन्तु - जगत में विकासवाद - संबंधी उन्नति या प्रगति के उच्च रूप के साथ। पुरूष और स्त्री की सृष्टि ''परमेश्वर के स्वरूप'' में की गयी थी और इसलिये वे परमेश्वर की सभी अद्‌भुत रचनात्मक गतिविधियों के शीर्ष बिंदु पर एक अद्वितीय सृष्टि हैं। बाद में इस पुस्तक में, यह अनोखापन या अद्वितीयता आपको इस बात के प्रति आश्वस्त करेगी कि आप सचमुच में कौन हैं।

* वर्तमान में, Freemasonry विश्व में सबसे बड़ी अतर्राष्ट-ीय गुप्त समाज या समुदाय है, जो विश्व में चारों ओर लगभग एक कराड़े लोगों की सदस्यता पर गर्व करता है। यद्यपि ''भाईचारे के प्रेम, राहत और सत्य के बारे में इसके सिद्धांत, कई लोगों को आकर्षक प्रतीत होते हैं, तौभी Masonry उतनी हानिकारक नहीं है, जितनी दिखाई देती है। Mason अर्थात् गुप्त सदस्य बनने के लिये, प्रत्येक प्रत्याशी को यह अंगीकार करना चाहिये कि वह अंधकार में है, जो प्रकाश की ओर बढ़ रहा है। यीशु का एक अनुयायी, पहले ही यह विश्वास करता है कि उसने प्रकाश अर्थात् ज्योति को प्राप्त कर लिया है। यीशु ने कहाः मैं जगत की ज्योति हूँ; जो मेरे पीछे चलेगा, (आयेगा), वह

अंधकार में नहीं चलेगा; परंतु जीवन की ज्योति पायेगा (यूहन्ना 8:12)। Masonic गुप्त समुदाय में प्रवेश - समारोह बड़ा ही नाटकीय और प्रतीकों से भरपूर होता है। उस समय में, Masonic प्रत्याशी को परमेश्वर के बारे में बाइबल संबंधी धारणा से दूर होने का निर्देश दिया जाता है, तब उसे "Ganto" के नाम से परिचित कराया जाता है। प्रत्याशी को यह बताया जाता है कि Ganto ''परमेश्वर के लिये खोया हुआ नाम है'' और वही Ganto, ''विश्व का सबसे महान् रचनाकार है।'' सैद्धांतिक रूप से, परमेश्वर में विश्वास करनेवाला कोई भी विश्वासी, चाहे वह बौद्ध हो, हिंदू हो, मुरिलम हो, यहूदी या मसीही हो, वह एक बन सकता है। अतः Ganto (मानव निर्मित परमेश्वर की धारणा) प्रत्याशी के ध्यान को यीशु से हटादेता है, जिसके बारे में बाइबल यह घोषित करती है कि वह सच्ची ज्योति है (यूहन्ना 1:9)। बाद में, जब Mason एक Mason बन जाता है, तब उसे परमेश्वर के अन्य नाम सिखाये जाते हैं - परमेश्वर - ''जाहबुलान''। यह नाम परमेश्वर के लिये यहूदी और मध्यपूर्वी नामों का एक वास्तविक संयोजन है। यह (JAH YAHWEH के लिये) और Bul (बाल देवता का एक रूप) और ON (ये मिस्री सूर्य - देवता का संकेत करते हैं) से व्युत्पन्न हुआ है। यह मिश्रित धर्म वाद का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें विभिन्न धार्मिक मतों को संयुक्त करने का एक निरर्थक प्रयास किया गया है। यीशु ने स्वयं यह बताया हैः इस कारण अगर वह उजियाला जो तुझ में है यदि अंधकार हो, तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा! (मत्ती 6:23)।

इस पुस्तक में M.R. Dehaan, M.D. ने रक्त की रसायनिकता के बारे में कई उद्धारण को महत्व देते हुए यह निष्कर्ष निकाला हैः ''माता अपने गर्भ में पल रहे भ्रूण (विकसित होता हुआ जन्म से पहले शिशु) को सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करती है; ताकि उसके गर्भ के गुप्त में वह छोटा शरीर बन और बढ़ सके; लेकिन उसमें मौजूद सारा रक्त, स्वयं भ्रूण में बनता है। गर्भधारण से लेकर जन्म तक रक्त की एक भी बूंद, माता से शिशु तक नहीं पहुंचती है। तथापि DeHann के दृष्टिकोण पर टिप्पणी करते हुए, E. Coleman ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि मैं DeHann की धारणा को मान्यता देता हूँ (DeHann के दृष्टिकोण के अनुसार, मानव शरीर का रक्त, पुरूष या नर प्रजनन कोश (शुकाणु) के प्रवेश करने से बनता है और भ्रूण में ही बनता है, इसका माता के शरीर के साथ कोई संपर्क नहीं होता है)। मेरे विचार के अनुसार, यह ध्यान देना न्याय संगत होगा कि अन्य मेडिकल डॉक्टर लोग इसकी वैधता के बारे में गंभीर प्रश्न करते हैं। तथापि, जीव - संबंधी प्रवृत्ति की स्थिति के अलावा, मुझे ऐसा कोई कारण दिखाई नहीं देता है कि इसे एक बड़ा मामला या विषय क्यों होना चाहिये। सच्चाई यह है कि यीशु, परमेश्वर के द्वारा गर्भ में आया था, जिसके कारण पाप के अनुवांशिक स्थानांतरण की कोई संभावना नहीं है। इसलिये अगर यीशु के रक्त की बात करें, तो बाइबल संबंधी अर्थ एवं महत्व के अनुसार वह पाप से शुद्ध रक्त था।

यह दुःखद बात है कि ऐसे लाखों लोग हैं, जो अब तक इसमें दृढ़ विश्वास रखते हैं कि किसी Eucharist (प्रभु भोज के लिये लेटिन

शब्द) में दिये गये रोटी और दाखरस सचमुच मसीह के शारीरिक मांस और लोहू में बदल जाते हैं। हमारा प्रभु यह सीखाना चाहता था कि उसके अंतः निवास करने राले जीवन के प्रतीक को नाटकीय ढ़ंग से अक्षरशः और शारीरिक तथ्य के रूप में समझा जाये।

आठ भाषाओं में दो लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित

विश्वास के लिए भोजन

एक बाइबिल आधारित निर्देशिका

रिचर्ड बेनेट ने कलीसियाओं में, सम्मेलनों में और बाइबिल कॉलेजों में व्यक्तिगत रूप से सेवकाई की है । आप अमरीका, कनाडा, यूरोप तथा अफ्रीका इत्यादि देशों में पैंतालीस वर्षों से सेवकाई करते रहें हैं । इनमें से बीस वर्षों तक आपकी बाइबिल संबंधी सिक्षा का प्रसारन पांच महाद्वीपों के लिये ''ट्रांस वर्ल्ड रेडियो'' तथा ''फार ईस्ट ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन'' जैसे मिशनरी रेडियो स्टेशन्स से नियमित रूप से किया गया। इन सुनियोजित सेवकाईयों के माध्यम में यह गंभीर एवं यथार्थ इच्छा है कि लोगों को पुनरुत्थित प्रभु यीशु मसीह को अधिक से अधिक घनिष्ट एवं व्यक्तिगत रूप से जानने में मदद प्रप्त हो सके।

अत्यधिक आत्मिक लाभ प्राप्ति के खातिर प्रथान किये गये आत्मिक भोजन सराहनीय, उपयुक्त और संश्लेषात्मक होने चाहिये। आपने हमें दिखाया है कि यह प्रक्रिया किस प्रकार संपन्न होती है।

डॉ. स्टीफ़न एफ. आल्फोर्ड

Authentic

ISBN 81-7362-584-0
9788173625848 00350

Food for Faith (Hindi)

विश्वास के लिए भोजन बेनेट

Authentic

विश्वास के लिए भोजन

रिचर्ड बेनेट